खण्ड–'क'

अध्याय – 1 निबन्ध लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ निबन्ध लेखन ग्रन्थ की एक सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है। अपने विचारों को सुसंगठित, स्पष्ट, सरल, सूत्रबद्ध रूप में व्यक्त करना निबन्ध की प्रमुख विशेषता है। व्यक्तिगत विचारों व तथ्यों को स्पष्ट करना ही अच्छे निबन्ध की मूल विशेषता है।
- ❑ अच्छे निबन्ध की विशेषताएँ
  - किसी भी निबन्ध का कोई उद्देश्य तथा निश्चित विषय हो।
  - निबन्ध की विषय-वस्तु का पहले से मनन कर ले तथा उसे लिखित रूप दे।
  - अपने विचारों को रोचक, आकर्षक एवं संक्षिप्त रूप में लिखें।
  - वाक्य सरल, सीधे तथा स्वाभाविक हों।
  - निबन्ध का विषय आकर्षक हो जिससे आदमी पढ़ते समय या सुनते समय ऊबे नहीं।

❑❑

अध्याय – 2 कहानी लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ कहानी लिखते समय कहानी के तत्वों का ध्यान रखना आवश्यक है। मुहावरे या लोकोक्तियों पर आधारित कहानी लिखने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—
  - मुहावरे या लोकोक्ति का अर्थ अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।
  - पूरी कहानी मुहावरे या लोकोक्ति पर आधारित होनी चाहिए।
  - कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए।
  - कहानी के अन्त में यह प्रमाणित करना चाहिए कि मुहावरा या लोकोक्ति यहाँ चरितार्थ हो गयी है।

❑❑

अध्याय – 3 चित्र लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ लेखन कला में चित्र लेखन एक महत्वपूर्ण कला है। चित्र को ध्यान से देखने पर जो भाव अंतर्मन में उठते हैं उन्हें ही लेखनीबद्ध करना होता है।
- ❑ चित्र लेखन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- चित्र को कम से कम तीन-चार बार भली-भाँति देखना चाहिए ताकि उसके हर पहलू को अच्छी तरह समझा जा सके।
- मन के भावों को क्रमबद्ध एवं सुसंगठित लिखना चाहिए।
- भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
- अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
- लेखन संक्षिप्त लेकिन सटीक व प्रभावी होना चाहिए।

❑❑

अध्याय - 4 पत्र लेखन

स्मरणीय बिन्दु

❑ आधुनिक काल में पत्रों का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रों के माध्यम से हम अपने मनोभावों, विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं। सगे-सम्बन्धियों से सम्पर्क बनाये रखते हैं। अनेक घरेलू बातों से लेकर देशकला की बातों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। वर्तमान युग में पत्रों का प्रयोग व्यापारिक सम्बन्धों में भी होने लगा है। अत: पत्र लिखते समय हमें निम्न बातों पर विशेष ध्यान देना अति आवश्यक है। अपने भावों, विचारों, सूचनाओं और सन्देशों को दूर रह रहे सम्बन्धियों तथा मित्रों तक पहुँचाने का अच्छा, सुगम और सस्ता साधन है।

❑ **पत्र-लेखन में निम्नलिखित बातों की सावधानी रखनी चाहिए—**
विषय, सन्दर्भ, व्यक्ति और स्थिति के अनुसार पत्र लिखने की भिन्न-भिन्न विधियाँ हैं—
पत्र लेखन एक प्रभावशाली कला है।

(1) पत्र, अपनी आयु, योग्यता, पद, सम्बन्ध और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर लिखना चाहिए।
(2) पत्र की भाषा, सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
(3) उद्देश्य और आशय की अभिव्यक्ति के साथ-साथ प्रारम्भ से अन्त तक विनम्रता, स्नेह और शिष्टाचार का निर्वाह करना चाहिए।
(4) अशिष्ट भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(5) पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
(6) पत्र में किसी प्रकार का आडम्बर नहीं होना चाहिए।
(7) पत्र में पता, तिथि, संबोधन, अभिवादन, समाप्ति आदि सुस्पष्ट ढंग से होने चाहिए।

❑ **पत्र के भाग**—पत्र के पाँच भाग होते हैं—

(1) पत्र में सबसे ऊपर बायें हाथ की ओर कोने पर भेजने वाले को अपना पता और दिनांक लिखना चाहिए।
(2) मूल विषय से पूर्व पत्र पाने वाले के साथ अपने सम्बन्ध के अनुसार बायीं ओर उचित सम्बोधन लिखना चाहिए। व्यापारियों और कार्यालयों से सम्बन्धित पत्रों में सम्बद्ध व्यक्ति का पद सहित पूरा पता अथवा कार्यालय का पता लिखना चाहिए, सम्बन्धित व्यक्ति को आदरपूर्वक सम्बोधित करना चाहिए।
(3) पत्र के आरम्भ करने के बाद मुख्य विषय पर आना चाहिए। सभी बातें क्रमपूर्वक लिखनी चाहिए।
(4) मुख्य विषय समाप्त होने के पश्चात् अन्त में पत्र के बायीं ओर सम्बोधन के अनुसार भवदीय, आपका बड़ा भाई आदि शब्द लिखकर, लिखने वाले का पूरा नाम लिखना चाहिए।
(5) लिफाफे या पोस्टकार्ड पर पाने वाले का पूरा पता, पिनकोड सहित लिखना चाहिए; पिनकोड होने से पत्र जल्दी पहुँचते हैं।

❑ **पत्रों के प्रकार**—मुख्य रूप से पत्र दो प्रकार के होते हैं; जैसे—अनौपचारिक और औपचारिक।
अनौपचारिक पत्रों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक आदि पत्र होते हैं तथा औपचारिक पत्रों में व्यावसायिक अथवा सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों से सम्बन्धित पत्र आते हैं। मुख्यत: हम पत्रों को चार प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) **व्यक्तिगत पत्र**—ऐसे पत्र माता-पिता, भाई-बहन अथवा किसी अन्य प्रियजन या मित्र को लिखे जाते हैं, व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं।
(2) **सामाजिक पत्र**—सामाजिक स्तर पर विवाह, मृत्यु, जन्म-दिवस, गृह-प्रवेश आदि के मांगलिक संस्कार अथवा उत्सवों पर लोगों को आमंत्रित करने के लिए जो पत्र लिखे अथवा छपवाए जाते हैं, वे सामाजिक पत्र कहलाते हैं।

(3) **व्यावसायिक पत्र**—किसी व्यवसायी द्वारा अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में दूसरे व्यापारियों, दुकानदारों, ग्राहकों, कारखानेदारों अथवा फर्मों को जो पत्र लिखे जाते हैं, वे व्यावसायिक अथवा व्यापारिक पत्र कहलाते हैं।

(4) **कार्यालयी पत्र**—जो पत्र सरकारी अथवा गैर सरकारी कार्यालयों द्वारा अन्य कार्यालयों, विभागों, व्यक्तियों को लिखे जाते हैं, वे कार्यालयी पत्र कहलाते हैं।

❑❑

अध्याय – 5 अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ अपठित गद्यांश वह लेख है, जो पहले न पढ़ा हो। किसी भी गद्यांश को बिना किसी की सहायता के पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित गद्यांश का लक्ष्य है।
- ❑ अपठित गद्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—
  - गद्यांश के भावार्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए।
  - गद्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें जिनमें किन्हीं प्रश्नों के उत्तर संभव हों।
  - रेखांकित भाग को पढ़ते हुए प्रश्नों के सर्वाधिक उचित विकल्प पर निशान लगायें।
  - यदि गद्यांश में से शब्दों के अर्थ पूछे गये हों तो प्रसंगानुसार ही उनके अर्थ लिखें।
  - शीर्षक देते समय गद्यांश के मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द समूह अथवा वाक्यांश चुनना चाहिए।
  - शीर्षक कम-से-कम शब्दों का होना चाहिए।
  - ध्यान से सभी विकल्पों को पढ़कर सर्वाधिक उचित विकल्प पर निशान लगाना चाहिए।

❑❑

अध्याय – 6 व्याकरण

विलोम शब्द

विपरीत अर्थ का संकेत देने वाले शब्द विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं। इनके अर्थ विरोधी होते हैं।

जैसे—अनुकूल और प्रतिकूल परस्पर विपरीत शब्द हैं।

पर्यायवाची

पर्यायवाची या पर्यायवाची का अर्थ है 'समान अर्थ रखने वाले शब्द। वे शब्द जो अलग-अलग होते हुए भी किसी एक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। प्रत्येक भाषा में ऐसे शब्द मिलते हैं।

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'आ' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग करने की अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	**शुद्ध**
अभार	आभार
अजीवन	आजीवन
समाजिक	सामाजिक
अत्याधिक	अत्यधिक
आलोकिक	अलौकिक
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
नराज	नाराज
समान	सामान
सप्ताहिक	साप्ताहिक
दमाद	दामाद
अघात	आघात

इ, ई की अशुद्धियाँ

नीती	नीति
श्रीमति	श्रीमती
निरोग	नीरोग
पती	पति
परीस्थति	परिस्थिति
प्रतीष्ठा	प्रतिष्ठा
शुद्ध	अशुद्ध
रात्री	रात्रि
महिना	महीना

प्रीती	प्रीति
रीती	रीति
शान्ती	शान्ति
परिक्षा	परीक्षा
अतीरिक्त	अतिरिक्त
क्योंकी	क्योंकि

ऊ की अशुद्धियाँ

हिन्दु	हिन्दू
उपर	ऊपर
साधू	साधु
सूरभि	सुरभि
समूद्री	समुद्री
मुल्य	मूल्य

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

बच्चीयाँ	बच्चियाँ
रोटीयाँ	रोटियाँ
चूड़ीयाँ	चूड़ियाँ
मक्खीयाँ	मक्खियाँ

स, श, ष की अशुद्धियाँ

सहद	शहद
भासण	भाषण
प्रकास	प्रकाश
संसय	संशय
नमश्कार	नमस्कार
आसा	आशा

व, ब की अशुद्धियाँ

बिवाह	विवाह
जबाब	जवाब
बचन	वचन
बनस्पति	वनस्पति
बिशेष	विशेष
बाणी	वाणी

ए, ऐ की अशुद्धियाँ

एक्य	ऐक्य
देनिक	दैनिक
एनक	ऐनक
देहिक	दैहिक

न और ण की अशुद्धियाँ

गनेश	गणेश
प्रनाम	प्रणाम
कल्यान	कल्याण
किरन	किरण
तृन	तृण
रामायन	रामायण
राणी	रानी

य और ज की अशुद्धियाँ

जजमान	यजमान
जज्ञ	यज्ञ

पंचम अक्षर की अशुद्धियाँ

कुन्डल	कुण्डल
चन्चल	चञ्चल
कन्ठ	कण्ठ
मन्डन	मण्डन
चन्डाल	चाण्डाल

चन्द्र बिन्दु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ

हंसना	हँसना
चांद	चाँद
अगुष्ठ	अंगुष्ठ
कँस	कंस

ट, ठ की अशुद्धियाँ

अभीष्ठ	अभीष्ट
मिष्टान्न	मिष्ठान्न
घनिष्ट	घनिष्ठ
श्रेष्ट	श्रेष्ठ
विशिष्ठ	विशिष्ट
श्लिष्ठ	श्लिष्ट

ड, ड़ की अशुद्धियाँ

सडक	सड़क
चढाई	चढ़ाई
ढ़क्कन	ढक्कन

सन्धि की अशुद्धियाँ

प्रातकाल	प्रात:काल
छत्रछाया	छत्रच्छाया
सन्मुख	सम्मुख
तदानुसार	तदनुसार
अधोपतन	अध:पतन
उजवल	उज्जवल
अध्यन	अध्ययन

'र' की अशुद्धियाँ

निररर्थक	निरर्थक
क्रश	कृश
अगृणी	अग्रणी
मूरख	मूर्ख
सौहार्द्र	सौहार्द
कार्यकर्म	कार्यक्रम
गृन्थ	ग्रन्थ

अल्पप्राण और महाप्राण की अशुद्धियाँ

गढ्ढा	गड्ढा
चिन्ह	चिह्न
मख्खन	मक्खन
ब्राम्हण	ब्राह्मण

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

भाषा में लघुता तथा संक्षिप्तता लाने के लिए किसी वाक्य अथवा वाक्यांश के स्थान पर एक उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना संक्षेपीकरण कहलाता है। ऐसे शब्द अपने में पूरे वाक्य के अर्थ को समाए रहते हैं। गद्यांश लेखन में इनका प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है।

जैसे—'जो थोड़ा खर्च करने वाला हो-' वाक्यांश के स्थान पर 'मितव्ययी' का प्रयोग किया जा सकता है।

वाक्यांश	**एक शब्द**
जिसका आदि न हो	अनादि
जिसका दमन न हो सके	अदम्य
जिसका अन्त न हो	अनंत
जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
ईश्वर पर विश्वास रखने वाला	आस्तिक
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसे छोड़ा न जा सके	अपरिहार्य
जिसे काटा न जा सके	अकाट्य
जिसका कभी नाश न हो	अविनाशी
जो बिल्कुल न जानता हो	अज्ञ
जिस पर अभियोग चल रहा हो	अभियुक्त
जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो	अतीन्द्रिय
जिसका निर्णय न हो सका हो	अनिर्णीत
जो होकर ही रहे	अवश्यंभावी
जो कड़वा बोलता हो	कटुभाषी
जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
जिसने इन्द्रियों पर विजय जीती हो	जितेन्द्रिय
जो किसी के पक्ष में न हो	तटस्थ
जो स्वयं पैदा हुआ है	स्वयंभू
जो बहुत बोलता हो	वाचाल
जो वन में विचरण करे	वनचर
जो पूर्णतया नष्ट हो गया हो	ध्वस्त
जो अपने कर्त्तव्य से फिर गया हो	कर्त्तव्यच्युत
जो स्थिर रहे	स्थावर
जो बात लागों से सुनी गई हो	जनश्रुति
जो वाणी द्वारा व्यक्त न की जा सके	अनिवर्चनीय
जिसने यश प्राप्त किया हो	यशस्वी
जिसने अच्छे कुल में जन्म लिया हो	कुलीन
जो कार्य प्रशंसा के योग्य हो	प्रशंसनीय
जो धन का दुरुपयोग करता हो	अपव्ययी
जो नष्ट न होने वाला हो	अनश्वर
जो कुछ न करता हो	अकर्मण्य
जो इस जगत से बाहर की वस्तु हो	अलौकिक
जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
जो माँस न खाता हो	निरामिषभोजी
जो प्राणों को दु:ख देने वाला हो	मर्मान्तक
जो विनीत न हो	दुर्विनीत
जो केवल दूध पर निर्वाह करे	दुग्धाहारी
जो हाथ से लिखा हुआ हो	पांडुलिपि
जिसका जन्म दो बार हुआ हो	द्विज
जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
जिसका पति जीवित हो	सधवा
जिसका हृदय पत्थर के समान कठोर हो	पाषाण हृदय
जिसमें कोई विकार न हो	निर्विकार
जिसे दण्ड का भय न हो	उद्दण्ड
जिसकी मछली जैसी आँखें हो	मीनाक्षी
जिसकी मरने की अवस्था हो	मुमुर्ष
जिसे देखकर डर लगे	भयावह
जिसके हाथ में वज्र हो	वज्रपाणि

जिसके मन में ममता न हो	निर्मम
जिसमें संसार के प्रति मोह न रहा हो	वीतरागी
गर्मी की छुट्टियाँ	ग्रीष्मावकाश
जिसमें मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा हो	मुमुक्षु
धर्म का काम करने वाला	धर्मात्मा
जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	अतिथि

लिंग

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा—शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु या प्राणी के पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, वह लिंग कहलाता है।

लिंग के भेद

हिन्दी में लिंग के दो भेद होते हैं—

I. पुल्लिंग— जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। जैसे—शेर, लड़का, मनुष्य, आचार्य आदि।

II. स्त्रीलिंग— जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे—शेरनी, लड़की, बकरी, मामी आदि।

लिंग परिवर्तन के नियम

1. 'आ' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अज	अजा	मूर्ख	मूर्खा
सुत	सुता	आचार्य	आचार्या
प्रिय	प्रिया	भवदीय	भवदीया

2. ई प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
देव	देवी	पुत्र	पुत्री
दास	दासी	बाह्मण	ब्राह्मणी
नर	नारी	नाना	नानी
भतीजा	भतीजी	रस्सा	रस्सी

3. आ को इया करके :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बूढ़ा	बुढ़िया	बन्दर	बन्दरिया
लोटा	लुटिया	चूहा	चुहिया
चिड़ा	चिड़िया	बेटा	बिटिया

4. 'इन' जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कुम्हार	कुम्हारिन	तेली	तेलिन
ग्वाला	ग्वालिन	दर्जी	दर्जिन
जुलाहा	जुलाहिन	नाई	नाइन

5. 'इनी' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी	अभिमानी	अभिमानिनी
ब्रह्मचारी	ब्रह्चारिणी	मनोहारी	मनोहारिणी
प्रार्थी	प्रार्थिनी	अधिकारी	अधिकारिणी

6. आनी/आणी प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
रुद्र	रुद्राणी	नौकर	नौकरानी
मेहतर	मेहतरानी	भव	भवानी
पठान	पठानी	मास्टर	मास्टरानी

7. आइन प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दुवे	दुवाइन	चौबे	चौबाइन
बाबू	बबुआइन	पण्डा	पण्डाइन

8. 'इका' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अध्यापक	अध्यापिका	दर्शक	दर्शिका
चालक	चालिका	नाविक	नाविका
निवेदक	निवेदिका	बालक	बालिका

9. वान को वती और मान को मती करके :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
श्रीमान	श्रीमती	ज्ञानवान	ज्ञानवती
महान्	महती	धैर्यवान	धैर्यवती
रूपवान	रूपवती	बुद्धिमान	बुद्धिमती

10. ता को त्री करने से :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दाता	दात्री	नेता	नेत्री
कर्त्ता	कर्त्री	विधाता	विधात्री

11. निम्न स्त्रीलिंग के साथ नर व नित्य पुल्लिंग के साथ मादा जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कोयल	मादाकोयल	खरगोश	मादा खरगोश

छिपकली	मादा छिपकली	भालू	मादा भालू
मक्खी	मादा मक्खी	मगरमच्छ	मादा मगरमच्छ

12. विभिन्न रूप वाले शब्दों का लिंग परिवर्तन :

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
सम्राट	सम्राज्ञी	वर	वधू
कवि	कवयित्री	विद्‌वान	विदुषी
वीर	वीरांगना	विधवा	विधुर

संज्ञा

परिभाषा— किसी भी वस्तु, व्यक्ति, गुण, भाव, स्थिति का परिचय कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, पुस्तक, प्रेम, आगरा, कुत्ता आदि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद माने जाते हैं—

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान या प्राणी के नाम का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है। जैसे—सुदामा, महाभारत, उत्तर प्रदेश, ऐरावत आदि।
2. **जातिवाचक संज्ञा**—जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति का बोध कराते है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—मनुष्य, नर, फल, हाथी, देश आदि।
3. **भाववाचक संज्ञा**—किसी गुण, दशा, स्वभाव, कार्य, भाव या स्वभाव को बोध कराने वाले शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—बुढ़ापा, मधुरता, विद्वता, मनाही, निजता आदि।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित पाँच प्रकार से बन सकती हैं—

1. जातिवाचक संज्ञा से

उदाहरणतया	कुमार	से	कौमार्य
	मित्र	से	मित्रता
	माता	से	मातृत्व

2. विशेषण से

उदाहरणतया	अच्छा	से	अच्छाई
	महान	से	महानता
	लघु	से	लघुता
	सुन्दर	से	सौन्दर्य

3. क्रिया से

उदाहरणतया	उड़ना	से	उड़ान
	बनना	से	बनावट
	हँसना	से	हँसी

4. सर्वनाम से

उदाहरणतया	अहं	से	अहंकार
	आप	से	आपा
	निज	से	निजत्व

5. अव्यय से

उदाहरणयता	धिक्	से	धिक्कार
	ऊपर	से	ऊपरी
	समीप	से	सामीप्य

मुहावरे

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, लेकिन हिन्दी में इस तरह घुल-मिल गया है कि उससे अलग नहीं किया जा सकता।

ऐसा वाक्यांश, वाक्य जो अपने शाब्दिक अर्थ के स्थान पर विलक्षण अर्थ में प्रचलित हो, मुहावरा कहलाता है।

मुहावरे का अर्थ है अभ्यास। मुहावरे के द्वारा भाषा में भावों को बोधगम्य, आकर्षक व सरल बनाने की क्षमता में वृद्धि होती है लेकिन मुहावरों का मूल रूप नहीं बदला जा सकता। वाक्य से अलग होकर इनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

वाच्य

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा—वाच्य का अर्थ—बोलने का विषय। अत: क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं। उदाहरणतया—

अमित पढ़ रहा है।

इस वाक्य में खेलने का मुख्य विषय अमित अर्थात् कर्ता है। इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

वाच्य के भेद हैं।

1. **कर्तृवाच्य**—इसमें कथन का केन्द्र कर्ता होता है। कर्म गौण होता है। कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक भी हो सकती है और सकर्मक भी जैसे—

   सोहन सोता है। (अकर्मक)

   'पुस्तक' पढ़ता है। (सकर्मक)

   इन दोनों वाक्यों में कर्ता ही वाक्य का केन्द्र-बिंदु है। अत: यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

2. **अकर्तृवाच्य**—जिन वाक्यों में कर्ता गौण या लुप्त होता है, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं। अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं—

   (क) कर्मवाच्य— जिस वाक्यों में केन्द्र-बिंदु कर्ता न होकर 'कर्म हो' उसे कर्मवाच्य कहते हैं। कर्म की प्रधानता के कारण या तो कर्ता का लोप हो जाता है; या कर्ता के बाद 'से' अथवा 'द्वारा' का प्रयोग होता है; जैसे—गीता द्वारा गीत गया गया। कर्ता (गीता 'से' का प्रयोग)

   पतंग उड़ रही है। (कर्ता का लोप)

   रोगी को दवाई दे दी गई है। (कर्ता का लोप)

   इन तीनों वाक्यों में क्रमश: 'गीत', 'पतंग' और 'दवाई', कर्म है।

यही अपने-अपने वाक्यों के केन्द्र-बिंदु भी हैं। अत: ये कर्मवाच्य के वाक्य हैं।

कर्मवाच्य में कर्ता की असमर्थता सूचित करने वाले वाक्य भी होते हैं। इनमें कर्ता के साथ 'से' अथवा 'द्वारा' लगता है और क्रिया के साथ निषेधात्मक 'नहीं' का प्रयोग होता है; जैसे—

मुझसे उठा नहीं जाएगा।

अब तो खाना नहीं खाया जाएगा।

सकर्मक क्रिया से व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य भी सकर्मक कहलाते हैं; जैसे—

खिड़की खुल गयी। (खेलना—खुलना)

शीशा टूट गया। (तोड़ना—टूटना)

(ख) भाववाच्य— जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर अकर्मक क्रिया का भाव प्रमुख हो, तो उसे भाववाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है। उदाहरणतया—लड़के से तैरा जाता है। रमेश से नहाया गया।

वाच्य सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

1. कर्तृवाच्य में सकर्मक-अकर्मक दोनों ही प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है।
2. कर्मवाच्य में क्रिया सदैव सकर्मक होती है।
3. भाववाच्य की क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है।
4. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्ता के बाद 'के द्वारा' या 'से' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। बोलचाल की भाषा में 'से' का प्रयोग प्राय: निषेधात्मक वाक्यों में किया जाता है; जैसे—

   (क) मुझसे चला नहीं जाता।

   (ख) उससे काम नहीं होता।
5. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के निषेधात्मक वाक्यों में जहाँ 'कर्ता + से' का प्रयोग होता है वहाँ एक अन्य 'असमर्थतासूचक' अर्थ की भी अभिव्यक्ति होती है; जैसे—

   (क) मुझसे खाना नहीं खाया जाता।

   (ख) माता जी से पैदल नहीं चला जाता।

   (ग) उनसे अंग्रेजी नहीं बोली जाती।

   (घ) बच्चे से दूध नहीं पिया जाता।
6. कर्तृवाच्य के सकारात्मक वाक्यों में इसी 'सामर्थ्य' को सूचित करने के लिए क्रिया के साथ '**सक**' का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   (क) मोहन बाजार जा सकता है।

   (ख) गीता गाना गा सकती है।

   इसी तरह से कर्तृवाच्य के **असमर्थतासूचक** वाक्यों में '**सक**' का प्रयोग होता है—

   (क) मैं आपके घर नौकरी नहीं कर सकता।

   (ख) वह अब दुकान नहीं चला सकता।

   (ग) वे पत्र नहीं लिख सकते।

   (घ) बच्चे आज फिल्म नहीं देख सकते।

   कर्तृवाच्य के निषेधात्मक वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्य दोनों में रूपांतरित किया जा सकता है।
7. कर्मवाच्य के वाक्यों में प्राय: क्रिया में + 'जा' रूप लगाकर 'किया जाता है'; 'सोया जाता है'; 'खाया जाता है'; जैसे वाक्य बनाते हैं। लेकिन कुछ व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग भी कर्मवाच्य में होता है; जैसे—

(i) मजदूर पेड़ नहीं काट रहे।

   (क) मजदूरों से पेड़ नहीं काटा जाता।

   (ख) मजदूरों से पेड़ नहीं कट रहा।

(ii) हलवाई मिठाई नहीं बना रहा।

   (क) हलवाई से मिठाई नहीं बनाई जा रही।

   (ख) हलवाई से मिठाई नहीं बन रही।

8. हिन्दी में अकर्तृवाच्य (कर्मवाच्य तथा भाववाच्य) के वाक्यों में प्राय: कर्ता का लोप कर दिया जाता है; जैसे—

   (क) पेड़ नहीं काटा जा रहा।

   (ख) पेड़ नहीं कट रहा।

   (ग) मिठाई नहीं बन रही।

   (घ) कपड़े नहीं धुल रहे।
9. हिन्दी में क्रिया का एक ऐसा रूप भी है; जो कर्मवाच्य की तरह प्रयुक्त होता है, वह है सकर्मक क्रिया से बना उसका अकर्मक रूप जिसे व्युत्पन्न अकर्मक कहते हैं; जैसे—

   (क) गिलास टूट गया।

   ('तोड़ना' से 'टूटना' रूप)

वाच्य परिवर्तन

(क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए—

1. कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कीजिए।
2. इस परिवर्तित क्रिया कैसा या 'जाना' क्रिया के रूप को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल तथा कर्म के लिंग वचन, पुरुष के अनुसार मुख्य क्रिया के साथ जोड़ दीजिए। साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

3. कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर से द्वारा/के द्वारा लगा दीजिए।
4. यदि कर्म के साथ भी किसी विभक्ति का प्रयोग किया गया हो, तो उसे हटा दीजिए।

उदाहरण:

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. अध्यापक जी हिन्दी पढ़ा रहे थे।	अध्यापक जी द्वारा हिन्दी पढ़ाई जा रही है।
2. अतिथि भोजन कर चुके हैं।	अतिथियों के द्वारा भोजन किया जा चुका है।
3. बच्चे गीत गा रहे होंगे।	बच्चों के द्वारा गीत गाया जा रहा होगा।
4. क्या बढ़ई ने मेज बनाई?	क्या बढ़ई के द्वारा मेज बनाई गई?
5. सचिन ने सौ रन बनाए।	सचिन के द्वारा सौ रन बनाए गए।

(ख) कर्तृवाच्य से भाववाच्य

कर्ता के साथ 'से द्वारा' या 'के द्वारा' लगा दीजिए।

कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का है।

उदाहरण:

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. हम रोज नहाते हैं।	हमसे रोज नहाया जाता है।
2. अब चलें।	अब चला जाए।
3. बच्चा नहीं रोता।	बच्चे से रोया नहीं जाता।
4. कौआ उड़ गया।	कौए से उड़ा गया।
5. मैं बैठ नहीं सकता।	मुझसे बैठा नहीं जाता।

(ग) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाने के लिए–

कर्ता के साथ लगे 'से द्वारा' को हटा दीजिए।

क्रिया को कर्तृवाच्य के अनुसार बदले दें।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1. सुनीता के द्वारा चित्र बनाए जाएँगे।	सुनीता चित्र बनाएगी।
2. पुनीत द्वारा पतंग उड़ाई जाती है।	पुनीत पतंग उड़ाता है।
3. मोहन के द्वारा पाठ याद किया जा चुका है।	मोहन पाठ याद कर चुका है।
4. सैनिकों द्वारा लड़ाई जीत ली गई है।	सैनिकों ने लड़ाई जीत ली है।
5. मंत्री जी के द्वारा नई योजना की नींव रखी गई।	मंत्री जी ने नई योजना की नींव रखी।

(घ) भाववाच्य से कर्तृवाच्य

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. बच्चों से शांत नहीं रहा जाता।	बच्चे शांत नहीं रह सकते।
2. उठो, जरा टहला जाए।	उठो जरा टहल लें।
3. बीमार व्यक्ति से नहाया नहीं गया।	बीमार व्यक्ति नहीं नहाया।
4. रोगी से नहीं उठा जाता।	रोगी उठ नहीं सकता।
5. गर्मियों में लोगों से खूब नहाया जाता है।	गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं।

वाच्यों की पहचान

1. **कर्मवाच्य**–(i) कर्ता बिना विभक्ति के होता है। (अथवा)
   (ii) कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति होती है।
2. **कर्मवाच्य**–(i) कर्ता के साथ 'से' या 'के' द्वारा विभक्ति होती है।
   (ii) मुख्य क्रिया सकर्मक होती है उसके साथ 'जाना' क्रिया का लिंग, वचन-कालानुसार रूप जुड़ा होता है।
   (iii) 'जाना' के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।
3. **भाववाच्य**–(i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है।
   (ii) क्रिया अकर्मक होती है।
   (iii) क्रिया सदैव एक वचन पुल्लिंग में होती है।

विशेषण

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा–संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण के चार भेद होते हैं–

1. गुणवाचक विशेषण–जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, रंग, समय, स्थान, आकार, दशा, अवस्था, गंध, स्पर्श, दिशा, स्वाद आदि का बोध होता है, उन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं।

जैसे–सफेद, झूठा, गोल, खुरदरा, बुरा, नया आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण–जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु अथवा पदार्थ की मात्रा अथवा नाप-तोल का बोध हो, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं।

जैसे–पाँच किलो, दो मीटर, एक तोला, चार लीटर आदि।

3. संख्यावाचक विशेषण—जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध होता है, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।

जैसे—पाँच, तिगुना, शतक, पहला, इकहरा, दोनों, प्रत्येक आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण—जिन सर्वनामों का प्रयोग किसी संज्ञा के साथ विशेषण की तरह होता है, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं।

विशेषणों की रचना

कुछ शब्द तो मूल रूप में ही विशेषण होते हैं जैसे—बुरा, अच्छा, लम्बा, छोटा आदि; किन्तु कुछ विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम क्रिया और अव्यय शब्दों से की जाती है।

संज्ञा शब्दों से व्युत्पन्न विशेषण

उदाहरणतया

दान	से	दानी
ईश्वर	से	ईश्वरीय
कुसुम	से	कुसुमित

सर्वनामों से व्युत्पन्न विशेषण

उदाहरणतया

वह	से	वैसा
जो	से	जैसा
हम	से	हमसा

क्रिया से विशेषण बनाना

उदाहरणतया

मरना	से	मरियल
खाना	से	खाऊ
सड़ना	से	सड़ियल

अव्यय से विशेषण बनाना

उदाहरणतया

बाहर	से	बाहरी
पीछे	से	पिछला
सतह	से	सतही

इनके अतिरिक्त कहीं-कहीं उपसर्ग और प्रत्यय से भी विशेषणों का निर्माण होता है।

वचन

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा—जिस संज्ञा शब्द से किसी वस्तु या प्राणी के एक अथवा अनेक होने का बोध होता है उसे कहते हैं।

वचन के भेद

हिन्दी में वचन के दो भेद होते हैं—

1. एकवचन—शब्द के जिस रूप से उसके एक (संख्या में) होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे— लड़का, पतंग, पुस्तक, गाड़ी आदि।

2. बहुवचन—शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे—लड़के, पतंगें, पुस्तकें गाड़ियाँ आदि।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

1. अकारान्त पुल्लिंग शब्दों में अंतिम 'आ' को 'ए' में बदलकर—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
कीड़ा	कीड़े	पंखा	पंखे
चमचा	चमचे	संतरा	संतरे
पर्दा	पर्दे	बच्चा	बच्चे

2. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में 'एँ' जोड़ करके—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
चींज	चीजें	भैंस	भैसें
आँख	आँखें	रात	रातें
दवात	दवातें	चप्पल	चप्पलें

3. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तिम 'आ' के बाद 'एँ' जोड़कर—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
लता	लताएँ	महिला	महिलाएँ
कथा	कथाएँ	आत्मा	आत्माएँ
सेना	सेनाएँ	बाला	बालाएँ

4. 'या' से अन्त होने वाले स्त्रीलिंग शब्दों में 'अनुस्वार' लगाकर—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
चुहिया	चुहियाँ	कुतिया	कुतियाँ
डिबिया	डिबियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
खटिया	खटियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ

5. इकारान्त या ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में 'ई' को ह्रस्व कर 'याँ' जोड़कर—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
नीति	नीतियाँ	दासी	दासियाँ
रीति	रीतियाँ	मछली	मछलियाँ
साड़ी	सड़ियाँ	बोरी	बोरियाँ

6. उकारान्त और ऊत्कारन्त स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में 'ऊ' को ह्रस्व कर 'एँ' जोड़कर—

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
जूँ	जुएँ	वधू	वधुएँ
लू	लुएँ	बहू	बहुएँ

काल

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा—क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद

काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

1. भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से भूतकाल (बीते समय) में होने का बोध हो, वह भूतकाल कहलाता है।

भूतकाल के छः भेद होते हैं—

I. सामान्य भूत—जिस काल से भूतकाल में क्रिया के सामान्य में होने का बोध हो, उसे सामान्य भूत कहते हैं।
जैसे— विदुषी ने कविता लिखी।

II. आसन्न भूत—क्रिया के जिस रूप से उसके निकट समय में होने का बोध हो, उसे आसन्न भूत कहते हैं।
जैसे—अंजलि के मामा आए हैं।

III. पूर्ण भूत—क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में बहुत पहले समाप्त हो जाने का बोध हो, उसे पूर्णभूत कहते हैं।
जैसे—पाण्डवों व कौरवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ था।

IV. अपूर्ण भूत—क्रिया के जिस रूप से कार्य के भूतकाल में प्रारम्भ होने का पता चले लेकिन वह अभी भी समाप्त न हुआ हो, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।
जैसे—बालक खेल रहा था।

V. संदिग्ध भूत—भूतकाल की जिस क्रिया के करने या होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं।
जैसे—अध्यापिका ने गाना गया होगा।

VI. हेतुहेतुमद् भूत—क्रिया के जिस रूप से क्रिया के भूतकाल में किसी कार्यवश न होने का बोध हो, उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं।
जैसे—यदि वर्षा होती तो फसल भी अच्छी होती।

2. वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान काल में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं—

I. सामान्य वर्तमान—क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान काल में करने या होनं का पता चले, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं।
जैसे—वह बाजार जाता है।

II. अपूर्ण वर्तमान—क्रिया के जिस रूप के कार्य के वर्तमान काल में प्रारम्भ होकर समाप्त न होने का पता चले उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं।
जैसे—सीता पुस्तक पढ़ रही है।

III. संदिग्ध वर्तमान—क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में करने या होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं।
जैसे—बच्चे गाना गा रहे होंगे।

3. भविष्यत् काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में करने या होने का बोध हो उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

भविष्यत् काल के तीन भेद होते हैं—

I. सामान्य भविष्यत्—क्रिया के द्वारा उसके भविष्य में सम्पन्न होने की सूचना मिले, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं।
जैसे—हम कल जयपुर जायेंगे।

II. सम्भाव्य भविष्यत्—क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की सम्भावना हो, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं।
जैसे—शायद कल बारिश होगी।

III. हेतुहेतुमद् भविष्यत्—जब क्रिया का भविष्य में होना किसी अन्य क्रिया पर निर्भर होगा उसे हेतुहेतुमद् भविष्यत् कहते हैं।
जैसे—यदि कल तुम मेरे घर आओगी, तो हम मिलकर खेलेंगे।

वाक्य विचार

स्मरणीय बिन्दु

वाक्य—शब्दों का सार्थक समूह जो व्याकरणिक नियमों के अनुरूप हो, वाक्य कहलाता है; जैसे—जयशंकर प्रसाद जी ने 'कामायनी' नामक ग्रन्थ की रचना की।

वाक्य-भेद—वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं—

(1) अर्थ के आधार पर (2) रचना के आधार पर।

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं—

(i) विधानवाचक **(ii)** निषेधवाचक
(iii) प्रश्नवाचक **(iv)** आज्ञावाचक
(v) इच्छावाचक **(vi)** संकेतवाचक
(vii) संदेहवाचक **(viii)** विस्मयवाचक

(2) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(i) सरल या साधारण वाक्य **(ii)** संयुक्त वाक्य
(iii) मिश्र वाक्य।

(i) सरल या साधारण वाक्य—जिस वाक्य में एक उद्देय तथा एक विधेय होता है, वह साधारण वाक्य कहलाता है; जैसे—

(क) सुधीर फुटबॉल खेलता है। **(ख)** वर्षा हो रही है।

इन वाक्यों में मुख्य क्रिया एक ही है, अतः ये सरल वाक्य हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य—जिस वाक्य में दो या दो से अधिक उपवाक्य योजक शब्दों के द्वारा जुड़े होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहा जाता है; जैसे—

(क) राम आया और श्याम गया।

(ख) चुपचाप बैठो अथवा यहाँ से चले जाओ।

(ग) वह भूखा था परन्तु उसने खाना नहीं खाया।

इन वाक्यों में दो-दो वाक्य स्वतन्त्र रूप से अपना-अपना अर्थ प्रकट कर रहे हैं। कोई भी वाक्य एक-दूसरे पर आश्रित नहीं है।

(iii) मिश्र वाक्य—जिस वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य हों तथा वे किसी योजक से जुड़े हों और उनमें एक उपवाक्य मुख्य तथा अन्य उस पर आश्रित हों तो, वह मिश्रित वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

(क) विनोद ने कहा कि वह दिल्ली जा रहा है।

(ख) जो लड़का कमरे में बैठा है, वह मेरा मित्र है।

इन वाक्यों में विनोद ने कहा' तथा 'मेरा मित्र है'—ये दोनों मुख्य उपवाक्य हैं, क्योंकि ये किसी योजक से नहीं जुड़े, इनके आगे आने वाले वाक्य 'वह दिल्ली जा रहा है' तथा 'लड़का कमरे में बैठा है' क्रमशः 'कि' तथा 'जो' योजक से जुड़े हैं, अत: ये दोनों आश्रित उपवाक्य हैं।

वाक्य रूपान्तरण

सरल वाक्य को संयुक्त एवं मिश्र बनाना, संयुक्त को सरल एवं मिश्र बनाना तथा मिश्र का सरल वाक्य बनना एक प्रकार का रचनान्तरण या रूपान्तरण है।

वाक्य रूपान्तरण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य के मूल अर्थ में अन्तर न आए। कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं—

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में

1. श्रम करने से सफलता मिलती है।

उत्तर—जो परिश्रम करता है उसे सफलता मिलती है।

2. मैंने यह छाता मैसूर से खरीदा था।

उत्तर—यह वही छाता है जिसे मैंने मैसूर से खरीदा था।

3. शेर देखते ही सब डर गए।

उत्तर—जैसे ही सबने शेर देखा वैसे ही डर गए।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में

1. थोड़ा सा ताँबा मिला होने के कारण गिन्नी का सोना ज्यादा चमकता है।

उत्तर—थोड़ा सा ताँबा मिला होता है इसलिए गिन्नी का सोना ज्यादा चमकता है।

2. वर्षा होने पर फसलें लहलहाने लगीं।

उत्तर—वर्षा हुई और फसलें लहलहाने लगीं।

3. श्रम न करने के कारण वह परीक्षा में फेल होगा।

उत्तर—श्रम नहीं किया इसलिए वह परीक्षा में फेल हो गया।

❑❑

खण्ड-'ब' साहित्य सगर-संक्षिप्त कहानियाँ (गद्य भाग)

अध्याय - 1 बात अठन्नी की (सुदर्शन)

लेखक परिचय

सुदर्शन जी का जन्म सियालकोट में सन् 1895 ई. में हुआ था। इनका वास्तविक नाम बदरीनाथ था। लेखन जगत में संपादक के रूप में इन्होंने कार्य शुरू किया। इन्होंने उर्दू भाषा के दैनिक पत्र आर्य गजट का संपादन किया। बाद में हिन्दी में लिखने लगे। 'हार की जीत' इनकी पहली कहानी थी जो सन् 1920 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'पुष्पलता', 'सुप्रभात', 'सुदर्शन सुधा', 'पनघट' आदि इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। इन्होंने कुछ उपन्यास भी लिखे जिनमें 'परिवर्तन', 'भगवती', 'राजकुमार सागर' प्रमुख हैं। इन्हें गद्य तथा पद्य दोनों में महारत हासिल थी। इन्होंने कई फिल्मों की पटकथा व गीत भी लिखे।

सुदर्शन जी की भाषा सहज, सरल, स्वाभाविक, प्रभावी तथा मुहावरेदार है। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी था। ये अपने लेखन के माध्यम से समाज व राष्ट्र को सुदृढ़ बनाना चाहते थे। 16 दिसम्बर 1967 ई. को मुम्बई में इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

सुदर्शन जी द्वारा लिखित 'बात अठन्नी की' एक अत्यन्त मार्मिक कहानी है जिसमें न्यायिक व्यवस्था पर करारा प्रहार किया गया है।

रसीला इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहाँ नौकर था। उसका परिवार गाँव में रहता था। परिवार में बूढ़े पिता, पत्नी और तीन बच्चे थे। उन सबकी जिम्मेदारी रसीला पर थी। रसीला को महज दस रुपये महावार वेतन मिलता था। जिससे परिवार का गुजारा नहीं चल पाता था। बार-बार वेतन बढ़ाने की प्रार्थना करने पर भी बाबू जगतसिंह वेतन बढ़ाने को राजी न हुए।

बाबू जगतसिंह के पड़ोसी जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार मियाँ रमजान से रसीला की गहरी मित्रता हो गयी थी दोनों घंटों साथ बिताते। एक-दूसरे के सुख-दुख के सच्चे साथी थे। एक बार रसीला के बच्चे बीमार हो गए। इलाज के लिए रुपया नहीं था। इसलिए

रसीला बहुत दुखी रहने लगा। मालिक ने भी पेशगी देने से इन्कार कर दिया। रमजान के बहुत पूछने पर रसीला से सारी बात बता दी। तब रमजान ने रसीला की मदद की।

रसीला के बच्चे स्वस्थ हो गए। उसने रमजान के पैसे भी चुका दिए केवल आठ आने बाकी रह गए।

एक बार जगतसिंह किसी से रिश्वत ले रहा था। रसीला ने सुन लिया। रसीला ने अपने मित्र रमजान को बताया तो वह बोला कि हमारे शेख साहब तो रिश्वत लेने में उनके भी गुरु हैं। तभी इंजीनियर साहब ने रसीला को पाँच रुपये देकर मिठाई लाने को कहा। रसीला ने साढ़े चार रुपये की मिठाई खरीदी व रमजान को अठन्नी लौटाकर कर्ज चुका दिया। मिठाई देखकर बाबू जगतसिंह समझ गए कि रसीला उन्हें धोखा दे रहा है। जब उन्होंने हलवाई के पास जाने की धमकी दी तो रसीला ने गुनाह कबूल कर लिया और माफी माँगने लगा। लेकिन इंजीनियर साहब ने रसीला को खूब पीटकर पुलिस के हवाले कर दिया।

अगले दिन कचहरी में मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के सामने उसने अपना अपराध स्वीकार करते हुए माफी माँगी तथा दुबारा ऐसी गलती न करने का वचन दिया, लेकिन शेख साहब ने उसे छह महीने की सजा सुना दी। शेख साहब का फैसला सुन रमजान की आँखों में खून उतर आया क्योंकि असली अपराधी तो नरम गद्दों पर मीठी नींद ले रहे थे, जबकि रसीला के मामले में तो बात केवल अठन्नी की थी।

शब्दार्थ

इंसाफ—न्याय; **साजिश**—षड्यन्त्र; **तमाचा**—चाँटा, थप्पड़; **गुनाह**—अपराध; **ऋण**—कर्ज; **संकेत**—इशारा; **सौगंध**—कसम; **पेशगी**—पहले दिया जाने वाला धन; **आँखों में खून उतरना**—बहुत गुस्सा होना; **रिश्वत**—घूस; **अठन्नी**—आठ आने, पचास पैसे।

मुहावरों का अर्थ

1. ठंडी साँस लेना = सोच-विचार कर उदास हो जाना, **2. आँख न उठाना** = शर्मिंदा होना, **3. रंग उड़ना** = घबरा जाना, **4. लातों के भूत बातों से नहीं मानते** = दुष्ट व्यक्ति पर समझाने-बुझाने का प्रभाव नहीं पड़ता, **5. आँखें खुलना** = सावधान होना, **6. आँखों में खून उतर आना** = बहुत क्रोध आना, **7. दोनों हाथों से धन बटोरना** = पर्याप्त धन होने पर भी गलत तरीके से धन एकत्रित करना।

शीर्षक की सार्थकता

कहानी रसीला के कम वेतन के साथ प्रारंभ होती है। रसीला द्वारा की गई अठन्नी की चोरी से कहानी में गति आती है। उस अठन्नी की चोरी का कारण, रसीला को छह महीने की सजा के साथ ही न्याय-व्यवस्था पर चोट करते हुए कहानी का अंत हो जाता है। इस तरह मुख्य रूप से अठन्नी की बात ही कही गई है। अत: कहानी का शीर्षक 'बात अठन्नी की' पूर्णत: सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का मुख्य उद्देश्य देश की न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य है, जिसमें कहानीकार पूर्णत: सफल रहे हैं। लेखक ने गरीब रसीला से चोरी करवाई। बाबू जगतसिंह के द्वारा उसे पिटवाकर उच्च वर्ग की हृदय हीनता को दर्शाया और रिश्वतखोर मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन द्वारा रसीला को सजा दिलवा कर न्याय-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। लेखक ने न्याय प्रक्रिया में गरीबों और अमीरों के बीच जो भेदभाव है, वह भली प्रकार दर्शाया है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) रसीला—रसीला बाबू जगतसिंह के घर दस रुपये मासिक पर काम करता है। वह परिश्रमी और ईमानदार है। उसके परिवार में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, दो लड़के व एक लड़की है। इन सबका भार उसके कंधों पर है। वह अच्छा मित्र है। रमजान से उसकी सच्ची मित्रता है। अपने जीवन में केवल एक बार अठन्नी की बेईमानी करने पर उसे छह महीने की सजा मिलती है।

(ख) रमजान—रमजान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार है। उसकी रसीला से मैत्री थी। वह दयालु स्वभाव का था। वह रसीला का चेहरा देखकर उसके मन की बात समझ जाता था। रसीला को छह महीने की सजा होने पर वह बहुत क्रोधित होता है पर कुछ कर नहीं पाता।

(ग) बाबू जगत सिंह—बाबू जगत सिंह इंजीनियर हैं। वे रिश्वत लेकर काम करते हैं। वे लालची भी हैं। रसीला की एक गलती पर वे उसकी बुरी तरह पिटाई करते हैं। वे हृदयहीन हैं। वे मिठाई के शौकीन हैं। वे रिश्वत लेते ही नहीं देते भी हैं। तभी तो सिपाही को पाँच रुपये देकर रसीला से बात मनवाने की कहते हैं।

(घ) शेख सलीमुद्दीन—शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट हैं। वे जगतसिंह के पड़ोसी तथा रिश्वतखोर हैं। वे फलों के शौकीन हैं। वे अपने लाभ के अनुसार न्याय करते हैं। अपने विवेक और बुद्धि का प्रयोग न्याय के समय नहीं करते हैं, इसलिए रसीला के माफी माँगने पर भी और उसकी पहली गलती होने पर भी उसे छह महीने की सज़ा सुना देते हैं।

❑❑

अध्याय - 2 काकी (सियाराम शरण गुप्त)

लेखक परिचय

सियाराम शरण गुप्त जी का जन्म सन् 1895 ई. में उत्तर प्रदेश के झाँसी के निकट एक छोटे से गाँव चिरगाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामचरण गुप्त था। ये राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अग्रज थे। महात्मा गाँधी व विनोबा भाबे के विश्वप्रेम, विश्वशांति, सत्य और अहिंसा जैसे विचारों का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद घर पर ही शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दी भाषा भी सीखी।

गुप्त जी ने गद्य और काव्य दोनों में साहित्य रचना की। 'अनाथ', 'आर्द्रा', 'दूर्वादल', 'अनुरूपा' और 'अमृत पुत्र' आदि इनकी काव्य रचना हैं वहीं मानुषी (कहानी संग्रह), पुण्यपर्व (नाटक) नारी और गोद (उपन्यास) तथा झूठ-सच (निबन्ध संग्रह) इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। इनके साहित्य में दरिद्रता, कुरीतियों के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है।

गुप्त जी को दीर्घकालीन साहित्य सेवाओं के लिए सन् 1962 में 'सरस्वती हीरक जयंती' के अवसर पर सम्मानित किया गया। इन्हें नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा सुधाकर पदक से भी विभूषित किया गया। 9 मार्च, 1963 ई. को इनका देहान्त हो गया।

पाठ का सार

सियाराम शरण गुप्त द्वारा रचित कहानी '**काकी**' मातृ वियोग से ग्रस्त एक अबोध बालक की है।

एक सवेरे श्यामू जगा तो उसने देखा कि उसकी माँ एक कपड़े से ढकी जमीन पर सो रही है घर के सब उसके चारों तरफ बैठे रो रहे हैं। कुछ देर बाद जब लोग उसकी माँ को उठाकर श्मशान ले जाने लगे तो श्यामू ने माँ को ले जाने से रोकने के लिए बहुत उपद्रव मचाया। लोगों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी माँ मामा के यहाँ गई है पर थोड़े ही दिनों में उसे पता चल गया कि उसकी काकी (माँ) ऊपर राम के यहाँ गई है।

कुछ दिनों बाद श्यामू के आँसू तो थम गए, परन्तु उसका दु:ख कम न हुआ। वह अक्सर अकेला बैठा आकाश की ओर ताका करता। एक दिन दूर आकाश में पतंग उड़ती देख उसने पतंग के सहारे काकी को राम के यहाँ से वापस नीचे बुलाने की सोची। पिता से पतंग मँगाने की कहने पर उन्होंने टाल दिया। तब श्यामू ने पिता के कोट से एक चवन्नी चुरा कर सुखिया दासी के बेटे भोला से पतंग मँगा ली। पतंग में डोर बाँधते समय श्यामू ने भोला को अपना हमराज बनाते हुए बताया कि इस पतंग के सहारे काकी राम के यहाँ से नीचे उतर आएगी।

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा बात तो अच्छी है। लेकिन यह डोर पतली है इसके टूटने का डर है। अगर मोटी रस्सी होती तो काकी आराम से नीचे उतर आती। श्यामू को सुझाव पसंद आया लेकिन रस्सी खरीदने के लिए पैसे नहीं थे इसलिए श्यामू ने पिता को कोट से एक रुपया चुरा लिया और भोला से दो अच्छी मजबूत रस्सियाँ मँगायी। जवाहर भैया से एक कागज पर 'काकी' भी लिखवा लिया, जिससे पतंग सीधे काकी के पास ही जाये।

जब वे दोनों पतंग में रस्सी बाँध रहे थे तभी श्यामू के पिता विश्वेश्वर आ गए और उन्होंने दोनों को धमकाकर पूछा कि तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है? भोला ने एक ही डाँट में बता दिया कि श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।

विश्वेश्वर ने श्यामू के कई तमाचे जड़े और पतंग फाड़ डाली। रस्सियों के बारे में पूछने पर भोला ने श्यामू के पतंग तानकर काकी को नीचे उतारने की बात बता दी। विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर खड़े रह गये। जब उन्होंने फटी पतंग उठायी तो उस पर चिपके कागज पर लिखा था—काकी।

शब्दार्थ

भूमि शयन—जमीन पर सोना; **विलाप**—व्याकुल होकर रोना; **आवरण**—परदा; **उपद्रव**—उत्पात; **रुदन**—रोना; **अनंतर**—उसके बाद; **आर्द्रता**—नमी; **उत्कंठित**—बेचैन; **ओछी**—छोटी; **विघ्न**—बाधा, रुकावट; **अन्तस्तल**—भीतर स्थित; **अन्यमनस्क**—जिसका मन कहीं न लगे; **अबोध**—जिसे समझ न हो; **समवयस्क**—समान आयु का; **मुखबिर**—भेद खोलने वाला; **हतबुद्धि**—जो कुछ सोच पाने की अवस्था में न हो; **अन्य मनस्क**—जिसका मन कहीं न लगे।

मुहावरों का अर्थ

1. राम-राम करके = बहुत कठिनाई से, **2. हृदय खिल उठना** = प्रसन्न हो उठना, **3. लाख रुपये की बात सुझाना** = एकदम सही सुझाव देना।

शीर्षक की सार्थकता

यह कहानी श्यामू की माँ, जिन्हें वह काकी कहता था, की मृत्यु से प्रारंभ होती है। आगे सारी घटनाएँ, सारे कार्य इसी प्रकार आधारित होते हैं। जब श्यामू को पता चलता है कि उसकी काकी राम के घर गई हैं, तब श्यामू उन्हें पतंग द्वारा वापस लाने का प्रयास करता है, इसके लिए वह चोरी भी करता है। अंत में पतंग फाड़ने के बाद विश्वेश्वर 'काकी' लिखी हुई चिट देखकर हतप्रभ रह जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि यह शीर्षक 'काकी' पूर्णत: सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का मुख्य उद्देश्य मासूम बच्चे की संवेदनशीलता तथा माँ से बच्चे का अत्यधिक प्रेम दर्शाना है। बच्चों का मन अत्यंत कोमल होता है, वह घटनाओं को अपने हिसाब से समझकर समाधान निकालना चाहते हैं। माँ का दूर रहना वे सहन नहीं कर पाते हैं।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) श्यामू—मुख्य पात्र श्यामू एक अबोध बालक है। वह माँ से बहुत प्यार करता है। वह मृत्यु के सच से अनजान है। माँ को भूमि पर नीचे से ऊपर तक कपड़ा ओढ़े सोते देखकर उसे आभास नहीं हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई है। वह भावुक और संवेदनशील है। अपनी उम्र और समझ के अनुसार उसने माँ को राम के घर से वापस लाने की योजना भी बना ली थी।

(ख) विश्वेश्वर—विश्वेश्वर श्यामू के पिता हैं। पत्नी की असमय मृत्यु से वे उदास और अन्यमनस्क, रहते हैं। उदासी के कारण वे श्यामू की पतंग लाने वाली बात को टाल जाते हैं। वह पुत्र के प्रति जिम्मेदारी भी समझते हैं, जब उन्हें पता चलता है कि श्यामू ने उनके कोट से पैसे चुराये हैं, तब वह क्रोधित होकर उसे तमाचे लगाकर डाँटते भी हैं। पतंग लाने का कारण पता चलने पर वे हतबुद्धि होकर खड़े रह जाते हैं।

(ग) भोला—भोला, श्यामू की दासी सुखिया का लड़का है और श्यामू का हमउम्र है। भोला श्यामू से अधिक समझदार है। पतंग मँगवाने का कारण जब श्यामू बताता है, तो वह सुझाव देता है कि पतंग में मोटी रस्सी बाँधना चाहिए, क्योंकि पतली डोरी पकड़कर काकी नीचे आएँगी, तो डोरी टूट सकती है। वह डरपोक भी है। विश्वेश्वर की एक डाँट से डरकर वह सारा सच उगल देता है।

❑❑

अध्याय – 3 महायज्ञ का पुरस्कार (यशपाल)

लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल का जन्म पंजाब स्थित फिरोजपुर छावनी में 3 दिसम्बर, 1903 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम हीरालाल और माता का प्रेमदेवी था। फिरोजपुर से मैट्रिक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए लाहौर चले गये। वहाँ के नेशनल कॉलेज से बी. ए. किया। लाहौर में वे भगतसिंह व सुखदेव के सम्पर्क में आने के बाद क्रांतिकारी गतिविधियों में भी भाग लेने लगे। इन्होंने 'विप्लव' नाम से पत्र भी निकाला तथा साहित्य साधना में लग गये। ये एक प्रसिद्ध कथाकार और निबन्धकार थे। उन दिनों की लिखी कहानियों का प्रथम संग्रह 'पिंजरे की उड़ान' नाम से प्रकाशित हुआ।

ज्ञानदान, अभिशप्त, तर्क का तूफान, भस्मावृत, चिनगारी, 'वो दुनिया', 'फूलों का कुर्ता', 'धर्मयुद्ध', उत्तराधिकारी तथा चित्र का शीर्षक आदि इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण, नाटक आदि विधाओं में भी लेखन कार्य किया। झूठा-सच, तेरी मेरी उसकी बात, अमिता, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। सिंहावलोकन, गाँधीवाद का शव, चिन्ता (संस्मरण), बात-बात में, देखा सोचा समझा, न्याय का संघर्ष (निबन्ध) नशे-नशे की बात, रूप की परख, दर्दे दिल (नाटक) भी उल्लेखनीय रहे।

इनकी साहित्य सेवा के लिए रीवा सरकार ने 'देवपुरस्कार', सोवियत लैंड सूचना विभाग ने 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तथा भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' के सम्मान से नवाजा।

26 दिसम्बर 1976 ई. को इनका देहान्त हो गया।

पाठ का सार

यशपाल द्वारा रचित कहानी 'महायज्ञ का पुरस्कार' से स्पष्ट है कि नि:स्वार्थ भाव से प्राणी मात्र की भलाई के लिए किया गया कार्य ही सच्चा यज्ञ-महायज्ञ है।

एक धनी सेठ थे। वे अत्यन्त विनम्र, उदार और धर्मपरायण थे। उनके द्वार से कभी कोई निराश नहीं लौटता। भंडार के द्वार सबके लिए खुले थे। सेठ ने अनेक यज्ञ किए और बहुत सा धन दान में दीन-दुखियों में बाँट दिया। लेकिन समय बदलता रहता है और एक समय ऐसा आया कि सेठ को भी गरीबी का मुँह देखना पड़ा। भूखे मरने की नौबत आ गयी।

उन दिनों यज्ञों के फल के क्रय-विक्रय का प्रचलन था। गरीबी से परेशान सेठानी ने सेठ से एक यज्ञ बेचने का आग्रह किया। दुखी मन से सेठ यज्ञ बेचने को तैयार हो गए। दस-बारह कोस दूर कुंदनपुर नगर में एक बहुत बड़े सेठ रहते थे। लोग मानते थे कि उनकी सेठानी के पास कोई दैवी शक्ति है जिससे वह तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। सेठ जी ने उन्हें ही अपना यज्ञ बेचने का निश्चय किया।

रास्ता लम्बा था इसलिए सेठानी ने चार मोटी-मोटी रोटियाँ एक पोटली में सेठ को दे दीं। सेठजी तड़के ही निकल गए। आधा रास्ता पार करते-करते वे थक गए। अत: भोजन कर विश्राम करने का निश्चय कर वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए। वे खाने के लिए रोटी निकालकर तोड़ने ही वाले थे कि थोड़ी ही दूरी पर उन्हें एक कुत्ता भूख से छटपटाता हुआ दिखा। वह रोटी को देख बार-बार गर्दन उठाता, पर कमजोरी के कारण उसकी गर्दन गिर जाती। कुत्ते की ऐसी दशा देख सेठ जी ने एक रोटी टुकड़े-टुकड़े कर कुत्ते के सामने डाल दी। रोटी खाकर कुत्ते के शरीर में

थोड़ी जान आयी। वह मुँह उठाकर सेठ की ओर देखने लगा। सेठ ने सोचा एक रोटी और खाकर यह चलने-फिरने योग्य हो जाएगा और एक और रोटी कुत्ते को दे दी। रोटी खा कुत्ता सरकता हुआ सेठ के समीप आया। पास में कोई बस्ती न देख सेठजी ने धीरे-धीरे बची दोनों रोटियाँ भी कुत्ते को खिला दीं और स्वयं केवल पानी पीकर थोड़ा विश्राम करके चल दिए।

कुंदनपुर पहुँचते शाम हो गई। धन्ना सेठ ने सेठ जी का स्वागत कर आने का कारण पूछा तो सेठ जी ने यज्ञ बेचने की बात बतायी। धन्ना सेठ की पत्नी ने सेठ जी से आज का महायज्ञ खरीदने की बात कही। सेठ जी हैरान हो गए क्योंकि उन्होंने आज तो क्या कई बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया था। वे सोचने लगे कि इन लोगों को यज्ञ खरीदना नहीं है इसलिए ऐसी बातें कर रहे हैं। सेठानी ने सेठ को स्वयं भूखे रह कुत्ते को रोटियाँ खिलाने की बात याद दिलायी और कहा कि असली यज्ञ-महायज्ञ तो वही है क्या आप इसे बेचने को तैयार हैं?

सेठ को मानवोचित कर्म का सौदा करना सही न लगा वे खाली हाथ लौट आये। सेठ जी को खाली हाथ देख सेठानी ने कारण पूछा तो सेठ ने सारी बात बता दी। गरीबी में भी धर्म का पालन करने की बात सुन सेठानी प्रसन्न हुई और सेठ जी को धीरज बँधाया।

शाम के समय जब सेठानी दिया जलाने उठी तो किसी चीज से उसे ठोकर लगी। दिया जलाकर देखा तो पता चला कि दहलीज के सहारे का पत्थर ऊँचा हो गया है जिसके बीच में लगे कुंदे से उन्हें ठोकर लगी थी। सेठ जी को बुलाकर दिखलाया। ध्यान से देखने पर पता चला कि वह तो किसी चीज का ढकना है। सेठ ने कुंदा पकड़कर खींचा तो पत्थर के हटते ही नीचे जाने की सीढ़ियाँ निकल आयीं। सेठ, सेठानी नीचे गए तो जवाहरातों से भरे विशाल तहखाने को देख अचरज में पड़ गए तभी अदृश्य पर स्पष्ट आवाज में उन्होंने सुना कि यह सब निस्वार्थ भाव से भूखे कुत्ते को रोटियाँ खिलाने व उसकी जान बचाने का पुरस्कार है। सेठ, सेठानी ने माथा टेककर भगवान के चरणों में प्रणाम किया।

शब्दार्थ

दुर्बलता—कमजोरी, **धर्म परायण**—धर्म का पालन करने वाला; **अकस्मात्**—अचानक; **क्रय-विक्रय**—खरीदना-बेचना; **तंगी**—आर्थिक परेशानी; **विपदाग्रस्त**—विपत्ति में फँसे; **कुंज**—समूह; **प्रथा**—रीति; **मूक**—जो बोल न सके; **कृतज्ञता**—उपकार मानना; **छटपटाना**—कष्ट से तड़पना; **योग्य**—लायक; **याचना**—माँगना, प्रार्थना; **विस्मित-विमूढ़**—हैरान, आश्चर्यचकित; **मानवोचित**—मनुष्यों के लिए उचित; **पौ फटना**—सूरज का निकलना; **आद्योपांत**—शुरू से अंत तक; **वेदना**—पीड़ा, कष्ट; **विलीन**—गायब, लुप्त; **दलान**—बरामदा; **निस्तब्ध**—बिना हिले; **माजरा**—मामला; **मरणासन्न**—जो मृत्यु के निकट हो; **दिव्य**—अलौकिक; **कृतकृत्य**—धन्य।

मुहावरों का अर्थ

1. सब दिन होत न एक समान—समय एक जैसा नहीं रहता, **2. मुँह फेरना**—ध्यान न देना, उपेक्षा करना **3. पेट कमर से लगना**—अति दुर्बल होना, **4. जान आना-सन्तोष मिलना**, **5. आसमान से गिरना**—आशा पूरी न होना, **6. हृदय उल्लसित होना**—प्रसन्न होना, **7. आँखें चौंधियाना**—दृष्टि स्थिर न रह पाना।

शीर्षक की सार्थकता

'महायज्ञ का पुरस्कार' में सेठ के पास जब धन-दौलत थी, तो कोई उनके घर से भूखा नहीं जाता था। उन्होंने कई यज्ञ भी किये थे। जब उनका समय बदला और वे गरीब हो गये, तब यज्ञ बेचने कुंदनपुर के धन्नासेठ के पास गये। रास्ते में एक मरणासन्न भूखे कुत्ते को अपनी सारी रोटियाँ खिला दीं। धन्ना सेठ और उनकी पत्नी ने भूखे को रोटी खिलाने को महायज्ञ की श्रेणी में रखा और उसी महायज्ञ को खरीदने की इच्छा जाहिर की। सेठ ने उसे मानवोचित कर्म मानकर नहीं बेचा। वापस घर आने पर उसे जवाहरातों से भरा तहखाना मिला और दिव्य वाणी सुनाई दी कि यह महायज्ञ का पुरस्कार है। अत: ये शीर्षक पूर्णत: सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि मुनष्य का परम कर्त्तव्य है, प्रत्येक जीव पर दया करना। जीव-मात्र की मदद ही ईश्वर की सेवा है। लेखक ने इस कहानी के द्वारा मानवता को सच्चा धर्म, सच्चा यज्ञ बताया है। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्टों को दूर करना महायज्ञ है, इसका फल जरूर मिलता है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) सेठ—सेठ अत्यन्त विनम्र और उदार थे। वह धर्मपरायण थे, कोई भी साधु-संत उनके द्वार से निराश नहीं लौटता था। गरीब हो जाने पर भी वे कर्त्तव्य-परायण बने रहे। उन्होंने खुद भूखे रहकर मरणासन्न कुत्ते को सारी रोटियाँ खिला दीं और इस कार्य को यज्ञ की श्रेणी में नहीं रखा। उनके अनुसार यह हर मानव का कर्त्तव्य है और मानवोचित कर्त्तव्य को बेचने को वे तैयार नहीं हुए। जब इस कार्य के फलस्वरूप उन्हें हीरे-जवाहरात प्राप्त हुए, तब भी उन्होंने ईश्वर से यही प्रार्थना की कि उनकी कर्त्तव्य बुद्धि ऐसी ही बनी रहे और उन्हें कर्त्तव्य पालन करने की शक्ति दें।

(ख) सेठानी—सेठानी पतिव्रता थीं। वे समझदार और धैर्यवान भी थीं। गरीबी में भी उन्होंने सेठ का साथ नहीं छोड़ा और धीरज बँधाया। सेठानी ने ही सेठ को यज्ञ बेचने की सलाह दी थी। सेठ के खाली हाथ वापस आने पर उन्हें चिंता तो हुई, पर पूरी कहानी सुनकर वे इसलिए खुश होती है कि सेठ ने विपत्ति में भी अपना धर्म नहीं छोड़ा।

(ग) धन्ना सेठ की पत्नी—धन्ना सेठ की पत्नी के बारे में अफ़वाह थी कि उन्हें कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है, जिससे वह तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। यह सच ही था क्योंकि उन्होंने सेठ के रास्ते में घटी घटना जान ली थी कि सेठ ने स्वयं भूखे रहकर मरणासन्न कुत्ते को सारी रोटियाँ खिला दीं। उसने इस नि:स्वार्थ भाव से किये गये कर्म को सच्चा यज्ञ मानते हुए इसे महायज्ञ की श्रेणी में रखा। इस प्रकार वह बुद्धिमान और मानवता की पुजारिन भी थीं।

❑❑

अध्याय - 4 नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)

लेखक परिचय

सशक्त उपन्यासकार और कहानीकार स्वयं प्रकाश जी का जन्म इंदौर (मध्य प्रदेश) में 20 जनवरी, 1947 को हुआ। मैकेनिकल में इंजीनियरिंग कर एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी करने लगे। इनका अधिकांश जीवन राजस्थान में ही बीता। वर्तमान में स्वयं प्रकाश जी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर भोपाल में रहकर 'वसुधा' नाम की पत्रिका के सम्पादन कार्य में लगे हैं। उनकी साहित्य सेवाओं के लिए उन्हें 'आनन्द सागर कथाक्रम सम्मान', वनमाली पुरस्कार, पहल सम्मान, रांगेय राघव पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया।

स्वयं प्रकाश जी के तेरह कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं इनमें सूरज कब निकलेगा, आदमी जात का आदमी, संधान, आएँगे अच्छे दिन भी आदि प्रमुख हैं। रूसी भाषा में इनकी कहानियों का अनुवाद हो चुका है। बीच में विनय, ईंधन आदि उपन्यास भी लोकप्रिय हुए। स्वयं प्रकाश ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जाति, लिंग सम्प्रदायिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई व जन चेतना को जाग्रत करने का प्रयास किया।

पाठ का सार

लेखक स्वयं प्रकाश जी ने अपनी कहानी नेताजी का चश्मा के माध्यम से यह सन्देश देने का प्रयास किया है कि देश की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करना ही देशभक्ति नहीं है वरन् देश की समृद्धि व विकास के लिए कार्य करना, देशभक्तों के प्रति आदर व सम्मान का भाव रखना भी देशभक्ति है। हो सकता है देशभक्ति दर्शाने के तरीके अलग हों।

हालदार साहब को कम्पनी के काम के सिलसिले में जिस कस्बे से गुजरना पड़ता था वह अधिक बड़ा नहीं था। उसमें कुछ ही मकान पक्के थे और एक बाजार था। वहाँ की नगरपालिका कुछ न कुछ करती रहती थी। इसी के किसी बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगवाई। समय अथवा धन के अभाव में स्थानीय कलाकार से मूर्ति बनवाने का निर्णय किया गया और इसकी जिम्मेदारी हाईस्कूल के ड्रांइग मास्टर को दी गयी।

उसके एक महीने में संगमरमर की नेताजी की मूर्ति बनाई तो टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक दो फुट ऊँची थी। मूर्ति सुन्दर थी। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो.....' आदि याद आने लगता। लेकिन उसमें एक कसर थी नेताजी की मूर्ति पर संगमरमर के स्थान पर एक सामान्य और सचमुच का चौड़ा काले फ्रेम का चश्मा था। जब हालदार साहब पहली बार इस कस्बे से गुजरे तो मूर्ति को देख सोचने लगे कि यह आइडिया भी ठीक है मूर्ति पत्थर की लेकिन चश्मा रियल उन्हें नागरिकों का प्रयास सराहनीय लगा।

अगली बार जब हालदार उधर से गुजरे तो उन्होंने मूर्ति पर दूसरा चश्मा देखा और सोचा कि क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है। हालदार साहब जब भी उस कस्बे से गुजरते तो मूर्ति पर अलग चश्मा लगा देखते। एक बार हैरानी असहनीय हो गयी तो उन्होंने पानवाले से बार-बार चश्मा बदलने का कारण पूछा तो पान वाले ने बताया कि कैप्टन चश्मे वाला यह सब करता है। अगर ग्राहक को जो फ्रेम चाहिए वह फ्रेम मूर्ति पर लगा हो तो फ्रेम मूर्ति से उतारकर ग्राहक को दे देता है और मूर्ति को दूसरा चश्मा पहना देता है। नेताजी की मूर्ति के ओरिजिनल चश्मे के बारे में पूछने पर पान वाले ने बताया कि मास्टर बनाना भूल गया।

हालदार साहब ने सोचा कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी या आजाद हिन्द फौज का कोई भूतपूर्व सिपाही होगा लेकिन पानवाले द्वारा कैप्टन को लँगड़ा कहकर मजाक उड़ाना हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा। जब पानवाले के संकेत पर हालदार साहब ने कैप्टन को देखा तो अवाक् रह गये। कैप्टन एक बेहद बूढ़ा मरियल सा लँगड़ा आदमी था जो बाँस पर चश्मे टाँग फेरी लगाता था। उसके सिर पर गाँधी टोपी व आँखों पर काला चश्मा था।

दो साल तक हालदार साहब के उस कस्बे से गुजरने व मूर्ति पर अलग-अलग चश्मे देखने का सिलसिला चलता रहा लेकिन एक बार उन्होंने मूर्ति को बिना चश्मे के देखा तो उन्हें हैरानी हुई। अगली बार भी मूर्ति पर चश्मा न देख पानवाले से पूछा तो उसने आँखें पोछते हुए बताया कि कैप्टन मर गया। हालदार साहब जीप में बैठ रवाना हो गए और सोचने लगे देश की खातिर सब कुछ बलिदान करने वालों पर भी लोग हँसते हैं।

पन्द्रह दिन बाद जब हालदार साहब उस कस्बे से गुजरे तो ड्राइवर से कहा आज बहुत काम है रुकेंगे नहीं पान भी आगे खा लेंगे। लेकिन आदतन उनकी निगाह चौराहे पर लगी नेताजी की मूर्ति पर पड़ी तो वे चीख उठे रोको गाड़ी, और कूदकर मूर्ति के सामने जा खड़े हुए। मूर्ति पर सरकंडे से बना छोटा सा चश्मा देख हालदार साहब भावुक हो गए और उनकी आँखें भर आईं।

शब्दार्थ

प्रतिमा—मूर्ति; **ऊहापोह**—अनिश्चय की स्थिति में मन में उत्पन्न होने वाला तर्क-वितर्क; **सराहनीय**—प्रशंसनीय; **सिलसिला**—क्रम; **लक्षित**—देखा; **कौतुक**—अचरज, हैरानी; **रियल**—असली; **आइडिया**—विचार; **दुर्दमनीय**—जिसे दबाना कठिन हो; **थिरकी**—हिली; **तोंद**—मोटा पेट; **गिराक**—ग्राहक; **आहत**—दुखी; **मरियल**—कमजोर; **दरकार**—आवश्यकता, जरूरत; **भूतपूर्व**—पहले के समय का; **अवाक्**—आश्चर्यचकित; **प्रफुल्लता**—खुशी; **होम**—त्याग; **प्रतिष्ठापित**—स्थापित; **सरकंडे**—सरपत नाम के एक पौधे का नाम; **फेरी लगाना**—घूम-घूमकर सामान बेचना; **बस्ट**—धड़ से ऊपर का भाग; **शासनावधि**—कार्यकाल।

मुहावरों के अर्थ

1. देखते ही खटकना—बुरा लगना, **2. होम कर देना**—कुर्बान करना, **3. आँखें भर आना**—आँखों में आँसू आ जाना।

शीर्षक की सार्थकता

कहानी में लेखक ने नेताजी के चश्मे के माध्यम से देशभक्ति की भावना को उजागर किया है। हालदार साहब को काम के सिलसिले में जिस कस्बे से गुजरना पड़ता था, उसके मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की एक संगमरमर की मूर्ति थी। उस मूर्ति की आँखों में संगमरमर का चश्मा न होकर सचमुच का चश्मा था। यही कारण था कि हालदार साहब इस मूर्ति की ओर आकर्षित थे। चश्मा लगाने वाले कैप्टन की मृत्यु के बाद नेताजी की आँखों पर चश्मा न देखकर हालदार साहब को दु:ख हुआ। कहानी के अंत में नेताजी की आँखों पर सरकंडे का बना हुआ चश्मा देखकर हालदार साहब खुश होते हैं कि आज भी देशभक्ति जीवित है। अत: कहा जा सकता है कि शीर्षक 'नेताजी का चश्मा' पूर्णत: सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का उद्‌देश्य यह प्रकट करना है कि देश के छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े सभी में देशभक्ति की भावना होती है और यह भावना समय-समय पर सब अपने तरीकों से प्रकट करते रहते हैं। किसी के छोटे प्रयासों की हँसी न उड़ाकर हमें उसकी भावना को समझते हुए उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) हालदार साहब—हालदार साहब अच्छे पद पर कार्यरत हैं। वे अपने काम के सिलसिले में इस कस्बे से हर पंद्रहवें दिन गुज़रते हैं। वे देशभक्त हैं तथा देशभक्तों का सम्मान करते हैं। उन्हें पानवाले के द्वारा कैप्टन का मज़ाक उड़ाना अच्छा नहीं लगता है। वे भावुक और संवेदनशील भी हैं। उन्हें उन लोगों के बारे में सोचकर दु:ख होता है जो शहीदों का मज़ाक उड़ाते हैं और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढते हैं।

(ख) चश्मेवाला कैप्टन—चश्मेवाला कैप्टन अपने नाम के विपरीत एक बेहद मरियल-सा लंगड़ा आदमी था, जिसने सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा पहने हुआ था। उसके एक हाथ में छोटी-सी संदूक थी और दूसरे हाथ में एक बाँस पर बहुत से चश्मे टाँगे घूमता था। उसकी दुकान नहीं थी, वह फेरी लगाकर चश्मे बेचता था। अपनी देशभक्ति और नेताजी के प्रति सम्मान की भावना के कारण वह नेताजी की मूर्ति को बिना चश्मे के देख नहीं पाता था और अपने फ्रेमों में से एक फ्रेम उन्हें लगाकर उनके प्रति आदर प्रकट करता था।

(ग) पानवाला—पानवाला काला, मोटा और खुशमिज़ाज व्यक्ति था। वह हमेशा पान खाता रहता था। उसके हँसने से उसकी तोंद हिलती थी। लगातार पान खाते रहने से उसके दाँत लाल-काले हो रहे थे। वह कैप्टन का मज़ाक उड़ाता था और उसे पागल कहता था, पर कैप्टन की मौत पर उसकी भी आँखें नम हो गईं थीं। ❑❑

अध्याय - 5 अपना-अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार)

लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार, उपन्यासकार व निबन्धकार लेखक जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज नामक कस्बे में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल में हुई। जैनेन्द्र ने उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय से प्राप्त की। बाद में ये असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। नागपुर में इन्होंने राजनैतिक पत्रों में संवाददाता के रूप में कार्य किया।

प्रेमचन्द के निकट सम्पर्क में रहते हुए भी जैनेन्द्र की कहानियाँ उनसे सर्वथा अलग हैं। जैनेन्द्र ने हिन्दी कहानी के प्रारम्भिक दौर को दिशा दी। इनकी रचनाओं पर गाँधीवाद का बहुत प्रभाव पड़ा।

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—

कहानी संग्रह—फाँसी, जय सन्धि, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, दो चिड़िया, पाजेब, खेल।

उपन्यास—सुनीता, सुखदा, मुक्तिबोध, परख, त्यागपत्र।

निबन्ध संग्रह—साहित्य का श्रेय और प्रेय, मंथन, पूर्वोदय, सोच-विचार, प्रस्तुत प्रश्न।

पाठ का सार

'अपना-अपना भाग्य' कहानी में लेखक ने एक ऐसे गरीब बालक का चित्रण किया है जो अपनी गरीबी से संघर्ष करते-करते ठंड से मर जाता है लेकिन कोई उसका साथ नहीं देना चाहता।

लेखक और उसका मित्र नैनीताल की सैर कर सड़क के किनारे पर बेंच पर बैठ जाते हैं। शाम होने के साथ-साथ ठंड भी बढ़ने लगती है इसलिए लेखक होटल वापस लौटना चाहता है लेकिन उसका मित्र और कुछ देर वहाँ बैठकर प्रकृति के नजारों का आनन्द लेना चाहता था इसलिए वह लेखक को भी हाथ पकड़कर वहीं बैठा लेता है।

अचानक उन्हें कोहरे में से एक पहाड़ी लड़का अपनी ओर आता दिखाई दिया। वह नंगे पैर, नंगे सिर व एक मैली-सी कमीज पहने था। उसकी उम्र लगभग दस-बारह वर्ष होगी। उसका रंग गोरा था तथा बाल बड़े थे। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें एकदम सूनी थीं।

लेखक के मित्र ने उसे आवाज देकर बुलाया और रात में इस तरह घूमने का कारण पूछा तो उसने बताया कि वह भूख और गरीबी से परेशान होकर गाँव के एक लड़के के साथ घर से भागकर यहाँ आया था क्योंकि उसके कई भाई-बहन थे। उनके पास न कोई काम था न रोटी। उसके साथी की मालिक की पिटाई से मौत हो चुकी थी और वह स्वयं एक दुकान पर काम करता था जहाँ एक रुपया व झूठे खाने के बदले दुकानदार उससे पूरे दिन काम लेता लेकिन अब उसने भी नौकरी से निकाल दिया था। उसने सुबह से कुछ नहीं खाया था।

लेखक का मित्र उसे नौकरी दिलाने का आश्वासन दे अपने एक वकील मित्र के होटल ले गया तथा उनसे उस लड़के को नौकरी पर रख लेने का आग्रह किया लेकिन वकील ने एक अनजान लड़के को नौकरी पर रखने से साफ इंकार कर दिया और कहा कि पहाड़ी लड़के बहुत शैतान होते हैं। हो सकता है कि ये सारा सामान लेकर गायब हो जाए। मित्र के समझाने पर भी राजी नहीं हुए। लेखक अपने मित्र के साथ अपने होटल चला जाता है। होटल में भी मित्र को उस लड़के के पास कम कपड़े होने की बात बेचैन करती है।

अगले दिन जब ये वापस लौटने को मोटर में सवार हुए तो उन्हें पता चला कि कल रात एक गरीब पहाड़ी लड़का जिसकी उम्र लगभग दस वर्ष थी सड़क के किनारे ठंड से मर गया। दोनों सोचते हैं—अपना-अपना भाग्य।

शब्दार्थ

निरुद्देश्य—बिना किसी उद्देश्य के; **अरुण**—सूरज, लाल रंग; **झुंझलाना**—परेशान होना, खीजना; **सनक**—धुन, पागलपन; **चुंगी**—कर वसूलने के लिए बनाई गई चौकी; **कुढ़ना**—चिढ़ना; **मूक**—गूँगा, चुपचाप; **अचरज**—आश्चर्य; **अवगुण**—दोष; **असमंजस**—दुविधा; **निठुराई**—कठोरता; **चम्पत होना**—भाग जाना; **प्रकाश-वृत्त**—रोशनी का घेरा; **मसहरी**—मच्छरदानी; **बेहयाई**—बेशर्मी।

मुहावरों के अर्थ

1. चारा न रहना—कोई उपाय न रहना, **2. आँखें फाड़ना**—आश्चर्ययुक्त होना, **3. चम्पत हो जाना**—भाग जाना, **4. प्रेत गति से बढ़ना**—तीव्र गति से जाना, **5. तीर-सी लगना**—तेज़ गति से लगना, **6. आस लगाए बैठना**—आशा बाँधना।

शीर्षक की सार्थकता

शीर्षक 'अपना-अपना भाग्य' पूर्णत: सार्थक है। इस कहानी में एक गरीब पहाड़ी बालक से लेखक और उनके मित्र मिलते हैं। उन्हें उससे सहानुभूति होती है। वे उसे अपने मित्र के पास नौकर रखने के लिए लाते हैं, पर उनके मित्र जो वकील हैं, उन्हें लगता है कि पहाड़ी बालक भरोसे के लायक नहीं हैं और वे उसे नौकरी देने से मना कर देते हैं। लेखक और उनके मित्र उस बालक को इतनी ठंड में दूसरे दिन आने का कहकर भेज देते हैं। वे उसे रात में ओढ़ने के लिए भी कुछ नहीं देते। उस बच्चे की मृत्यु होने पर उसे उसके भाग्य के भरोसे मढ़कर अपना-अपना भाग्य कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं। अत: ये शीर्षक उपयुक्त है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का उद्देश्य यह दर्शाना है कि गरीबों से सब सहानुभूति तो व्यक्त करते हैं, पर उनकी सहायता नहीं करते। अगर भयावह परिस्थितियों में गरीब की मौत हो जाती है, तो सारा दोष भाग्य का बताकर सब अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेते हैं। अगर समय रहते इनकी सहायता की जाये, तो कोई गरीब अकाल मृत्यु न मरे।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) पहाड़ी बालक—पहाड़ी बालक की उम्र दस-बारह वर्ष थी। वह गोरा था, पर मैल से काला पड़ गया था। आँखें बड़ी थीं, पर दर्द के कारण सूनी थीं। माथे पर अभी से झुर्रियाँ नजर आ रही थीं। उसके बड़े बाल थे। वह नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज़ में खाली पेट ठिठुरता हुआ घूम रहा था। वह एक दुकान में काम करता था, जहाँ उसे एक रुपया और जूठा खाना मिलता था। उसे उस नौकरी से हटा दिया गया था। वह नैनीताल से पन्द्रह कोस दूर के एक गाँव से भागकर आया था। गाँव में उसके कई भाई-बहन थे। माँ-बाप के पास काम नहीं था। माँ रोती थी और बाप मारता था। इसलिए अपने से उम्र में बड़े एक साथी के साथ भाग आया था। कहानी के अंत में वह बालक मृत्यु के आगोश में चला जाता है।

(ख) लेखक का मित्र—लेखक का मित्र लेखक के साथ नैनीताल में घूमने आया है। वह कुछ सनकी है। वह गरीबों से सहानुभूति रखता है। वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का भी है। गरीब पहाड़ी बालक को देखकर वह उसके बारे में जानकारी प्राप्त करता है। उसे अपने वकील मित्र के पास नौकरी के लिए भी लाता है, लेकिन खुद न तो उसे खाना खिलाता है, न कपड़े देता है और नही आर्थिक सहायता करता है। वह उसे भाग्य भरोसे छोड़ देता है।

(ग) वकील मित्र—वकील मित्र लापरवाह, शक्की और निष्ठुर थे। वह उस गरीब पहाड़ी लड़के पर भी शक करते हैं और नौकरी पर नहीं रखते। वे खुद तो कश्मीरी दुशाला लपेटे थे। मोजे चढ़े पैरों में चप्पलें थीं, वो भी होटल के अंदर, पर उस बच्चे को ठंड से बचने के लिए कुछ ओढ़ने-पहनने को भी नहीं दिया।

❑❑

अध्याय - 6 बड़े घर की बेटी (मुंशी प्रेमचन्द्र)

लेखक परिचय

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारी व उपन्यासकार सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी के निकट लमही गाँव में 31 जुलाई 1880 ई. में हुआ। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था। इनकी आरम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण घर की सारी जिम्मेदारी इनके कंधों पर आ गयी। आर्थिक समस्याओं के कारण दसवीं पास करते ही प्राइमरी स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे। लेकिन पढ़ाई जारी रखी। स्नातक करने के बाद शिक्षा विभाग में सब डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स के पद पर पहुँच गये। बाद में नौकरी छोड़ साहित्य सृजन में लग गए।

आरम्भ में उर्दू भाषा में नवाबराय के नाम से लिखना शुरू किया लेकिन बाद में प्रेमचन्द के नाम से हिन्दी साहित्य में लेखक कार्य करने लगे। सामान्य जनजीवन का चित्रण, राष्ट्रीय जागरण व समाज सुधार उनके साहित्य के प्रमुख विषय थे। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों व आर्थिक विषमताओं के विरुद्ध आवाज उठायी।

प्रेमचन्द जी ने लगभग 300 कहानियों व 11 उपन्यासों की रचना की। उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से आठ खण्डों में संगृहीत है। इसके साथ ही इन्होंने नाटक व निबन्धों की रचना भी की।

प्रेमचन्द ने जनसामान्य की भाषा को अपनाया। उन्होंने कहानी, पात्र, वातावरण आदि के अनुसार शब्दों का चयन किया 8 अक्टूबर, 1936 को उनका निधन हो गया।

पाठ का सार

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े सम्पन्न थे लेकिन अब स्थिति बदल चुकी थी। ठाकुर साहब अपनी आधी से ज्यादा सम्पत्ति वकीलों को दे चुके थे। बेनीमाधव सिंह के दो बेटे थे बड़ा बेटा श्रीकंठ बी. ए. पास कर एक दफ्तर में नौकरी कर रहा था वहीं छोटा बेटा लाल बिहारी दोहरे बदन का सजीला जवान था। उसका चेहरा भरा हुआ और चौड़ी छाती थे लेकिन स्वभाव में श्रीकंठ के बिल्कुल विपरीत था।

श्रीकंठ अंग्रेजी डिग्री प्राप्त करने के बावजूद अपनी प्राचीन सभ्यता के प्रशंसक थे तथा संयुक्त परिवार के उपासक थे। वे दशहरे पर रामलीला में अभिनय भी करते थे। एक छोटी सी रियासत के ताल्लुकेदार भूपसिंह की चौथी लड़की आनन्दी जो बहुत सुन्दर व गुणी थी, से श्रीकंठ का विवाह हुआ। श्रीकंठ का घर एक सीधा-सादा देहाती का मकान था। आनन्दी सुख-सुविधाओं में पली बढ़ी थी लेकिन उसने कुछ ही दिनों में स्वयं को परिस्थितियों में ढाल लिया।

एक दिन दोपहर के समय आनन्दी भोजन बना के चुकी तभी लाल बिहारी ने उससे दो चिड़िया पकाने के लिए कहा। घर में जो पावभर घी था आनन्दी ने वह मांस में डाल दिया। जब लाल बिहारी ने बिना घी की दाल देखी तो इसी बात पर आनन्दी से उसकी कहा सुनी हो गयी। लाल बिहारी ने आनन्दी के मैके पर ताना मारा तो आनन्दी आपे से बाहर हो गयी। इस पर अनपढ़, उजड्ड लाल बिहारी ने खडाऊँ फेंककर

आनन्दी पर मारी। आनन्दी ने हाथ से खड़ाऊँ रोक ली अन्यथा उसका सिर ही फट जाता। श्रीकंठ शहर में नौकरी करता था और शनिवार को घर आता था इसलिए आनन्दी उस समय खून का घूँट पीकर रह गयी व श्रीकंठ के आने का इंतजार करने लगी। श्रीकंठ के आने में दो दिन थे। इस बीच आनन्दी बिना खाये-पिये कोपभवन में ही रही।

शनिवार की शाम जब श्रीकंठ घर आए तो गाँव वालों से इधर-उधर की बातें करते-करते रात के दस बज गए। एकांत मिलने पर लाल बिहारी ने आनन्दी की शिकायत करते हुए कहा कि भैया आप भाभी को समझा दें कि वे मुँह सँभालकर बोला करें। अपने मायके के सामने हमें कुछ नहीं समझतीं। बेनीमाधव ने भी लाल बिहारी की बात का समर्थन किया।

श्रीकंठ ने आनन्दी के पास पहुँचने पर पूछा कि तुमने घर में उपद्रव क्यों मचा रखा है। तब आनन्दी ने श्रीकंठ को सारी घटना कह सुनायी और बताया कि लाल बिहारी के प्रहार करने पर उसका सिर फूटते-फूटते बचा। यह कहकर आनन्दी रोने लगी। यद्यपि श्रीकंठ धैर्यवान व शांत स्वभाव के थे। लेकिन पत्नी के आँसू व लालबिहारी के पशुवत व्यवहार से उसका क्रोध भड़क गया। वे स्त्रियों की मान प्रतिष्ठा को बनाए रखने के पक्षधर थे। अत: अपनी ही स्त्री पर अत्याचार को बर्दाशत करना असहनीय हो जाने पर प्रात: होते ही पिता से कह दिया कि अब इस घर में मेरा रहना सम्भव नहीं है।

बेनीमाधव ने श्रीकंठ को समझाने की कोशिश की लेकिन वे लाल बिहारी की गलती मानने को तैयार नहीं थे। दोनों में तीखी बहस होने लगी। ठाकुर साहब को भी क्रोध आ गया। इसी बीच गाँव के कुछ ऐसे लोग जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति से जलते थे ठाकुर के परिवार का तमाशा देखने किसी न किसी बहाने से वहाँ एकत्र होने लगे। बेनीमाधव उनका इरादा भाँप गए इसलिए उन्होंने बात पलटने की कोशिश की। लेकिन अनुभवहीन श्रीकंठ पिता का आशय न समझ सके और आवेश में आकर अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि या तो लाल बिहारी घर में रहेगा या वह।

लाल बिहारी पिता से अधिक बड़े भाई का लिहाज करते थे। दोनों भाइयों में अत्यधिक स्नेह था। आज भाई के मुँह से ऐसी बातें सुन उसे बड़ी ग्लानि हुई। उसे पछतावा भी हो रहा था वह फूट-फूटकर रोने लगा। आनन्दी से क्षमा माँग कर घर छोड़कर जाने की बात कहते-कहते रोने लगा।

आनन्दी का क्रोध शांत हो गया उसने लाल बिहारी को अपनी सौगंध दे उसे जाने से रोका व श्रीकंठ से भी उसे क्षमा करने को कहा अंत में श्रीकंठ का हृदय भी पसीज गया और उसने लाल बिहारी को क्षमा करते हुए गले लगा लिया। बेनी माधव भी यह सब देख प्रसन्न हो गए और सब आनन्दी की प्रशंसा करते हुए कहने लगे—"बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।"

शब्दार्थ

बहली—छतरीदार बैलगाड़ी; **रीझना**—मुग्ध होना; **नित्य**—रोज; **पितामह**—दादा; **सजीला**—आकर्षक; **अधिपति**—स्वामी; **बहुधा**—अक्सर; **कांतिहीन**—आभा से रहित; **बाट**—रास्ता; **निर्वाह**—गुजारा; **ललनाएँ**—स्त्रियाँ; **कलह**—झगड़ा; **ताल्लुकेदार**—जमींदार; **कदाचित**—कभी-कभी; **ऋण**—कर्ज; **टीम-टाम**—साज-शृंगार; **रीझ**—मोहित होना; **किफायत**—बचत; **भावज**—भाभी; **खड़ाऊँ**—लकड़ी की बनी खुली खूँटीदार पादुका; **वार्तालाप**—बातचीत; **पाश्चात्य**—पश्चिमी; **पिण्ड छुड़ाना**—पीछा छुड़ाना; **क्षुधा**—भूख; **बाबला**—पागल; **उपद्रव**—उत्पात; **शऊर**—ढंग, सलीका; **त्योंरी चढ़ना**—क्रोधित होना; **उद्विग्नता**—बेचैनी; **कदापि**—कभी भी; **ग्लानि**—शर्मिंदगी; **अकुलाना**—बेचैन होना; **सौगंध**—कसम; **सहर्ष**—प्रसन्नता के साथ; **वृत्तांत**—घटना का पूरा विवरण; **उजड्ड**—असभ्य; **गुमान**—घमंड; **साक्षी**—गवाही; **पशुवत्**—पशुओं जैसा।

मुहावरों के अर्थ

1. न्योछावर करना—उत्सर्ग करना, **2. अपनी खिचड़ी अलग पकाना**—मिलकर न रहना, **3. जल जाना**—क्रोधवश दुख पाना, **4. मुँह लाल होना**—गुस्सा आ जाना, **5. मजा चखाना**—दंड देना, **6. खून का घूँट पीकर रह जाना**—अपमान सह जाना, **7. सुध न रहना**—होश न रहना, **8. त्योरी चढ़ना**—क्रोध करना, **9. आग लगाना**—भड़कना, **10. आँखें लाल होना**—क्रोध आना, **11. आड़े हाथों लेना**—भला बुरा कहना, **12. सिर-चढ़ना**—ठीक बनाना, **13. अवाक् रह जाना**—हैरान हो जाना, **14. फूट-फूटकर रोना**—बहुत विलाप करना, **15. गला भर आना**—दुखी होना, **16. आँखें फेरना**—प्रतिकूल होना, **17. मन साफ़ होना**—वैर भाव हटना, **18. हृदय पिघलना**—दया युक्त होना, **19. पुलकित होना**—खुश होना।

शीर्षक की सार्थकता

यह कहानी एक बड़े घर की बेटी आनंदी पर आधारित है, जो विवाह कर एक साधारण से घर में आती है। वह कुछ समय में ही स्वयं को ससुराल के माहौल में ढाल लेती है। देवर द्वारा मायके पर उंगली उठाने से उसे क्रोध आता है। वह पति से शिकायत करती है पर बात बिगड़ने पर अपनी सूझ-बूझ से परिस्थिति को संभाल भी लेती है। पूरे गाँव में यह चर्चा होती है कि बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। अत: शीर्षक 'बड़े घर की बेटी' पूर्णत: सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी के माध्यम से लेखक प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया है कि पारिवारिक स्नेह और सामंजस्य को बनाए रखने में घर की बहुओं की अहम भूमिका होती है। बड़े घर की बेटियाँ अपनी सूझबूझ से बिगड़ती हुई बात को संभाल लेती हैं तथा परिवार टूटने से बचा लेती हैं।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) आनंदी—आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। वह रूपवती और गुणवती थी। आनंदी के पिता भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। उसके विवाह के बाद उसे मायके से विपरीत ससुराल मिली, पर उसने जल्द ही अपने आप को परिस्थिति के अनुकूल बना लिया। वह समझदार थी, पर उसे क्रोध जल्दी आता था। वह स्वभाव में बहुत अच्छी थी। वह दयालु थी। लालबिहारी की आँख में आँसू देखकर उसका क्रोध शांत हो गया तथा उसने लालबिहारी को सौगंध देकर रोक लिया। उसने पति का क्रोध भी शांत किया।

(ख) श्रीकंठ सिंह—श्रीकंठ सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार बेनीमाधव सिंह के बड़े बेटे थे। वे बी. ए. थे। उनका चेहरा कांतिहीन था। वे पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विरोधी और संयुक्त परिवार के समर्थक थे। दशहरे के दिनों में वे रामलीला में किसी न किसी पात्र का अभिनय करते थे। वे अपने भाई से प्रेम करते थे, पर पत्नी के प्रति उत्तरदायित्व भी समझते थे।

(ग) लालबिहारी सिंह—लालबिहारी सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार बेनीमाधव सिंह का छोटा पुत्र था। वह दोहरे बदन का सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा था और छाती चौड़ी थी। वह सबेरे उठते ही भैंस का दो सेर ताजा दूध पी जाता था। वह थोड़ा क्रोधी था, पर दिल का अच्छा था। वह अपने बड़े भाई का आदर करता था। वह भाई के लिए घर छोड़कर जाने को भी तैयार हो गया था।

(घ) बेनीमाधव सिंह—बेनीमाधव सिंह गोरीपुर गाँव के जमींदार थे। उनके दादा-परदादा धन-सम्पन्न थे। गाँव में पक्का तालाब व मंदिर उनके पूर्वजों ने ही बनवाया था। उनकी वार्षिक आय एक हजार से अधिक नहीं थी। उनका मानना था कि स्त्रियों को सिर नहीं चढ़ाना चाहिए। वे परिवार को बाँधकर रखना चाहते थे, इसलिए दोनों भाइयों में सुलह की कोशिश कर रहे थे। वे पुराने आदमी थे। गाँव वालों की भावनाओं को समझते थे और विरोधियों को ताली बजाने का अवसर नहीं देना चाहते थे। वे श्रींकठ सिंह को समझाने का प्रयास करते हैं। आनंदी के प्रयास से दोनों भाइयों के गले मिलने पर खुश होकर कहते हैं, ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।''

❑❑

अध्याय - 7 संदेह (जयशंकर प्रसाद)

लेखक परिचय

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 में काशी के प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। इनका परिवार सुघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध था। इनके पिता का नाम देवी प्रसाद था जो तम्बाकू के व्यापारी थे। काशी के क्वींस कॉलेज से आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर घर पर ही अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दू, उर्दू तथा फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। इनके माता-पिता तथा बड़े भाई का असामयिक निधन हो गया तथा युवावस्था में ही पत्नी का निधन हो गया। इस कारण इनकी रचनाओं में भी वेदना की झलक मिलती है।

बाल्यकाल से ही कविता में इन्हें विशेष रुचि थी। ब्रजभाषा में काव्य रचना करने के बाद खड़ी बोली में कविताएँ लिखना शुरू कीं। इन्होंने काव्य लेखन के साथ गद्य लेखन भी किया। 'अजातशत्रु' चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (नाटक), कंकाल, तितली (उपन्यास), आकाशदीप, इंद्रजाल, आँधी और छाया (कहानी संग्रह) इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। इन्होंने कामायनी, आँसू, झरना, लहर आदि काव्यों की रचना की जिनमें 'कामायनी' सबसे प्रमुख है।

उन्होंने अपने काव्य में नारी को पराकाष्ठा तक पहुँचाया। प्रकृति प्रेम, देश प्रेम, मानव धर्म, भारतीय संस्कृति के प्रेम आदि इनकी रचनाओं में प्रमुख रूप से देखे जा सकते हैं।

सन् 1937 में 48 वर्ष की अल्पायु में ही हिन्दी के महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का निधन हो गया।

पाठ का सार

'संदेह' कहानी में कहानीकार जयशंकर प्रसाद ने दिखाया है कि परिस्थितियाँ मानव के मन में संदेह उत्पन्न कर उसे इस तरह भ्रमित कर देती हैं व्यक्ति उचित व अनुचित में भी भेद नहीं कर पाता।

रामनिहाल श्यामा नाम की एक विधवा औरत के यहाँ रहता था। एक दिन वह अपना बिखरा हुआ सामान बाँधने लगा। उसके हाथों में एक कागजों का बण्डल था जिसे सन्दूक में रखने से पहले वह खोलकर पढ़ना चाहता था। बण्डल तो उसने रख दिया लेकिन दूसरा बड़ा सा लिफाफा जिसमें एक चित्र था, को खोल कर रोने लगा।

निहाल बाबू को रोते देख किशोरी ने हल्ला मचा दिया जिसे सुन उस किशोरी की भाभी श्यामा आई और निहाल बाबू से रोने की वजह पूछने लगी। हालात की गम्भीरता को देखते हुए श्यामा ने किशोरी को बहाने से भेज दिया। तब रामनिहाल ने बताया कि जगह-जगह छोटा-मोटा व्यवसाय व नौकरी ढूँढ़ता जब तुम्हारे घर आया तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने अब घर पा लिया। मैं जब से संसार को जानने लगा, तभी से गृहहीन था। तुम्हारे यहाँ घर का-सा सुख है लेकिन यह सब मुझे छोड़ना पड़ेगा।

कार्तिक पूर्णिमा की शाम जब मैं दशाश्वमेध घाट जाने वाला था तभी सहकर्मी ब्रजकिशोर ने अपनी सम्बन्धियों को भी गंगा किनारे साथ ले जाने व बजरे पर बैठाकर घुमाने का आग्रह किया और कहा मानमन्दिर घाट का बजरा उपयुक्त रहेगा। मैं उन दोनों स्त्री-पुरुष को ले मान मन्दिर पहुँचा। पुरुष मोहन बाबू तो बजरे में बैठ गए लेकिन मनोरमा मेरी मदद से ही बजरे पर चढ़ पायी।

चाँदनी निकल आयी। गंगा में दीपक बहते देख मोहन बाबू ने बताया कि ये दीपक जीवन के लघुदीप को अनंत धारा में बहा देने का संकेत हैं लेकिन उन दोनों की बातचीत से यह स्पष्ट था कि पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद है। मोहन बाबू को अपनी पत्नी पर संदेह था कि वह ब्रजकिशोर के साथ मिलकर उसे पागल बना देने का षड्यंत्र रच रही है। मनोरमा ने उन्हें समझाया कि व्यर्थ का संदेह न करें और शांत हो जाएँ।

कुछ देर बाद स्वस्थ होने पर उन्होंने अपनी पत्नी से माफी माँगी। वापस लौटने पर बजरे से उतर मनोरमा ने मुझसे विपत्ति में सहायता करने को कहा जिसे सुन मैं अवाक् रह गया। लेकिन बाद में मुझे मालूम हुआ कि ब्रजकिशोर बाबू मोहनलाल को अदालत में पागल सिद्ध कर उनकी सम्पत्ति का प्रबन्धक बनाना चाहते थे। अपने संदेह के कारण मोहन पूरा पागल बन गया है और ये चिटिठयाँ मनोरमा की हैं वह मुझे बुला रही है। मुझे संदेह है कि वह मुझे प्यार करती है।

यह सुनते ही श्यामा हँस पड़ी और रामनिहाल के हाथ में अपना चित्र देखकर श्यामा ने उसे समझाया कि प्यार करना बड़ा कठिन है तुम इसके चक्कर में मत पड़ो। मनोरमा दुश्चरित्रा नहीं है बल्कि मुसीबत में मदद के लिए बुला रही है। ब्रजकिशोर की चालाकियों से उसे बचाओ। अपने मन से भ्रम व संदेह को निकाल दो। फिर लौट कर यहीं रहना अभी तुम्हें मेरी संरक्षता की आवश्यकता है। अंत में रामनिहाल उठकर नहाने चला जाता है।

शब्दार्थ

विराग—विरक्ति; **निमग्न**—डूबा हुआ; **निर्झरिणी**—नदी; **उज्ज्वल**—साफ, चमकीला; **विस्मृत**—भूला हुआ; **प्रायश्चित**—किसी अपराधबोध में किया गया कठोर आचरण; **प्रतिबिम्ब**—परछाई; **वैधव्य**—विधवापन; **उत्तराधिकार**—विरासत, पूर्वजों की सम्पत्ति पर अधिकार; **अवलंब**—सहारा; **महात्वाकांक्षा**—बड़ा, महान बनने की इच्छा; **मृग-मरीचिका**—ऐसी तृष्णा जो पूरी होना सम्भव न हो; **व्यर्थ**—बेकार; **शुभ-चिंतक**—भलाई चाहने वाला; **बजरा-बड़ी-नाव**—**नि:श्वास**—गहरी साँस; **सुरभित**—सुगन्धित; **अनन्त**—जिसका अंत न हो; **हतबुद्धि**—जो कुछ सोच पाने की अवस्था में न हो; **विक्षिप्त**—परेशान; **निश्चेष्ट**—जिसमें हलचल न हो; **संखिया**—एक विष; **मनोविकार**—मन का रोग; **व्याकुल**—बेचैन; **ऊभ-चूभ**—आशा और निराशा की अवस्था; **उपहास**—मजाक या हँसी; **अवाक्**—मौन; **धृष्टता**—नीचता, दुष्टता; **दुश्चरित्रा**—बुरे चरित्र वाली स्त्री, **विश्वासघात**—धोखा; **विप्लव**—उत्पात।

शीर्षक की सार्थकता

कहानी का शीर्षक 'संदेह' पूर्णत: सार्थक है। इस कहानी में यही दर्शाया गया है कि परिस्थितियाँ मानव-मन में संदेह पैदा कर देती हैं। मोहनबाबू को संदेह था कि मनोरमा ब्रजकिशोर के साथ मिलकर उसे पागल बनाने का षड्यंत्र कर रही है। रामनिहाल को संदेह था कि मनोरमा उससे प्रेम करती है और उसे स्वयं के बारे में संदेह था कि वह श्यामा से प्रेम करता है। श्यामा रामनिहाल के संदेह दूर कर उसे मनोरमा की सहायता करने भेजती है। इस प्रकार सारी कहानी 'संदेह' को लेकर ही बुनी गई है। अत: यह शीर्षक उपयुक्त है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का उद्देश्य यह है कि हमारी परिस्थितियाँ कभी-कभी संदेह को जन्म देती हैं, यह संदेह वास्तविकता से परे होते हुए भी दिल-दिमाग में घर कर लेते हैं। यह संदेह मानव की मानसिकता को भी प्रभावित करते हैं। कभी-कभी व्यक्ति संदेह के वश में होकर पागल भी हो जाता है। जैसे मोहन बाबू। इस प्रकार के संदेहों को दूर करना आवश्यक है, क्योंकि ऐसे संदेह समस्याओं को ही जन्म देते हैं।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) रामनिहाल—रामनिहाल गृहहीन है वह चतुर है, पर अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण भारत के अलग-अलग प्रदेशों में छोटा-मोटा व्यवसाय और नौकरी करता रहता था। वह बंजारे की तरह अपनी संदूक और थोड़ा-सा सामान लेकर यहाँ-वहाँ घूमता रहता था। कभी-कभी वह सोचता था कि मैं सुखी और संतुष्ट होकर चैन से संसार में किसी एक जगह रहूँगा, लेकिन फिर उसे लगता कि यह एक मृग-मरीचिका थी। उसे यह भी लगता है कि मनुष्य अधिक चतुर होकर भगवान की दया से वंचित हो जाता है। वह स्वयं को अभागा समझता है। जब वह श्यामा के घर आता है, तब उसे लगता है कि उसे घर मिल गया।

अब वह श्यामा के घर से भी जाना चाहता है। मनोरम ने सहायता के लिए उसे जो पत्र लिखे, उन पत्रों से उसे संदेह हो गया कि मनोरमा उससे प्रेम करती हैं। श्यामा को वह शुभचिंतक मानता है और उसे ये भी लगता है है कि वह श्यामा से प्रेम करता है, इस प्रकार वह अस्थिर मन का व्यक्ति है

(ख) श्यामा—श्यामा एक विधवा है। वह सुचरित्रा और बुद्धिमान है। रामनिहाल उसे शुभचिंतक, मित्र और रक्षक समझता था। वह समझदार भी है। उसे क्रोध नहीं आता रामनिहाल के संदह को दूर कर वह उसे मनोरमा की सहायता के लिए भेजती है। वह उसे समझाती है कि प्यार करना बहुत कठिन है। इसके चक्कर में पड़ना भी मत।

(ग) मनोरमा—मनोरमा पतिव्रता है, पर उसके पति मोहन बाबू उस पर संदेह करते हैं। वह सुंदर स्त्री है। वह पति के आरोपों से परेशान होती है और रामनिहाल से कहती है कि मेरी विपत्ति में आप सहायता कीजिएगा। फिर वह मोहन बाबू के पागल होने पर पत्र लिखकर रामनिहाल को सहायता के लिए बुलाती है।

(घ) मोहन बाबू—मोहन बाबू एक भावुक व संवेदनशील व्यक्ति हैं। उनकी स्थिति दयनीय है। उनका दूर का रिश्तेदार ब्रजकिशोर उनकी संपत्ति का प्रबंधक बनने के लिए उन्हें पागल बनाना चाह रहा है। मोहन बाबू को संदह है कि उनकी पत्नी मनोरमा ब्रजकिशोर से मिली हुई है। दीपदान का अर्थ समझाते समय उनकी कल्पना-शीलता भी दिखाई देती है। उनके मन में संदेह की अधिकता इतनी है कि वे पागलपन की ओर बढ़ रहे हैं। वह खुद कहते हैं कि संसार की विश्वासघात की ठोकरों ने मेरे हृदय को विक्षिप्त बना दिया है। अंत में वे संदेह के कारण पागल हो जाते हैं। ❑❑

अध्याय - 8 जामुन का पेड़ (कृष्ण चन्दर)

लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य जगत के महान कहानीकार कृष्ण चन्दर जी का जन्म सन् 1914 में (अविभाजित) पंजाब के गुजरावाला जिले के वजीराबाद नामक गाँव में हुआ। मुंशी प्रेमचन्द के बाद कहानी विधा को नई ऊँचाइयों तक ले जाने वालों में कृष्ण चन्दर का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिनमें एक गिरजा-ए-खंदक, नजारे, जिंदगी का मोड़, अन्नदाता, यूकेलिप्टस की डाली प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

कृष्ण चन्दर ने कहानी के अतिरिक्त उपन्यास, रेडियो तथा फिल्मी नाटकों की भी रचना की। शिकस्त, अन्नदाना, जरागाँव की रानी, कागज की नाव, बाबन पत्ते, मेरी यादों के किनारे आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं। 'गधे की आत्मकथा' नामक व्यंग्यात्मक उपन्यास बहुचर्चित रहा। सन् 1977 में इनका देहान्त हो गया।

पाठ का सार

एक रात तेज आँधी आने के कारण सेक्रेटेरियट के लॉन में लगा जामुन का एक पेड़ गिर गया। सुबह माली ने आकर देखा तो पता चला कि जामुन के पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।

माली से चपरासी, चपरासी से क्लर्क व क्लर्क से सुपरिंटेंडेंट को घटना का पता चला तो सुपरिंटेंडेंट दौड़ता हुआ लॉन में आया। तब माली ने पेड़ के नीचे दबे आदमी की तरफ इशारा किया। आदमी के जिंदा होने का पता चलने पर माली ने पेड़ को हटा कर जल्दी से आदमी को बाहर निकालने का सुझाव दिया। एक साथ बहुत से लोग जैसे ही पेड़ हटाने को तैयार हुए सुपरिंटेंडेंट ने उन्हें रोक अंडर सेक्रेटरी से पूछने गया। अंडर सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी से, डिप्टी सेक्रेटरी से ज्वाइंट सेक्रेटरी होती हुई बात मिनिस्टर के पास पहुँची। इसी तरह आधा दिन बीत गया। दोपहर में कुछ क्लर्कों ने बिना हुकूमत के फैसले का इंतजार किए पेड़ हटाने का निश्चय किया तभी सुपरिंटेंडेंट ने आकर बताया कि यह समस्या कृषि-विभाग के अधीन है अतः उसका निर्णय ही मान्य होगा लेकिन कृषि-विभाग ने इसमें हस्तक्षेप से इंकार कर दिया।

तब फाइल हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट भेजी क्योंकि जामुन का पेड़ फलदार होता है।

उस पेड़ के चारों तरफ पुलिस का पहरा था। रात में किसी तरह माली ने दबे हुए आदमी को दाल भात खिलाया और तसल्ली दी। माली के पूछने पर पता चला कि आदमी लावारिस है।

तीसरे दिन हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट से जवाब आया कि फलदार पेड़ को काटने की अनुमति नहीं दी जा सकती। तब एक आदमी ने पेड़ की जगह आदमी को काटकर निकालने का सुझाव देते हुए कहा कि बाद में आदमी को प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ा जा सकता है।

फाइल मेडिकल डिपार्टमेंट भेजी गयी। वहाँ से आये प्लास्टिक सर्जन ने दबे आदमी की जाँच करके बताया कि ऑपरेशन तो सफल हो जाएगा लेकिन यह आदमी मर जाएगा। इसलिए यह फैसला भी रद्द हो गया। रात में दबे आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते समय माली को पता चला कि वह शायर है। दूसरे दिन दबे आदमी के शायर होने की खबर पूरे शहर में फैल गयी। अब फाइल कल्चरल डिपार्टमेंट भेजी गई। हद तो तब हो गई जब साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी दबे आदमी का इंटरव्यू लेने पहुँचा। इंटरव्यू के दौरान पता चला कि वह प्रसिद्ध कवि और है तथा वह साहित्य अकादमी का मैंबर नहीं है। साहित्य अकादमी ने अपनी गलती सुधारते हुए उसे केन्द्रीय शाखा का मेम्बर चुन लिया। इसके बाद फाइल फॉरेस्ट डिपार्टमेंट से होती विदेश विभाग के पास पहुँची लेकिन दो राज्यों के सम्बन्धों का हवाला देते हुए प्रधानमन्त्री के पास भेज दी गयी। अन्त में शाम पाँच बजे सुपरिंटेंडेंट पेड़ काटने पर प्रधानमन्त्री की अनुमति मिलने की खबर देने स्वयं दबे आदमी के पास पहुँचा, बताया कि तुम्हारी फाइल पूरी हो गयी कल तुम्हें इस संकट से छुटकारा मिल जाएगा लेकिन तब तक दबे आदमी के जीवन की फाइल भी पूर्ण हो चुकी थी वह मर चुका था।

शब्दार्थ

झक्कड़—तेज आँधी; **रुआँसा**—रोनी सूरत; **ताज्जुब**—आश्चर्य; **हुकूमत**—शासन; **हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट**—उद्यान विभाग; **एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट**—कृषि विभाग; **तग़ाफुल**—देरी; **स्कीम**—योजना; **आपत्ति**—ऐतराज; **युक्ति**—उपाय; **नाड़ी**—नस, रग; **इंटरव्यू**—साक्षात्कार; **बन्दोबस्त**—इंतजाम; **वज़ीफा**—सहायता राशि; **पाँत**—पंक्ति; **हुक्म**—आदेश; **ख़ाक**—राख।

मुहावरों के अर्थ

1. छुटकारा दिलाना—मुक्ति दिलाना, **2. हाथ मलना**—पछताना, **3. जीवन की फाइल पूर्ण होना**—मृत्यु होना।

शीर्षक की सार्थकता

यह कहानी सेक्रेटेरियट के लॉन में स्थित जामुन के पेड़ के गिरने से प्रारंभ होती है। उसके नीचे एक आदमी दब जाता है। वहाँ एकत्रित क्लर्क पहले तो जामुन के फलदार पेड़ के गिरने का अफसोस करते हैं। जब माली दबे हुए आदमी की तरफ इशारा करता है, तब वे पेड़ हटाने की सोचते हैं, पर जब तक संदेश आता है कि व्यापार विभाग इसका निर्णय नहीं कर सकता, फाइल कृषि विभाग भेजी जा रही है। जामुन के पेड़ को हटाने से संबंधित फाइल कृषि विभाग से हार्टिकल्चर, फिर मेडिकल डिपार्टमेंट से होती हुई कल्चरल डिपार्टमेंट, फॉरेस्ट डिपार्टमेंट, विदेश विभाग जाती है। फिर प्रधानमंत्री के पास जाती है, जब तक प्रधानमंत्री पेड़ काटने का हुक्म देते हैं, तब तक दबा हुआ आदमी मर जाता है। इस प्रकार कहानी का ताना-बाना जामुन के पेड़ के इर्द-गिर्द ही बुना गया है, अतः शीर्षक 'जामुन का पेड़' पूर्णतः सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी सरकारी काम-काज पर करारा व्यंग्य है। सरकारी विभाग अपनी जिम्मेदारी अन्य विभागों पर डालकर अपनी जिम्मेदारी से बचने का पूरा प्रयास करते हैं। किसी भी समस्या का हल आसानी से नहीं निकल पाता। जिस बात का निर्णय तुरंत हो सकता है, उसमें भी बहुत विलंब हो जाता है। निर्णय आने तक इतनी हानि हो चुकी होती है, कि उसका कोई महत्व ही नहीं रह जाता। यही कारण है कि आम जनता सरकारी विभागों से घबराती है। सरकारी अधिकारी की नज़र मरते हुए आदमी को बचाने की ओर भी नहीं जा पाती। इसी समस्या पर प्रहार करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

❑❑

अध्याय - 9 भेड़ें और भेड़िए (हरिशंकर परसाई)

लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमनिया नामक गाँव में सन् 1922 में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए नागपुर आये तथा वहाँ हिन्दी विषय से एम० ए० की उपाधि प्राप्त कर अध्यापन कार्य में लग गए लेकिन बाद में साहित्य सृजन प्रारम्भ किया। इन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया लेकिन आर्थिक समस्याओं के चलते उसे बन्द करना पड़ा।

परसाई जी ने सामाजिक व राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार व कुरीतियों पर करारा व्यंग्य किया। वे अपनी व्यंग्य रचनाओं से लोगों को हँसने पर मजबूर कर देते। इन्होंने हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव (कहानी संग्रह): रानी नागफनी की कहानी तट की खोज, ज्वाला और जल (उपन्यास): तिरछी रेखाएँ (संस्मरण): तब की बात और थी, भूत के पॉव पीछे, बेइमानी परत, सदाचार का ताबीज, शिकायत मुझे भी (निबन्ध) तथा कई व्यंग्य संग्रहों की रचना की। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

10 अगस्त 1995 को इनका देहान्त हो गया।

पाठ का सार

एक बार वन के पशुओं ने वन प्रदेश में प्रजातन्त्र की स्थापना करने का निश्चय किया। पशु समाज में सुख समृद्धि और सुरक्षा की बात सोचकर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी उन्हें लगा कि इस क्रांतिकारी परिवर्तन से स्वर्ण युग की शुरुआत होगी।

उस वन प्रदेश में बहुत भी भेड़ें जो नियाहत नेक, ईमानदार, कोमला, विनयी, दयालु, निर्दोष थीं। प्रजातन्त्र की स्थापना से वे बेहद खुश थीं वहीं भेड़िए इस प्रजातन्त्र से परेशान थे। क्योंकि भेड़ों की संख्या अधिक होने से पंचायत में उनका बहुमत होगा और अगर उन्होंने किसी पशु के दूसरे को न मारने का कानून बना दिया तो हम क्या खाएँगे? यह सोच-सोच कर भेड़ियों का दिल बैठने लगा।

भेड़िए को परेशान देख एक बूढ़े सियार ने कारण पूछा तो भेड़ियों ने बताया कि वन प्रदेश में नई सरकार बनने के बाद सूखी हड्डियाँ भी चबाने को नहीं मिलेंगी। हमारे पास भागने के अलावा कोई उपाय नहीं लेकिन भाग कर जायें कहाँ?

तब बूढ़े सियार ने सर्कस में भर्ती होने का सुझाव दिया लेकिन भेड़िए ने वहाँ शेर और रीछ के होते उन्हें न पूछने की बात कही। तो सियार ने अजायबघर जाने को कहा। भेड़िए के इन्कार करने पर बूढ़े सियार ने पंचायत में भेड़ियों को बहुमत दिलाने के लिए योजना बनाई और भेड़िए से कहा कि आपको मेरी बात माननी होगी।

अगले दिन बूढ़ा सियार तीन रंगे सियारों के साथ भेड़िए से मिला। उसने भेड़िए के माथे पर तिलक लगाकर गले में कंठी पहनाई और मुँह में घास के तिनके खोंस संत बना दिया। उसने भेड़िए से मुँह बन्द रखने, गर्दन झुकाने तथा भेड़ों को न खाने की सख्त हिदायत दी और भेड़ों के झुंड के पास चले। बूढ़े सियार द्वारा संत के आने की अफवाह सुन भेड़ें संत के दर्शन के लिए इकट्ठी हुईं थीं लेकिन भेड़िए को देखते ही भागने लगीं।

तुरन्त बूढ़े सियार ने उन्हे रोककर कहा कि भेड़िए से डरने की आवश्यकता नहीं है। हृदय परिवर्तन हो जाने से भेड़िया राजा संत हो गए है, उन्होंने हिंसा छोड़ अपना जीवन जीवमात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है। भेड़िया जाति द्वारा भेड़ों पर किए गए अत्याचारों से वे लज्जित हैं। वे आपकी सेवा करके प्रायश्चित करना चाहते हैं। आप उन्हें अपना भाई समझें। इसके बाद बूढ़ा सियार रंगे सियारों का स्वर्ग के देवता के रूप में परिचय कराता है। पीले, नीले व हरे रंग में रंगे सियार योजनानुसार भेड़ों को बड़ी चालाकी से अपनी बातों के जाल में फंसाते हुए भेड़िया का चुनाव प्रचार करते हैं और अपने हित की रक्षा के लिए बलवान भेड़िया को पंचायत में चुनकर भेजने के लिए भेड़ों को समझाते हैं।

सब जगह भेड़ियों का इस तरह प्रचार करने से भेड़ों को विश्वास हो गया कि भेड़िए से बड़ा उनका हित-चिन्तक व हित-रक्षक दूसरा कोई नहीं। पंचायत के चुनाव में भेड़ें भेड़िए को अपनी रक्षा के लिए चुनती हैं। भेड़िए पंचायत में उनके प्रतिनिधि बन जाते है, बूढ़े सियार की योजना सफल होती है। बहुमत पाते ही भेड़िए पहला कानून बनाते हैं कि हर भेड़िए को सबेरे नाश्ते में भेड़ का एक मुलायम बच्चा दोपहर को पूरी भेड़ और शाम को आधी भेड़ खाने के लिए दी जाए।

शब्दार्थ

निहायत—अत्यंत; **प्रजातन्त्र**—लोकतन्त्र; **दुम**—पूँछ; **मेघ**—बादल; **खिन्न**—दु:खी, परेशान; **शपथ**—कसम; **ख्याल**—ध्यान; **सहस्रों**—हजारों; **प्रायश्चित**—पश्चाताप;**अन्त्येष्टि क्रिया**—दाह-संस्कार; **सर्वस्व**—सब कुछ; **मुखारविंद**— सुन्दर मुख; **भावातिरेक**—भावों की अधिकता; **कोरस**—समूह गान; **सर्वत्र**— हर जगह; **लक्ष-लक्ष**—लाखों; **अवरुद्ध**—रुक जाना।

मुहावरों के अर्थ

1. कोई चारा न होना—कोई उपाय न होना, **2. आसमानी बातें करना**—बड़ी-बड़ी बातें करना, **3. दाँत निपोरना**—दीनतापूर्वक कहना।

शीर्षक की सार्थकता

कहानी में लेखक ने भेड़ों के माध्यम से आम जनता, भेड़ियों के माध्यम से धोखेबाज और ढोंगी नेताओं तथा सितारों के माध्यम से नेताओं के आगे-पीछे घूमने वाले स्वार्थी व्यक्तियों के बारे में बताया है। कहानी का सारा ताना-बाना भेड़ और भेड़ियों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए प्रतीक रूप में बुना गया है। अत: शीर्षक 'भेड़ें और भेड़िये' सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य प्रजातंत्र में मौजूद ख़ामियों पर प्रकाश डालना है। कितनी आसानी से धोखेबाज और ढोंगी नेता सीधी-सादी जनता को बहलाकर उनका शोषण करते हैं। साथ ही विचारक, पत्रकार और धर्मगुरु जो जनता का साथ देने, उन्हें सही दिशा-निर्देश देने के लिए हैं, वे भी स्वार्थवश इन ढोंगी का साथ देते हैं। सियारों को इन्हीं के प्रतीक रूप में पेश किया गया है। इस कहानी का उद्देश्य प्रजातंत्र की पोल खोलना है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) भेड़ें—'भेड़ें' सीधी-सादी जनता का प्रतीक हैं। भेड़ें नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु, निर्दोष होती हैं। ऐसी ही जनता होती है। इन सारी विशेषताओं के बाद भी वे बहकावे में आ जाती हैं। वे सोचती हैं कि हम अपने प्रतिनिधियों को जिताकर अपने लाभ के लिए कानून बनवाएँगे, लेकिन बहकावे में आकर ढोंगी नेता को ही चुन लेती हैं और उन्हें अपने निर्णय पर पछतावा ही होता है, क्योंकि वादे के अनुसार कानून बनाए नहीं जाते हैं।

(ख) भेड़िये—भेड़िए ऐसे नेताओं का प्रतीक हैं, जो विभिन्न हथकंडे अपनाकर अपने चमचों के माध्यम से जनता को बेवकूफ बनाकर वोट पा लेते हैं, लेकिन पद प्राप्त करते ही अपने लाभ के लिए कानून बनाते हैं। जनता के सामने वे स्वयं का असली रूप प्रकट ही नहीं होने देते।

(ग) सियार—सियार अवसरवादियों का प्रतीक हैं, जो नेताओं के आगे-पीछे घूमते हुए उनकी हाँ में हाँ मिलाते हुए अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। रंगे सियार लेखक, पत्रकार व धर्मगुरु के प्रतीक हैं, जो पथभ्रष्ट हो गये हैं। जिन्हें जनता का पथ-प्रदर्शन करना चाहिए वे जनता में राजनीतिज्ञों का भ्रामक प्रचार करते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

❑❑

अध्याय – 10 दो कलाकार (मन्नू भंडारी)

लेखिका परिचय

हिन्दी की आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में 3 अप्रैल 1931 ई० को हुआ। इनके बचपन का नाम महेन्द्र कुमारी था।

राजेन्द्र यादव के साथ लिखा गया उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' आधुनिकता पसंद पढ़े-लिखे लोगों की दुख भरी प्रेमगाथा के रूप में चर्चित रहा। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है :

कहानी संग्रह—एक प्लेट सैलाब, में हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास—महाभोज, एक इंच मुस्कान, आपका बंटी, कलवा।

नाटक—बिना दीवारों का घर, महाभोज का नाट्य रूपान्तरण।

आत्मकथा—एक कहानी यह भी।

1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार पाने वाली फिल्म रजनीगंधा इनकी कहानी 'यही सच है' पर आधारित थी। इन्हें शिखर सम्मान, व्यास सम्मान तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

9 मार्च 2015 को मन्नू भंडारी का निधन हो गया।

पाठ का सार

मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'दो कलाकार' कहानी कला के वास्तविक अर्थ को ओर संकेत करती है कि कलाकार का कार्य समाज के रंगों को चित्रित करना ही नहीं वरन् दीन-दुखियों के जीवन में खुशियों के रंग भरना भी है।

यह कहानी ऐसी दो लड़कियों की है जिनका कार्य क्षेत्र व सोच अगल-अलग होते हुए भी उनमें घनिष्ठ मित्रता है। अरुणा व चित्रा हॉस्टल में साथ रहकर एक ही कॉलेज में पढ़ती हैं। चित्रा एक चित्रकार है वह हर घड़ी हर जगह अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।

उसे समाज से कोई सरोकार नहीं है जबकि उसकी सहेली अरुणा बस्ती के निर्धन बच्चों को पढ़ाने, बाढ़ पीडितों की मदद जैसे समाज-सेवा के कार्यों को अपने जीवन का ध्येय बना चुकी है।

अरुणा को चित्रा के चित्र घनचक्कर लगते हैं वह उससे रंग और तूलिकाओं में अपनी जिन्दगी बरबाद न कर दो-चार जिन्दगियों को संवारने को कहती है वहीं चित्रा अरुणा से समाज सेवा के कार्य छोड़ पढ़ाई में ध्यान देने को कहती है।

एक दिन चित्रा के पिता का पत्र आता है वह अमीर पिता की इकलौती संतान हैं। उसके पिता चित्रा को कोर्स समाप्त कर विदेश जाने की अनुमति दे देते हैं।

तेज मूसलाधार बारिश के कारण बाढ़ आ जाती है। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ने की बात जान चित्रा उनके लिए चंदा इकट्ठा करती है और स्वयं सेवकों के दल के साथ बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए जाती है। जब वह पंद्रह दिन बाद लौटती है तो उसकी हालत काफी खस्ता हो चुकी थी। लौटने पर उसे चित्रा के एक सप्ताह बाद विदेश जाने की बात पता चलती है। छः साल साथ रहने के बाद चित्रा से अलग होने की बात सुन अरुणा उदास हो जाती है।

जिस दिन चित्रा को जाना था चित्रा सबसे मिलने के बाद गुरुजी का आशीर्वाद लेने गयी लेकिन काफी देर तक नहीं नहीं लौटी। चित्रा की गाड़ी का समय हो रहा था। इसलिए अरुणा को चिंता होने लगी। तभी चित्रा आ गयी उसने देरी होने का कारण बताते हुए कहा कि रास्ते में एक पेड़ के नीचे एक भिखारिन के मृत शरीर से लिपटकर उसके दो बच्चे रो रहे थे। उस दृश्य का एक स्केच बनाने लग गयी थी। यह सुन अरुणा कहीं चली गयी। चित्रा को स्टेशन छोड़ने भी नहीं आयी।

विदेश में चित्रा मेहनत व लगन से शोहरत की ऊँचाइयों पर पहुँच गयी। अनेक प्रतियोगिताओं में मरी भिखारिन के 'अनाथ' शीर्षक वाले चित्र पर उसके चित्रों की एक प्रदर्शनी लगी जिसके उद्घाटन के लिए आयी चित्रा की भेंट अरुणा से हुई। अरुणा ने अपने दो बच्चों व पति से उसे मिलवाया। चित्रा के जोर देने पर अरुणा ने गरीब भिखारिन के दोनों अनाथ बच्चों को गोद लेने की बात बतायी जिसे सुन चित्रा अरुणा की प्रशंसा में शब्दहीन हो गयी।

शब्दार्थ

घनचक्कर—चक्कर में डालने वाला; **इकलौती**—एक मात्र संतान; **निरर्थक**—बेकार, व्यर्थ; **तूलिका**—रंग करने का ब्रश; **इम्तिहान**—परीक्षा; **उल्लास**—प्रसन्नता; **शोहरत**—प्रसिद्धि; **मूसलाधार वर्षा** —लगातार तेज वर्षा; **ओझल**—गायब; **विस्मय**—आश्चर्य; **विराट**—बहुत बड़ा।

मुहावरों के अर्थ

1. आँखें गढ़ाना—एकटक देखना, ध्यान से देखना, **2. पानी में बहाना**—व्यर्थ करना, **3. आँख से ओझल होना**—सामने न होना, दूर जाना।

शीर्षक की सार्थकता

कहानी में दो सहेलियाँ हैं—चित्रा और अरुणा। चित्रा चित्रकार है तथा अरुणा समाज सेविका। लेखिका ने चित्रकारिता और समाज सेवा दोनों को कला की श्रेणी में रखा है और समाज सेवा को सच्ची कला बताया है। इस प्रकार यह कहानी दो कलाकारों पर आधारित है, अत: इसका शीर्षक 'दो कलाकार' सार्थक है।

कहानी का उद्देश्य

कहानी का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि सच्ची कला व सच्चे कलाकार क्या हैं। कलाएँ कई होती हैं—चित्रकला, मूर्तिकला आदि। इन कलाओं के द्वारा हम बेजान, निर्जीव चित्रों, मूर्तियों को सजीव की तरह बनाते हैं, पर बेजान होते सजीव लोगों की तरफ ध्यान नहीं देते, यदि हम मौत से लड़ते लोगों को सहारा दें, दुखियों की सहायता करें, तो हम सच्चे कलाकार हो सकते हैं। जिस प्रकार कहानी में अरुणा है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(क) अरुणा—अरुणा एक समाज सेविका है, जो चित्रा के साथ कॉलेज में पढ़ती है और हॉस्टल के एक ही कमरे में दोनों रहती हैं। दोनों छह साल से साथ में रह रही हैं। अरुणा अपनी पढ़ाई से समय निकालकर बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ाती है। अरुणा भावुक व संवेदनशील है। बाढ़ आने पर, परीक्षा पास होने पर भी वह बाढ़ पीढ़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करती है। स्वयंसेवकों के दल के साथ प्रिंसिपल की अनुमति लेकर बाढ़-पीढ़ितों की मदद के लिए जाती है। जब चित्रा भिखारिन की मृत्यु और उसके बच्चों के बारे में बताती है, तो वह उनको गोद ले लेती है। उसकी सगाई मनोज नामक युवक से हो गई है।

(ख) चित्रा—चित्रा धनी पिता की इकलौती बिटिया है। वह एक चित्रकार है और उसके जीवन का उद्देश्य है कि वह एक विश्व प्रसिद्ध चित्रकार बने। वह अरुणा की अच्छी मित्र है, पर उसे अरुणा की समाज-सेवा समझ नहीं आती। उसे हर घटना में अपने चित्र के लिए आइडिया ढूँढना होता है। अगर किसी घटना में उसके चित्रों के लिए आइडिया नहीं, तो उसकी नज़र में उसका कोई महत्व नहीं। उसे भावहीन, संवेदनाहीन भी कहा जा सकता है। एक भिखारिन की मृत्यु पर उसने चित्र बनाया, पर उसके बच्चों की सहायता नहीं की। कहानी के अंत में वह विश्व प्रसिद्ध चित्रकार तो बन गई, पर अरुणा के आगे वह नतमस्तक हो गई, क्योंकि सच्ची कला की परख उसे हो गई।

❑❑

साहित्य सागर (पद्य भाग)

अध्याय - 1 साखी (कबीरदास)

कवि परिचय

कबीर भक्तिकालीन निर्गुण काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। वे एक महान कवि, भक्त और सच्चे समाज सुधारक थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म सन् 1398 ई. में काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ। नीरू और नीमा नामक संतानहीन जुलाहा दम्पति ने कबीरदास का पालन पोषण किया। कबीर ने प्रसिद्ध वैष्णव संत स्वामी रामानन्द से दीक्षा ली।

कबीर पढ़े-लिखे न होने के साथ मस्तमौला, निर्भीक व विद्रोही थे तथा बाहरी आडम्बरों के विरोधी थे। इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया तो दोनों सम्प्रदायों की रूढ़ियों व धार्मिक कुरीतियों का विरोध किया। ये राम-रहीम की एकता के पक्षपाती थे।

कबीरदास की एक मात्र प्रामाणिक रचना बीजक है। इसके तीन भाग हैं—

साखी, सबद और रमैनी। इनके कुछ पद्य गुरु ग्रन्थ साहिब में भी संकलित हैं।

कबीरदास जी की भाषा को सधुक्कड़ी या 'पंचमेल खिचड़ी' भी कहा जाता है। वे अपनी बात को साफ और दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे। इसलिए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

पाठ का सार

इस पाठ में कबीरदास जी की पाँच साखियाँ संकलित की गई है। जिसका भावार्थ इस प्रकार है।

(1) पहली साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा होता है। यदि प्रभु और गुरु दोनों ही मेरे समक्ष खड़े हों तो यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि दोनों में प्रथम पूजनीय कौन है?

गुरु ने ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया अत: पहले गुरु के चरण ही स्पर्श करने चाहिए।

(2) कबीरदास जी हरि प्राप्ति के मार्ग में अहंकार को सबसे बड़ी बाधा मानते हुए कहते हैं कि जब तक मेरे हृदय में हरि का आगमन हुआ तो अहंकार नहीं रहा। यह प्रेम रूपी गली इतनी तंग है कि इसमें अहंकार व भगवान दोनों एक साथ नहीं रह सकते। अत: अहंकार को त्याग कर ही ईश्वर को पाया जा सकता है।

(3) तीसरी साखी में कबीरदास जी ने ईश्वर प्राप्ति हेतु किए जाने वाले बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हुए कहा है कि कंकड़-पत्थर इकट्ठा करके मस्जिद बनाकर और उस पर चढ़कर मौलवी तेज आवाज में अजान देता है। क्या खुदा बहरा है जो मन में की गई शान्त प्रार्थनाओं को नहीं सुन पाए। अत: तेज आवाज में चिल्लाना व्यर्थ है।

(4) इस साखी में कबीरदास जी मूर्तिपूजा का मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि यदि पत्थर की मूर्ति को पूजने से भगवान की प्राप्ति होती है तो मैं पहाड़ पूजने को तैयार हूँ।

इससे वो चक्की प्रशंसनीय है जिससे अनाज पीसकर मनुष्य की भूख शांत हो जाती है। अत: भगवान की प्राप्ति पत्थरों को पूजने से नहीं हो सकती है।

(5) पाँचवीं साखी में ईश्वर की महिमा और गुणों का वर्णन करते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि यदि सातों समुद्रों की स्याही बना लें, धरती के सभी वनों की लकड़ी की कलम बना लें और पूरी धरती का प्रयोग कागज के रूप में करें तब भी भगवान के गुणों का बखान कर पाना मुश्किल है क्योंकि ईश्वर के अपार गुण हैं।

शब्दार्थ

गोबिन्द—भगवान; **दोऊ**—दोनों; **काके**—किसके; **साँकरी**— तंग; **मैं**—अहंकार; **कांकर**—कंकड़; **जोरि कै**—इकट्ठा कर; **पाहन**—पत्थर; **पहार**—पहाड़; **समंद**—समुद्र; **बनराय**— जंगल; **मसि**—स्याही; **कागद**—कागज, **लेखनि**—कलम।

❑❑

अध्याय - 2 गिरिधर की कुण्डलियाँ (गिरिधर कविराय)

कवि परिचय

श्री शिवसिंह के अनुसार गिरिधर कविराय का जन्म संवत् 1770 में हुआ।

इनके जीवन के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। संवत् 1800 के बाद ही इन्होंने कविता लिखनी आरम्भ की होंगी।

इन्होंने नीति, वैराग्य और अध्यात्म पर आधारित कविताएँ लिखीं। जीवन के व्यावहारिक पक्ष को प्रभावशाली ढंग से अपने काव्य में वर्णित किया।

ये लोकप्रिय कवि थे। नीति सम्बन्धी कुंडलियाँ सरल, सहज, व्यावहारिक व सीधी सादी भाषा में गंभीर और नीति-परक तथ्यों से पूर्ण होने के कारण लोकप्रिय हो गयीं। इन्होंने अपने समस्त काव्य की रचना कुंडलियों में ही की।

गिरिधर कविराय ग्रन्थावली में इनकी पाँच सौ से अधिक कुंडलियाँ संगृहीत हैं।

पाठ का सार

कुण्डलियाँ शीर्षक पाठ में गिरधर कविराय की सात कुंडलियाँ संगृहित की गई हैं।

(1) पहली कुंडली में लाठी के महत्व और उपयोगिता की ओर संकेत किया है। लाठी हमारे बहुत काम आती है। यदि कहीं गहरी नदी या नाला आता है तो यह पानी की गहराई आदि को नापकर हमारी रक्षा करती है। यदि कोई दुष्ट कुत्ता हम पर झपटे तब ऐसी स्थिति में भी लाठी ही हमारा बचाव व रक्षा करती है। किसी अहंकारी दुश्मन के सामने आ जाने पर लाठी से उसको पराजित कर उसका अहंकार दूर किया जा सकता है। गिरधर कविराय कहते हैं कि लोगों सुनो सब हथियारों को छोड़कर अपने हाथ में लाठी रखो। इसके उचित प्रयोग से हम स्वयं अपनी रक्षा कर सकते हैं।

(2) दूसरी कुंडली में कवि ने कम्बल के लाभ व उपयोगिता की चर्चा की है। कम्बल की कीमत कम होने के बावजूद यह बहुत काम में आने वाली चीज है।

कहीं पानी आ जाने पर मलमल वाफ्ता के कम्बल में बाँधा जा सकता है कोई बाधा आ जाने पर इसके उपयोग से उसे दूर भी किया जा सकता है। रात के समय कम्बल का उपयोग बिछाने में किया जा सकता है। कवि कहते हैं कि कम कीमत में मिलने वाला कम्बल हमारा मान सम्मान बढ़ाता है इसलिए इसे सदैव साथ रखना चाहिए।

(3) तीसरी कुंडली में गुणों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि इस संसार में गुणों की कद्र करने वाले हजारों लोग हैं लेकिन गुणहीन को कोई नहीं पूछता जैसे कौआ, कोयल एक ही रंग के होते हैं पर कोयल अपने मधुर स्वर के कारण सभी को प्रिय होती है। सब उसकी प्रशंसा करते हैं जबकि कौआ अपनी कर्कश आवाज के कारण सबकी घृणा का पात्र होता है। अत: गिरधर कवि कहते हैं कि संसार में बिना गुणों के कोई महत्व नहीं है जबकि गुणी व्यक्ति अपने गुणों के बल पर सम्माननीय होता है।

(4) कवि ने स्वार्थ से भरे संसार पर व्यंग्य करते हुए कहा है इस संसार में केवल मतलब के व्यवहार का प्रचलन है। जब तक किसी व्यक्ति के पास धन सम्पत्ति रहती है तब तक उससे सभी लोग मित्रता करना चाहते है। हर समय वे साथ लगे रहते हैं लेकिन जब व्यक्ति के पास पैसा नहीं रहता तो वह मित्र मुँह से भी नहीं बोलते अर्थात् साथ छोड़ देते हैं। कविराय जी कहते हैं कि संसार का तो यही नियम/ परम्परा है। यहाँ नि:स्वार्थ प्रेम करने वाला व्यक्ति का मिलना दुर्लभ है।

(5) पाँचवी कुंडली में कवि धनी व बलवान व्यक्ति के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहता है कि चाहे तेज धूप में सोकर अपना दिन किसी तरह व्यतीत करना पड़े लेकिन पतले पेड़ के नीचे विश्राम नहीं करना चाहिए।

वह अवश्य ही एक दिन धोखा देगा क्योंकि जिस दिन जोर की हवा चली यह जड़ सहित उखड़ जाएगा।

गिरधर कविराय जी कहते हैं कि हमेशा मोटे पेड़ की छाया में बैठना चाहिए। ताकि तेज हवा से अगर उसकी पत्तियाँ झड़ भी जाएँ तो भी छाया बनी रहेगी अर्थात् कमजोर व्यक्ति की अपेक्षा धनी व बलवान से ही सहायता माँगनी चाहिए।

(6) इस कुंडली में कवि नीति की सीख देते हुए कहते हैं कि नाव में पानी के बढ़ने और घर में धन सम्पदा के बढ़ने पर उसे दोनों हाथों से बाहर निकालना चाहिए अन्यथा डूबने का खतरा रहता है अर्थात् अपनी अतुल सम्पदा को परोपकार व सद्कार्यों में खर्च करना चाहिए।

दूसरों की मदद के लिए सर्वस्व अर्पण करने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए और प्रभु के नाम का स्मरण करना चाहिए। कविराय जी कहते हैं कि विद्वानों के मतानुसार सन्मार्ग का अनुसरण करते हुए अपनी मर्यादा बनाए रखनी चाहिए।

(7) सातवीं कुंडली में कवि नीतिगत आचरण का सुझाव देते हुए कहते हैं कि राजा के दरबार में उचित समय पर ही जाना चाहिए। जहाँ किसी के द्वारा उठा दिए जाने की सम्भावना हो वहाँ कभी नहीं बैठना चाहिए।

शान्ति से वहाँ बैठना चाहिए। किसी सभा में ठहाका मारकर हँसना नहीं चाहिए तथा किसी के द्वारा पूछे जाने पर बात का उपयुक्त जवाब देना चाहिए। अन्यथा हमारा आचरण निन्दनीय माना जाएगा। गिरधर जी कहते हैं कि बिना आतुरता दिखाए अपने काम समयानुसार करने चाहिए कहीं ऐसा न हो कि राजा क्रोधित हो जाए।

शब्दार्थ

नारी—नाला;**छाँडि**—छोड़कर; **कमरी**—कम्बल; **बकुचा**—छोटी गठरी; **मोट**—मोटा, साधारण; **झारि**—झाड़कर; **दमरी**—दाम, मूल्य; **आड़े**—बाधा; **कागा**—कौआ; **सहस**—हजार; **अपावन**—अपवित्र; **कोकिला**—कोयल; **बेगरजी**—बिना गरज के, बिना मतलब के; **बिरला**—दुर्लभ; **पतरो**—पतला; **लटपट**—विपत्ति; **धामे**—धूप में; **बयारि**—हवा; **गहिए**—पकड़िए; **उलीचिए**—बाहर निकालिए; **पानी**—जल; **मान**—सम्मान **अनबोल**—बिना बोले; **हट्टाय**—ठहाका मारकर हँसना; **अनखै हैं**—नाराज होना।

❑❑

अध्याय – 3 स्वर्ग बना सकते हैं (रामधारी सिहं 'दिनकर')

कवि परिचय

हिन्दी के सुविख्यात कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 दिसम्बर 1908 को सिमरिया, मंगेर (बिहार) में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ। इनके पिता रवि सिंह और माता मनरूपदेवी थीं। दो वर्ष की आयु में ही पिता का साया सिर से उठ गया।

विधवा माँ ने इनका और इनके भाई-बहनों का पालन-पोषण किया।

दिनकर का बचपन व कैशोर्य देहात में बीता जिसके कारण प्रकृति की सुषमा का प्रभाव दिनकर के मन में बस गया। मैट्रिक की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर इन्हें 'भूदेव स्वर्णपदक' मिला।

सन् 1950 में ये एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद बनी तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया।

'दिनकर' जी की छायावादोत्तर काल के कवि हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों प्रकार की रचनाएँ लिखीं, जिनमें कुरुक्षेत्र, रेणुका, हुंकार, रसवंती, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा आदि प्रमुख काव्य रचनाएँ, तथा 'भारतीय संस्कृति के चार अध्याय' इनकी प्रमुख गद्य रचना है। 'रेण ुका' नामक काव्य पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला।

दिनकर जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। राष्ट्र कवि के नाम प्रसिद्ध हुए दिनकर जी आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। 24 अप्रैल, 1974 इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ 'स्वर्ग बना सकते है' कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना 'कुरुक्षेत्र का ही अंश है जिसने भीष्म पितामह युधिष्ठिर को अंतिम उपदेश स्वरूप ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हे धर्मराज युधिष्ठिर यह धरती किसी के द्वारा खरीदी हुई दासी नहीं है। इस पर यहाँ जन्मे सभी व्यक्तियों का समान अधिकार है। सभी इसके निवासी हैं। सभी को इस धरती पर समान अधिकार व अवसर मिलेगा अर्थात् सभी को समान प्रकार व वायु मिलेगी तभी विकास सतत् रूप से होगा और अपनी सुरक्षा तथा अधिकारों के प्रति शंका नहीं रहेगी।

कवि के अनुसार भीष्म कहते हैं कि मानव के विकास की राह में अनेक विघ्न-बाधाएँ हैं बाधाओं के पर्वत मानवता के मार्ग में अड़े हुए हैं जिसके कारण मनुष्य प्रगति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पा रहा है। जब तक जब तक मनुष्य को न्यायोचित सुख प्राप्त नहीं होगा तब तक न तो मनुष्य को इस धरती पर चैन मिलेगा और न ही संसार में अमन कायम हो पायेगा।

वे आगे कहते हैं कि जब तक सभी मनुष्यों का सुख भाग समान नहीं होगा, उनमें समानता का भाव न होगा तब तक इस संसार में 'शोरगुल और संघर्ष निरन्तर जारी रहेगा। लेकिन समानता के आदर्श को भूलकर वह आपस में ही शंका व भय का वातावरण बना स्वार्थ पूर्ति में लगा हुआ है तथा अपने ही लिए वस्तुओं का संग्रह कर रहा है।

ईश्वर ने इस धरती पर इतने सुख के साधन बिखेरे हैं अर्थात् उपहार दिए हैं कि उन सभी सुखों का उपभोग करने के लिए पर्याप्त संख्या में मनुष्य भी इस संसार में नहीं हैं।

वे सुख-सुविधाएँ इतनी अधिक मात्रा में हैं कि सभी लोग संतुष्ट व सुखी हो सकते हैं। लेकिन ऐसा तभी सम्भव है जब उनमें समानता व प्रेम का भाव हो। इस तरह अपने अथक परिश्रम के बल पर वह आसानी से इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

शब्दार्थ

क्रीत –खरीदी हुई; **समीरण**–हवा; **मुक्त**–स्वतन्त्र; **विकास**–प्रगति; **भव**–संसार; **सम**–समान; **शमित**–शांत; **कोलाहल**–शोर; **विकीर्ण**–बिखरे हुए; **संचय**–एकत्र करना; **तुष्ट**–प्रसन्न।

शीर्षक की सार्थकता

रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित कविता का शीर्षक 'स्वर्ग बना सकते हैं' सटीक व प्रेरणास्पद है। कवि ने बताया है यदि हम सभी देशवासी मिलकर प्रयास करें तो अपने देश, अपनी मातृभूमि को भी समता व प्रेम के आधार पर स्वर्ग के समान खुशहाल व आनंददायी बना सकते हैं। अतः यह शीर्षक पूर्णतया उचित व प्रासंगिक है। ❑❑

अध्याय - 4 वह जन्मभूमि मेरी (सोहनलाल द्विवेदी)

कवि परिचय

हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फरवरी 1905 में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के बिन्दकी गाँव में हुआ। इन्होंने हिन्दी विषय में एम० ए० करने के साथ संस्कृत का भी अध्ययन किया। सन् 1938 से 1942 तक ये दैनिक राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' के लखनऊ से संपादन का कार्य करते रहे।

भैरवी, सेवाग्राम, जय भारत जय आदि में इनकी कविताएँ संकलित हैं। इन्होंने ऐतिहासिक आधार पर 'कुणाल' नामक प्रबन्ध काव्य की भी रचना की। वासवदत्ता और विषपान इनके प्रसिद्ध आख्यान काव्य हैं। दूध बताशा, बालभारती, बाँसुरी और झरना, बच्चों के बापू, शिशु भारती, हँसो-हँसाओ, चाचा नेहरू आदि बच्चों के लिए उपयोगी काव्य रचनाएँ भी कीं।

द्विवेजी जी की गाँधीवाद से प्रेरित रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि हैं। राष्ट्र धर्म उनके काव्य का मूलमन्त्र है। उनके काव्य में ग्राम सुधार, हरिजन-उद्धार, स्वेदशाभिमान और समाज सुधार का प्रेरक स्वर मुखरित हुआ।

1 मार्च, सन् 1988 को द्विवेदी जी का निधन हो गया।

पाठ का सार

सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित 'वह जन्म भूमि मेरी' शीर्षक देश प्रेम से परिपूर्ण है। इसमें कवि ने अपनी मातृभूमि भारत भूमि की भौगोलिक व प्राकृतिक सुन्दरता कर गुणगान करते हुए उसे अनेक विशेषणों से सम्बोधित किया है।

कवि कहता है कि भारत भूमि के उत्तर दिशा में एक प्रहरी के रूप में ऊँचा खड़ा हिमालय ऐसा लग रहा है मानो आकाश को चूम रहा है तो दक्षिण दिशा में हिलोरें भरता समुद्र मेरी मातृभूमि के चरण चूमता है। गंगा, यमुना, त्रिवेणी आदि पावन नदियाँ यहाँ लहराती हुई बहती हैं और मेरी मातृभूमि को हरा भरा बनाती धीरे-धीरे बहती हुई इस धरती को उल्लसित कर रही हैं। इनकी छटा निराली है। यह भारत भूमि पुण्यभूमि और स्वर्ण भूमि है और यही मेरी मातृभूमि और जन्मभूमि है।

कवि आगे कहता है कि भारत भूमि की पहाड़ियों से अनेक झरने बहते हैं तथा यहाँ की झाड़ियों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं। आम के पेड़ों की शाखाओं पर कोयल मधुर स्वर में कूकती है साथ ही यहाँ पर बहती शीतल सुगन्धित पवन तन और मन को प्रसन्नता से भर देती है अर्थात् भारत भूमि के वातावरण को आनंदित कर इसकी सुन्दरता बढ़ा देती है। ऐसी भारत भूमि की सेवा करना ही हमारा धर्म और कर्म है। अत: यही मेरी धर्मभूमि है और कर्मभूमि भी।

कवि भारतभूमि को महापुरुषों की जन्मभूमि बताते हुए कहता है कि यहाँ ही रघुकुल शिरोमणि राम और जगतमाता सीता ने जन्म लिया। श्री कृष्ण ने यहाँ अपनी मधुर वंशी की तान छेड़ी और अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया। गौतम बुद्ध ने भी इसी धरती पर जन्म लेकर इसका गौरव बढ़ाया। उन्होंने दुनिया को दया व प्रेम का उपदेश दिया और संसार को अज्ञान के अंधकार से निकाल ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

यह भारतभूमि मेरी युद्धभूमि और भगवान बुद्ध की भूमि ही मेरी मातृभूमि और जन्मभूमि है और मुझे इस पर गर्व है।

शब्दार्थ

तले —नीचे; **सिन्धु** —समुद्र; **अमराइयाँ**—आम के पेड़ों का झुंड; **रघुपति**—महाराज दशरथ के पुत्र राम; **पुनीत**—पवित्र; **सुयश**—कीर्ति।

शीर्षक की सार्थकता

कविता का शीर्षक 'वह जन्मभूमि मेरी' कवि की मातृभूमि भारत के अगाध प्रेम को स्पष्ट करने वाला है। कवि ने अपनी जन्मभूमि भारत भूमि का अनेक प्रकार से गुणगान करते हुए उसके भौगोलिक, प्राकृतिक तथा आध्यात्मिक रूपों का वर्णन करते हुए उसे अनेक विशेषणों के माध्यम से सम्बोधित भी किया है। अत: यह शीर्षक सर्वथा सार्थक व सटीक है।

❑❑

अध्याय - 5 मेघ आए (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

कवि परिचय

नई कविता में श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का प्रमुख स्थान है। उनका जन्म 15 सितम्बर 1927 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। आजीविका हेतु इन्होंने अध्यापन व क्लर्की की। बाद में आकाशवाणी में भी काम करते रहे। सन् 1965 में 'दिनमान' साप्ताहिक के उपसम्पादक बने। सक्सेना जी ने 'पराग' नामक बाल पत्रिका का संपादन किया। ये 'तीसरा सप्तक' के कवि थे।

सक्सेना जी ने पद्य के साथ गद्य में भी रचनाएँ लिखी लेकिन कवि के रूप में उनको विशेष प्रसिद्ध मिली। इन्होंने काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, गर्म हवाएँ, एक सूनी नाव, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूटियों पर टंगे लोग (काव्य संग्रह): पागल कुत्तों का मसीहा, सोया हुआ जल (उपन्यास) बकरी (नाटक) लड़ाई (कहानी) आदि प्रमुख रचनाएँ कीं। 'दिनमान में प्रकाशित 'चरखे और चरचे स्तंभ से इन्हें बहुत प्रसिद्ध मिली।

पाठ का सार

मेघ आए शीर्षक कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने मेघों का अतिथि के रूप मानवीकरण कर उनके आगमन का शब्दचित्र उपस्थित किया है।

कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में आसमान में छाए जलयुक्त बादलों को देखकर प्रतीत होता है मानो शहरी मेहमान सज-धजकर गाँव में आये हों। उनके आगे-आगे नाचती गाती हुई हवा चल रही है जिससे प्रत्येक गली के घरों के दरवाजे तथा खिड़किया खुलने लगी है। लोग बादल रूपी शहरी मेहमान की एक झलक पाने के लिए मानो उतावले हो रहे हैं।

कवि कहता है कि मेघ रूपी मेहमान के सौन्दर्य को देखने हेतु पेड़ गरदन उचकाकर झांकने लगे। मेघों के आने पर आँधी चलने लगी है और धूल शरमाकर अपना घाघरा ऊँचा किए भागने लगी अर्थात् आँधी आने पर धूल उड़ने लगी। नदी रूपी स्त्री भी अपने मुख पर घूँघट सरकाकर तिरछी नजरों से मेघों को देख रही है अर्थात् नदी भी हवा की दिशा में बहने लगी।

कवि कहता है कि जिस प्रकार मेहमान के आने पर घर के बड़े लोग उसका स्वागत करते हैं वैसे बूढ़े पीपल के पेड़ ने आगे बढ़कर झुककर मेघों का स्वागत किया। विरह से व्याकुल लता ने किवाड की ओट में छिपकर मेघ रूपी मेहमान को एक वर्ष बाद आने का उलाहना दिया कि एक वर्ष तक तुम्हारी प्रतीक्षा करनी पड़ी। तालाब मेघ रूपी अतिथि के पैर धोने हेतु परात में पानी भरकर लाया हुआ प्रतीत होता है।

मेघों के क्षितिज रूपी अटारी (छत) पर पहुँचते ही बिजली चमकने गली अर्थात् अब कोई भ्रम नहीं और विश्वास हो गया कि वर्षा अवश्य होगी। मेघों के बरसते ही मानो सब्र का बाँध टूट गया।

धरती व बादलों के मिलन से उत्पन्न खुशी के आँसू बूँद बनकर बरसने लगे और मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी।

शब्दार्थ

बन-ठनकर– सज-धजकर; **बयार**–पवन; **पाहुन**–अतिथि; **मेघ**–बादल; **उचकाए**–उठाकर; **बाँकी-चितवन**–तिरछी नजर; **ठिठकी**–ठहरी; **जुहार**–झुककर किया गया नमस्कार; **अकुलाई** – व्याकुल हुई; **ओट**–आड़; **किवार**–दरवाजा; **क्षितिज**–वह स्थान जहाँ धरती और आकश मिलते हुए प्रतीत होते हैं।; **अश्रु**–आँसू; **ढरके**–गिरे; **दामिनी**–बिजली; **दमकी**–चमकी, **भरम**–श्रम।

शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत कविता का शीर्षक 'मेघ आए' संक्षिप्त, सारगर्भित व सार्थक है। कवि ने मेघों के आने से मानव व प्रकृति में हुए विभिन्न सुखद परिवर्तनों का बड़ा रोचक व आकर्षक रूप में मानवीकरण करते हुए वर्णन किया है। मेघ के आने की प्रसन्नता का प्रभाव पूरी प्रकृति पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। ❑❑

अध्याय - 6 सूर के पद (सूरदास)

कवि परिचय

हिन्दी की कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों में सूरदास जी का नाम प्रसिद्ध है। इनके जन्मस्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान आगरा के रुनकता में तथा कुछ दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में मानते हैं इनका जन्म सन् 1478 ई. में हुआ। सूरदास को जन्मान्ध माना जाता है लेकिन उनके काव्य में प्रकृति व मनुष्य के सौन्दर्य वर्णन से ऐसा विश्वसनीय नहीं लगता। सूरदास महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। वात्सल्य सम्राट सूरदास जी ने अपनी रचनाओं में कृष्ण की लीलाओं का प्रमुखता से वर्णन किया। उन्होंने बालकृष्ण की चेष्टाओं और क्रीड़ाओं का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया। वे मुख्यत: वात्सल्य और श्रृंगार के कवि थे। श्रृंगार में सूरदास जी ने कृष्ण, राधा तथा गोपियों का प्रेम का चित्रण किया है। सूरदास ने ब्रज की लोक प्रचलित भाषा को अपनी रचनाओं का आधार बनाया।

सूरसागर, साहित्य लहरी और सूरसारावली सूरदास के ये तीन ग्रन्थ हैं जिनमें सूरसागर सर्वाधिक प्रसिद्ध है जिसका आधार श्रीमद्भागवत है।

सन् 1583 में पारसौली में इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ में सूरदास जी ने कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं का मनोहारी व सजीव वर्णन किया है।

पहले पद में माता यशोदा अपने पुत्र कृष्ण को पालना में झुलाकर उन्हें सुलाने का प्रयास करती हुई कभी पालना हिलाती हैं कभी कृष्ण को लाड़ करती हैं और कोई लोरी गा रही है। वे नींद को उलाहना देती हुई कहती हैं कि नींद तू आकर मेरे लाल को क्यों नहीं सुलाती। कान्हा तुझे बुला रहा है इसलिए तू जल्दी से आ जा। कृष्ण कभी अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं, कभी अपने होंठ हिलाते हैं। कृष्ण को सोया जानकर माता यशोदा शांत हो जाती हैं तथा दूसरों को भी इशारों के माध्यम से चुप रहने को कहती हैं। इसी बीच कृष्ण अकुलाकर जाग जाते हैं तो यशोदा फिर से मधुर आवाज में लोरी गाने लगती है। सूरदास जी कहते है कि जो सुख देवताओं और मुनियों के लिए भी दुर्लभ है, वह नंद की पत्नी यशोदा को बड़ी सहजता से प्राप्त हो रहा है।

दूसरे पद में बालक कृष्ण माखन खा रहे हैं। उनके नेत्र सुन्दर और लाल हैं, भौहे तिरछी हैं और वे बार-बार जम्हाई ले रहे हैं मानो उन्हें नींद आ रही है। घुटनों के बल चलते हुए उनकी पैजनियों से रुनझुन की माधुर आवाज निकल रही है तथा उनके शरीर पर धूल भी लग गयी है। कभी झुककर स्वयं के ही बाल खींच लेते हैं जिसके दर्द से उनकी आँखों से आँसू आ जाते हैं और कभी अपनी तोतली आवाज में तात (पिता) कहते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण की ऐसी क्रीड़ाओं और रूप सौन्दर्य को माता यशोदा एक पल के लिए भी देखना छोड़ना नहीं चाहती हैं।

तीसरे पद में कृष्ण माता यशोदा से चन्द्र रूपी खिलौना दिलाने की जिद करते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें यह खिलौना नहीं मिला तो वे न तो धौरी गाय का दूध पियेंगे और न ही अपनी चोटी गूथेंगे। मोतियों की माला भी गले में नहीं पहनेंगे और कुर्ता गले में नहीं डालेंगे। धरती पर लेट जायेंगे लेकिन माता की गोद में नहीं आयेंगे। इसके साथ ही वे नन्द बाबा का पुत्र कहलायेंगे पर माता का नहीं। कृष्ण को ज्यादा जिद करते देख

उन्हें शान्त कराने के लिए माता यशोदा उनके कान में कहती है कि बलराम को मत बताना। मैं चन्दा से भी सुन्दर दुल्हन से तेरी शादी कराऊँगी। इतना सुनते ही बालक कृष्ण प्रसन्न हो जाते है और माता से तुरन्त शादी करने जाने की कहते हैं। वे कहते है कि मेरे सभी सखा बाराती बनकर मंगल गीत गायेंगे।

शब्दार्थ

हलरावै—हिला रही है; **निंदरिया**—नींद; **अधर**—होठ; **भामिनी**—पत्नी; **सैन**—आँखों के इशारे; **लोचन**—नेत्र; **जम्हात**—जम्हाई लेना; **बेगहि**—शीघ्र; **अलक**—केश; **तुतरे**—तोतले; **तात**—पिता; **तजत**—त्यागना; **धूल-धूसर**—धूल में लिपटे; **गात**—शरीर; **निमिख**—पलभर; **पय**—दूध; **पान**—पीना; **उर**—हृदय, सीना; **धरनी**—धरती; **सुत**—बेटा पुत्र; **सौ**—सौगन्ध; **गैहो**—गायेंगे।

❑❑

अध्याय - 7 विनय के पद (तुलसीदास)

कवि परिचय

तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान सोरों (जिला-एटा) भी मानते हैं। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में माता-पिता से उनका विछोह हो गया।

गुरु नरहरि दास की कृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला।

रामभक्ति परम्परा में तुलसी अतुलनीय हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने राम के माध्यम से नीति, स्नेह, शील, त्याग आदि आदर्शों को प्रतिष्ठित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, हनुमान बाहुक आदि ग्रन्थों की रचना की।

ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। उनकी रचनाओं में प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है।

सन् 1623 में इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ 'विनय के पद' में तुलसीदास जी ने अपने प्रभु श्रीराम की महिमा का बखान करते हुए उदार और भक्तवत्सल बताया है।

प्रथम पद में कवि श्रीराम की उदारता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस संसार में उनके समान कोई उदार नहीं है। प्रभु बिना सेवा के ही दीन-हीन मनुष्यों पर प्रसन्न हो जाते हैं। उनके समान दयालु व कृपालु अन्य कोई नहीं। बड़े-बड़े ज्ञानी, मुनि योग और वैराग्य आदि अनेक उपायों से भी जिस परम गति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त नहीं कर पाते वही गति प्रभु श्री राम ने गिद्ध (जटायु) और शबरी को सहज ही प्रदान कर दी। जिस सम्पत्ति अर्थात् स्वर्ण लंका का राज पाने के लिए रावण ने अपने दस सिर शिवजी को अर्पण किए वही सम्पदा श्रीराम ने सकुचाते हुए विभीषण को दे दी। तुलसीदास जी कहते हैं कि हे मोरे मन यदि तू सब प्रकार के सुखों को भोगना चाहता है तो तू राम के नाम का जाप कर, उनकी ही शरण में जा। वे कृपानिधान तेरे सारे काम पूर करेंगे।

दूसरे पद में कवि कहता है कि जिसके हृदय में प्रभु राम व माता सीता का प्रेम नहीं है वह मनुष्य हमें कितना भी प्रिय क्यों न हो, उसे करोड़ों शत्रुओं के समान मानकर छोड़ देना चाहिए। कवि उदाहरणों द्वारा अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि प्रभु विष्णु विरोधी अपने पिता हिरणयकश्यप को प्रहलाद ने त्याग दिया, विभीषण ने अपने भाई रावण का, भरत ने अपनी माता कैकेयी का, राजा बलि ने अपने गुरु शुक्राचार्य का तथा ब्रज की गोपियों ने भगवान प्राप्ति के मार्ग में बाधक मानकर अपने पतियों का त्याग कर दिया क्योंकि इन सबके मन में प्रभु के प्रति प्रेम था।

चाहे कोई हमारा मित्र या सुसेवक हो लेकिन यदि उसे श्री राम से प्रेम न हो तो हमें भी उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए जैसे उस काजल को लगाने का क्या लाभ जिसे लगाने से आँखें ही फूट जाएँ? तुलसीदास जी कहते हैं कि जो हमें परमपूज्य, प्राणप्रिय, परमहितकारी श्री राम के चरणों से प्रेम कराये वही हमारे लिए है ऐसे मेरा मानना है।

शब्दार्थ

जग माही—संसार में; **सरिस**—समान; **कोउ**—कोई; **जोग**—योग;**विराग**—वैराग्य; **पावन**—पवित्र; **अरप**—अर्पित; **सिव**—शिवजी; **सकुच**—संकोच; **सकल**—सारे; **वैदेही**—सीता; **कोटि**—करोड़ों; **वैरी**—शत्रु; **महतारी**—माँ; **कंत**—पति; **बनिताहि**—स्त्रियाँ; **अंजन** — काजल; **एतो**—ऐसा; **तजिए**—त्याग करिए।

❑❑

अध्याय – 8 भिक्षुक (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

कवि परिचय

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी का जन्म 1897 ई० महिषादल जिला मेदिनीपुर (बंगाल) में हुआ। इनके पिता पं. राम सहाय एक सरकारी नौकरी करते थे। तीन वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता का देहान्त गया। निराला जी का वैवाहिक जीवन भी बहुत कष्टमय रहा।

इन्हें आर्थिक कष्टों का भी सामना करना पड़ा।

सन् 1916 में इन्होंने 'जूही की कली' की रचना की। 1922 में रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' के सम्पादन काल में उनके दार्शनिक विचारों को पुष्ट होने का अवसर मिला। 1923-24 में महादेव बाबू के बुलावे पर 'मतवाला' का सम्पादन किया। तीन वर्ष लखनऊ आने पर 'गंगा पुस्तक माला' का सम्पादन करने लगे।

निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। परिमल, जूही की कली, गीतिका, अनामिका, राम की शक्ति पूजा, अपरा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, आसरा, प्रभावती आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

ये स्वभाव से विद्रोही तथा निर्भीक थे। ये बहुत स्पष्टवादी थे।

15 अक्टूबर 1961 को प्रयाग में इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

सूर्यकान्त त्रिपाठी जी ने अपनी कविता 'भिक्षुक' में एक भिक्षुक की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि एक भिक्षुक अपने भाग्य पर दुखी होता हुआ और मन में स्वयं पर पछताता हुए मार्ग पर चला आ है। कई दिनों से भूखा होने के कारण उसका पेट सिकुड़कर पीठ से मिल गया है। कमजोरी के कारण वह लाठी टेककर चल रहा है। वह दान में दो मुट्ठी अन्न प्राप्त करके अपनी भूख शान्त करना चाहता है इसलिए एक फटी पुरानी झोली को भिक्षा पाने के लिए वह दूसरों के सामने उसे फैलाता है। वह अकेला नहीं है उसके साथ उसके दो बच्चे भी हैं। वे भी हाथ फैलाकर भीख माँग रहे हैं। वे बाएं हाथ से पेट को मलते हुए भूखा होने का संकेत दे रहे हैं और दाएं हाथ से लोगों से कुछ देने की गुहार लगा रहे हैं। लेकिन कोई उन पर दया नहीं दिखा रहा है। भूख से उनके होंठ सूख गए हैं मगर किसी की कृपा दृष्टि न होने के कारण वे आँसुओं का घूँट पीकर रह जाते हैं।

भिक्षा न मिलने पर वे सड़क के किनारे पड़ी पत्तलों से जूठन उठाकर खाने लगते हैं लेकिन कुछ कुत्ते उस जूठन को भी उनसे झपट लेना चाहते हैं। कवि कहता है कि जब तक अभिमन्यु के समान चारों ओर से शत्रुओं से घिर जाओगे अर्थात् लगातार संघर्ष करते रहने पर भी तुम दु:ख की पराकाष्ठा पर पहुँच जाओगे तब मैं दु:खों को अपना बना लूँगा।

यहाँ कवि भिक्षुक को निराश न हो अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हरने की प्रेरणा दे रहा है।

शब्दार्थ

टूक—टुकड़े; **पछताता**— पश्चाताप करता; **पथ**—मार्ग;**लुकटिया**—लाठी; **दयादृष्टि**—कृपा; **मुट्ठी भर**—थोड़ा सा; **विधाता**—भगवान; **ओंठ**—होंठ।

शीर्षक की सार्थकता

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता का शीर्षक भिक्षुक पूर्णतया सार्थक व उपयुक्त है। कवि ने भिक्षुक व उसके बच्चों की विवशता का यथार्थ व मार्मिक वर्णन किया है। भिक्षुक की शारीरिक दशा व भूख की खातिर झूठी पत्तलों का चाटना आदि को बड़ी सूक्ष्मता के साथ दर्शाया गया है। अत: यह शीर्षक संक्षिप्त व सटीक है।

❑❑

अध्याय – 9 चलना हमारा काम है (शिवमंगल सिंह 'सुमन')

कवि परिचय

श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त सन् 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगरपुर नामक गाँव में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा वहीं हुई। बाद में ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी० ए० और काशी विश्वविद्यालय से एम० ए०, डी० लिट की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

वे हाईस्कूल के अध्यापक के पद से लेकर, हिन्दी के प्राध्यापक, महाविद्यालय के प्राचार्य तथा उज्जैन में उपकुलपति के पद पर कार्यरत रहे। ये कुछ समय नेपाल में भारतीय दूतावास के सांस्कृतिक सचिव भी रहे। सुमन जी प्रिय अध्यापक होने के साथ ही कुशल प्रशासक, प्रखर

चिंतक और विचारक भी थे। इन्होंने एक तरफ साधारण शोषित मानव की पीड़ा और निराशा को अपनी रचनाओं का विषय बनाया वहीं दूसरी तरफ एकांत क्षणों की कोमल तथा मधुर अनुभूतियों को भी अपने गीतों में स्थान दिया।

हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय, सृजन, मिट्टी की बारात, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आँखें नहीं भरी, विन्ध्य हिमालय आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त प्रकृति पुरुष कालिदास (नाटक) और महादेवी की काव्यसाधना (आलोचना) भी उल्लेखनीय रचना है।

इन्हें कई बार पुरस्कृत भी किया गया। मिटटी की बारात नामक रचना के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा भारत भारती पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया। 1974 में भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

1993 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शिखर सम्मान व 1999 में पद्म विभूषण की प्राप्ति हुई।

हिन्दी के सशक्त गीतकार सुमन जी का 27 नवंबर 2002 में निधन हो गया।

पाठ का सार

चलना हमारा काम है शीर्षक कविता में कवि शिव मंगल सिंह से जीवनपथ पर लगातार चलते रहने के महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि मेरे पैरो में तेज चलने की शक्ति होने पर भी भला मैं क्यों जगह-जगह खड़ा रहूँ?

आज मेरे सामने इतना बड़ा रास्ता है तो जब तक मंजिल पर नहीं पहुँच जाऊँगा तब तक विश्राम करने के लिए रुकूँगा नहीं अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति तक लगातार बिना हार माने प्रयास करते रहना आवश्यक है। चलते हुए आगे बढ़ना ही हमारा काम है। जीवन रूपी राह में चलते समय हमें कुछ अपनी बात कहनी चाहिए और कुछ दूसरों की सुननी चाहिए इस तरह मन की बात कहने, सुनने से मन का बोझ कम हो जाता है और आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है। किसी साथी के मिल जाने पर प्रसन्नता होती है और साथ चलने से लम्बा रास्ता भी आसानी से पार हो जाता है जबकि एकाकी मनुष्य को रास्ता अधिक लम्बा और कठिन महसूस होता है। राह में चलने वाले का एक ही परिचय होता है—राही। और चलने रहना ही उसका कर्त्तव्य होता है इसके अतिरिक्त उसका कोई और परिचय नहीं होता।

कवि कहता है कि मनुष्य का जीवन अपूर्ण है क्योंकि कभी हमें सब कुछ प्राप्त नहीं होता। कभी कुछ प्राप्त होता है तो कभी कुछ खो जाता है, कभी हमारा जीवन आशाओं से तो कभी निराशा से घिर जाता है, कभी हँसता है तो कभी रोता है। जीवन में उतार-चढ़ाव चलते ही रहते हैं। लेकिन हमें कभी भी निराशाओं से ग्रसित होकर अपनी गति को अवरुद्ध व बुद्धि और विवेक को क्षीण नहीं होने देना चाहिए। इस बात का सदैव ध्यान रखते हुए जीवनपथ पर चलते रहना चाहिए। इस विशाल संसार के प्रवाह में ऐसा कोई नहीं जिसे बहना न पड़ा हो। सभी के जीवन में सुख-दुख आते जाते रहते हैं। फिर स्वयं पर आये दुखों से घबराकर ईश्वर को इसके लिए दोषी मानना बेकार है। अत: हमें चलते रहने के कर्म से पीछे नहीं हटना चाहिए।

कवि कहता है कि अपने अपूर्ण जीवन को पूर्ण करने के लिए मैं सदैव यहाँ से वहाँ भटकता रहा। मेरी राह में अनेक कठिनाइयाँ भी आती रहीं लेकिन इन कठिनाइयों से निराश होकर रुक जाना उचित नहीं क्योंकि जीवन का अर्थ ही यही है कि जीवन में आने वाले सुख और दुख दोनों को समान भाव से स्वीकार करते हुए आगे बढ़ते रहा जाये। अत: कठिनाइयों का कुशलता से सामना करते हुए चलते रहना चाहिए। जीवनपथ की कठिन डगर पर चलते हुए कुछ साथ चलते रहे और कुछ साथी बीच में से न लौट गए किन्तु क्या उनकी इस प्रवृत्ति से मेरे जीवन की गति रुक गयी? साथियों के छूटने का मुझे गम नहीं। जो लोग निराशा से हार मानकर गिर जाते हैं वे गिर गये लेकिन जो दृढ़ता के साथ कठिनाइयों का सामना करते हुए हर वक्त चलते रहे उन्हें ही जीवन में सफलता की प्राप्ति होती है।

शब्दार्थ

गति—चाल, रफ्तार; **विराम**—रुकना; **अभिराम**—सुन्दर **राही**—यात्री; **अपूर्ण**—अधूरा; **अवरुद्ध**—रुका हुआ; **विशद**—बड़ा; **व्यर्थ**—बेकार; **वाम**—विरुद्ध; **प्रबल**—तीव्र; **पूर्णता**—पूरी तरह; **आठों याम**—आठों पहर, हर समय; **विधाता**—ईश्वर।

शीर्षक की सार्थकता

'चलना हमारा काम है' कविता का शीर्षक सार्थक व प्रेरणाशील है। कवि ने इस कविता में मनुष्य के निरंतर चलते रहने के महत्व को प्रतिपादित किया है। परिस्थितियाँ चाहे जैसी हो हमें सदैव चलते रहना है, रुकना नहीं है। हमें अपने चलते रहने के कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होना है। अत: शिवमंगलसिंह 'सुमन' द्वारा प्रस्तुत कविता को दिया गया शीर्षक उचित है।

❑❑

अध्याय - 10 मातृ मन्दिर की ओर (सुभद्रा कुमारी चौहान)

कवयित्री परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के पास निहालपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। इन्होंने अपनी शिक्षा प्रयाग के क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज से प्राप्त की। वहाँ महादेवी वर्मा से इनकी गहरी मित्रता हुई। लेकिन नवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छूट गयी। नवलपुर के सुप्रसिद्ध ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ इनका विवाह हुआ। सुभद्रा कुमारी की काव्य प्रतिभा बचपन से ही सामने आ गयी थी। सन् 1913 में नौ वर्ष की आयु में सुभद्रा की पहली कविता -मर्यादा' पत्रिका में प्रकाशित हुई।

विवाह के कुछ समय बाद ही ये सत्याग्रह में शामिल हो गईं। जिसके कारण इन्हें जेल यात्रा भी करनी पड़ी। ये मध्य प्रदेश विधान सभा की सदस्या भी रहीं।

इनका पहला काव्य संग्रह 'मुकुल' सन् 1930 में प्रकाशित हुआ। कोयल, आराधना, उल्लास, अनोखादान, उपेक्षा, यह कदम्ब का पेड़ समर्पण, वीरों का कैसा हो वसन्त, झाँसी की रानी की समाधि पर, झाँसी की रानी आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी 'झाँसी की रानी' कविता उत्तर प्रदेश के घर-घर में गायी जाती है। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से गरीब, पीड़ित, शोषित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की। इनकी सीधी सादी कहानियाँ हृदय पर गहरा प्रभाव डालती हैं। बिखरे मोती और सीधे-सादे चित्र नामक कहानी संग्रहों ने बहुत प्रसिद्धि पाई।

इन्हें 'मुकुल' तथा बिखरे मोती, दोनों रचनाओं के लिए अलग-अलग सेक्सरिया पुरस्कार मिले। भारतीय तटरक्षक सेना ने सुभद्रा जी को सम्मानित करते हुए नवीन नियुक्त तटरक्षक जहाज को उनका नाम दिया।

15 फरवरी 1948 को जबलपुर लौटते समय मोटर दुर्घटना में आपका निधन हो गया।

पाठ का सार

कवयित्री सुभद्रा कुमारी द्वारा रचित 'मातृ मंदिर की ओर' कविता राष्ट्र प्रेम से भरी है। वे कहती हैं कि मेरा हृदय व्यथित है, दु:खी है अत: उसे बहलाने के लिए मातृ मन्दिर जाऊँ। अपना सुख दु:ख उन्हें बताकर अपने हृदय को बोझ कुछ कम करती हूँ। मैं भारत माता के चरण पकड़कर उन्हें अपने नयन जल अर्थात् आँसुओं से नहला दूँगी अर्थात् उनके चरणों में रोकर अपना दु:ख व्यक्त कर देना चाहती हैं।

लेकिन तभी उन्हें ध्यान आता है कि वह तो दीन है, छोटी है, अज्ञानी है तथा मातृ मन्दिर तक पहुँचने का मार्ग अत्यंत दुर्गम है अत: वह भगवान से प्रार्थना करती है कि वे उसे मातृ मंदिर तक पहुँचने का मार्ग दिखला दें। अन्यथा वहाँ तक पहुँचना सम्भव नहीं है। उस मार्ग तक पहुँचने में बहुत से पहरेदार भी बाधक हैं। मन्दिर तक पहुँचने की सीढ़ियाँ अत्यन्त ही ऊँची है तथा उसके पैर दुर्बल है जो सीढ़ियों पर चढ़ने में फिसलते हैं।

ईश्वर ही वहाँ तक पहुँचने में सहायता कर सकते हैं। अत: वह ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि उन्हें शक्ति प्रदान करें।

कवयित्री आगे कहती है कि दूर से ही मन्दिर में जलती हुई जगमगाती ज्योतियाँ दिखाई दे रही हैं जो बहुत शोभायमान हो रही हैं। मन्दिर में वाद्य यन्त्र बजने की आवाज सुनायी दे रही है। अत: वह वहाँ शीघ्र पहुँचना चाहती है परन्तु वहाँ शीघ्र पहुँचने का उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। वह मातृ मन्दिर से आते गीतों की आवाज में अपनी तान मिलाना चाहती है। अत: भगवान से प्रार्थना करती है कि वे शीघ्र ही उन्हें वहाँ पहुँचा दें।

वे शीघ्र जाकर अपनी माँ की प्यारी मूर्ति देख लेना चाहती है। तथा उनकी प्यारी सी मुस्कान देखने को व्याकुल हैं क्योंकि इससे उनमें एक अनोखी स्फूर्ति सी आ जाती है। कवयित्री सोचती है जिस तरह वे माँ को याद करती है, माँ भी उन्हें याद आवश्यक करती होगी। लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो आज वह माँ से रुठ जायेंगी और अपनी फरियाद सुनायेंगी।

माँ का हृदय महानता का प्रतीक है। वे अपनी संतान के दोषों को भी अनदेखा कर देती हैं। क्रोधित होने के स्थान पर वे अपनी संतान पर अभिमान करती हैं। मातृ भूमि की रक्षा के लिए वे अपने प्राणों का बलिदान देने को भी तत्पर हैं। जब भी मातृभूमि पर संकट आयेगा तो वे अपना उत्सर्ग करने को भी तैयार रहेंगी। लेकिन कभी मातृभूमि पर अत्याचार नहीं होने देंगी। वे अपनी मातृभूमि का अपमान और अत्याचार कभी नहीं होने देंगी। चाहे उन्हें अपना बलिदान देना पड़े। वे भगवान से कहती हैं कि जब भी मातृभूमि की रक्षा की पुकार उठे मुझे उस पर बलिदान कर देना।

शब्दार्थ

व्यथित—दु:खी; **भार**—बोझ; **पद-पंकज**—कमल रूपी चरण; **नयन**—नेत्र; **बाधक**—रुकावट; **दुर्गम**—कठिन; **सोपान**—सीढ़ी; **नयनजल**—आँसू; **फरियाद**—याचना, प्रार्थना; **दीन**—गरीब; **दुर्बल**—कमजोर; **दोष**—अवगुण; **अभिमान**—घमण्ड, गर्व;**अत्याचार**—जुल्म; **न्यारी**—अनोखी; **वेदी**—शुभ कार्य के लिए तैयार की गई भूमि।

❑❑

उपन्यास

नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)

अध्याय–1

पाठ का सार

दयाराम जी का एक मध्यम श्रेणी का परिवार है। उनके परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटियाँ मीनू और आशा तथा एक बेटा रोहित है। वे अपने परिवार के साथ मीरापुर में रहते हैं।

मीनू की बचपन की सहेली नीलिमा उनके घर के पास ही रहती है। मीनू नीलिमा के घर जाती है। वहाँ नीलिमा आईने के सामने खड़ी अपना चेहरा निहार कर मुस्कुराती है। तभी मीनू ने पीछे से आकर नीलिमा की आँखें बंद कर लीं। मीनू को प्रसन्न देख नीलिमा के पूछने पर वह बताती है कि मेरठ वालों को उसकी फोटो पसन्द आयी है और वे लोग कल उसे देखने आ रहे हैं।

लेकिन विवाह से सम्बन्धित पुरानी बातें सोच वह उदास हो जाती है। पहले भी कई लड़के उसके छोटे कद व सांवले रंग के कारण नापसंद कर चुके थे। यही सोचते-सोचते उसकी आँखों में आंसू आ गए। अत: नीलिमा ने उसका मन हल्का करने के लिए अपनी कई फोटो दिखाईं जिनमें वह बहुत सुन्दर लग रही थी। मीनू ने उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करते हुए कहा कि तुमसे शादी करने वाला अवश्य ही भाग्यशाली होगा। तभी रोहित उन्हें अखबार देते हुए बताता है कि उनका एम. ए. परीक्षाफल निकला है। मीनू प्रथम श्रेणी में व नीलिमा द्वितीय श्रेणी में पास हुई है। नीलिमा की माँ दोनों सहेलियों का मुँह मीठा करती हैं और आशीर्वाद देती है। प्रथम श्रेणी में पास होने पर मीनू की हीन भावना से उपजी उदासी दूर हो गई और मीनू अपने माता-पिता को यह खुशखबरी सुनाने अपने घर चली जाती है। नीलिमा मीनू की उदासी और फिर खुशी देख कभी सुख है, कभी दु:ख है का गाना गाते हुए अपने काम में लग जाती है।

शब्दार्थ

दहलीज—देहरी; **ओझल**—गायब; **क्षण**—पल; **यौवन**—जवानी; **दर्पण**—आईना; **निहारना**—देखना; **आकर्षक**—लुभावना; **स्मृति**—याद; **अतीत**—पुरानी; **फुरसत**—अवकाश; **परीक्षाफल**—परीक्षा का नतीजा; **एहसास**—अनुभव; **भावना**—मन के विचार।

शीर्षक की सार्थकता

सुषमा अग्रवाल द्वारा रचित प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक 'नया रास्ता' पूर्णतया सार्थक, सटीक व प्रासंगिक है। उपन्यास की नायिका मीनू परिस्थितियों के आगे विवश होकर एक सामान्य, कमजोर लड़की की भाँति घुटने नहीं टेकती, बल्कि परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु स्वाबलंबी बन समाज में सम्मान हासिल करने का एक नया रास्ता चुनती है और सफलता भी प्राप्त करती है। अत: 'नया रास्ता' शीर्षक रोचक सार्थक व प्रेरणास्पद है।

उपन्यास का उद्देश्य

प्रस्तुत उपन्यास 'नया रास्ता' का उद्देश्य समाज में फैली दहेज प्रथा की समस्या को प्रमुखता से उजागर करना व दहेज के लालची लोगों का पर्दाफाश करना है। दहेज के कारण कितनी ही लड़कियों के विवाह के सपने चूर-चूर हो जाते हैं। लेखिका का उद्देश्य दहेज की समस्या व उससे होने वाली क्षति को संवेदनशीला से उजागर करना है। इसके साथ ही मीनू के माध्यम से प्रत्येक नवयुवती में नवचेतना व जाग्रति की भावना जगाना है ताकि वे आत्मनिर्भर बन अपनी मंजिल पा सकें। इसके लिए नारी को धैर्य, साहस व संयम से कार्य करना होगा।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

मीनू—मीनू नामक नवयुवती इस उपन्यास की नायिका है। वह दयाराम जी की बड़ी बेटी है। पूरी कथा मीनू को केन्द्र में रखकर लिखी है। मीनू साँवले रंग व दहेज की कमी के कारण कई बार विवाह हेतु, नापसंद किए जाने पर शुरू में निराश हो जाती है लेकिन फिर आगे की पढ़ाई पूरी कर वकील बनने का निश्चय करती है और एक प्रतिष्ठित वकील बन समाज में आदर व सम्मान पाती है। मीनू होशियार, समझदार, बड़ों का आदर करने वाली, संस्कारी, शांत स्वभाव वाली, मेहनती, कुशल नृत्यांगना, साहसी, धैर्यशाली, दृढ़ निश्चयी व भावुक है। वह समाज की रूढ़ियों में विश्वास नहीं करती। वह समाज के तानों को सुनकर विचलित नहीं होती। कड़े परिश्रम व लगन के बल पर प्रत्येक परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करती है। अमित व उसके परिवार द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को भी भुलाकर अमित को अस्पताल में मिलने जाती है। वह विवाह में

की जाने वाली फिजूलखर्ची के खिलाफ है। उसके मन में अपाहिजों के प्रति बचपन से ही सहानुभूति का भाव है। वह अपने विवाह-आयोजन में खर्च होने वाले रुपयों में से पाँच हजार रुपए से अपाहिज मनोहर को दुकान खुलवाकर उसकी मदद करती है। मीनू बहुत ही सुलझे विचारों वाली एक जागरूक नुवयुवती है। मीनू समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर विपरीत परिस्थितियों को हिम्मत से सामना करने की प्रेरणा देती है।

अमित—अमित उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र है। वह मेरठ का रहने वाला व मायाराम जी का पुत्र है। अमित एक पढ़ा-लिखा, समझदार, जिम्मेदार, भावुक, माता-पिता का आज्ञाकारी है। वह मीनू के रंग-रूप व गुणों पर मोहित हो जाता है लेकिन माता-पिता द्वारा दहेज के लोभ में आकर मीनू से रिश्ता तोड़ने पर वह आहत होता है। चाहकर भी उनके समक्ष बोल नहीं पाता। उसके कारण मीनू की भावनाओं को ठेस लगने की बात जानकर उसे ग्लानि का अनुभव होता है वह मीनू से इस सबके लिए क्षमा भी माँगता है। अंत में अपनी भूल सुधारता हुआ मीनू का हाथ माँगने मीनू के घर जाता है। और उसी से विवाह करता है। वह एक सच्चा प्रेमी है जो मीनू को ह्रदय से प्रेम करता है।

मायाराम जी—मायाराम जी अमित के पिता हैं। वे गुणों के पारखी व कद्रदान हैं। वह मीनू से अपने पुत्र का विवाह तय कर देते हैं। धनीमल द्वारा दहेज में पाँच लाख देने के वायदे पर भी उनकी पुत्री सरिता को बहू बनाने को तैयार नहीं होते। वे दहेज के विरोधी हैं। लेकिन अपनी पत्नी के आगे उनकी एक नहीं चलती। न चाहते हुए भी मीनू से रिश्ता तोड़ देते हैं। वे अपने पुत्र से बहुत स्नेह रखते हैं अमित की बातों से उन्हें एहसास होता है कि वे अपने बेटे के साथ अन्याय कर रहे हैं। अंत में वे अपने बेटे अमित की शादी उसकी पसंद के अनुरूप मीनू से ही करते हैं।

अमित की माँ—अमित की माँ एक लालची स्त्री हैं। धनीमल जी द्वारा दहेज का लालच दिए जाने पर वह उनकी अव्यवहारिक लड़की सरिता से अमित का विवाह तय कर देती हैं। लेकिन जब धनीमल जी विवाह के बाद अमित व सरिता के अलग फ्लैट में जाकर रहने की बात करते हैं तब अमित की माँ को अपनी गलती का एहसास होता है। वे अपने पुत्र अमित के विवाह को लेकर काफी उत्साहित थीं लेकिन सरिता से रिश्ता टूटने के बाद अमित शादी के बल तैयार नहीं होता जिससे वे काफी परेशान हो जाती हैं और अमित के मित्र सुरेन्द्र से अमित की मन की बात जानने का प्रयास करती हैं।

दयाराम जी—दयाराम जी मीनू के पिता हैं। वे सीधे-सादे, ईमानदार, समाजभीरु व्यक्ति हैं। यद्यपि दयाराम जी ने अपनी बेटियों को भी उच्च शिक्षित करने का प्रयास किया लेकिन मीनू के विवाह में होने वाले विलंब के कारण वे समाज के तानों से विचलित हो जाते हैं। बड़ी बेटी मीनू के स्थान पर छोटी बेटी आशा का विवाह पहले करने की बात पर भी उन्हें समाज में बदनामी का भय सताने लगता है।

मीनू की माँ—मीनू की माँ एक समझदार गृहिणी हैं। वह अपने बच्चों से बहुत स्नेह करती हैं व उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित भी करती हैं। उसका मानना है कि लड़की के लिए विवाह करना अत्यंत आवश्यक है वरना समाज उसे जीने नहीं देता। अत: वह समय-समय पर मीनू पर विवाह के लिए दबाव बनाती हैं। वह बेटी को पराया धन मानती हैं।

गौण पात्रों का चरित्र-चित्रण

आशा—आशा मीनू की छोटी बहन है वह रंग-रूप में मीनू से अधिक आकर्षक है। मीनू का विवाह के लिए राजी न होने पर आशा का विवाह आलोक से हो जाता है।

रोहित—रोहित मीनू का भाई व दयाराम जी का बेटा है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली में उसकी नौकरी लग जाती है। वह मीनू से बहुत स्नेह करता है।

नीलिमा—नीलिमा मीनू की बचपन की सहेली है। वह मीरापुर में मीनू के घर के पास ही रहती थी। नीलिमा बहुत सुन्दर है। नीलिमा का विवाह मेरठ में रहने वाले सुरेन्द्र के साथ होता है। मेरठ में पढ़ते समय मीनू नीलिमा से मिलती रहती है।

सुरेन्द्र—सुरेन्द्र मीनू की सहेली नीलिमा के पति हैं जो मेरठ में रहते हैं। वही मेरठ में मीनू के रहने का इंतजाम करते हैं। अमित उनका घनिष्ठ मित्र है। मीनू की सुरेन्द्र के घर पर ही अमित से मुलाकात होती है। सुरेन्द्र ही अमित के एक्सीडेंट की सूचना मीनू को देते हैं।

बुआजी—मीनू की बुआजी एक दकियानूसी विचारों वाली महिला हैं। आशा के विवाह में अविवाहित मीनू द्वारा रस्में पूरी करने का विरोध करती हैं। उनकी तीखी बातों से मीनू आहत हो जाती है और उसकी आँखों से आँसू छलक पड़ते हैं।

माया—माया मीनू की सहेली है। वह मीनू के साथ ही मेरठ में हॉस्टल में रहकर वकालत की पढ़ाई कर रही है। मीनू के बीमार होने पर माया ही उसकी देखभाल करती है। वह अलीगढ़ की रहने वाली है।

अशोक—अशोक मीनू की घनिष्ठ मित्र नीलिमा का भाई है। वह मीनू पर मोहित है और उससे विवाह भी करना चाहता था लेकिन मीनू अपनी मंजिल पाने से पहले किसी बंधन में नहीं बँधना चाहती इसलिए विवाह की बात टाल देती है।

धनीमल—धनीमल मेरठ के एक धनी व्यक्ति हैं। उनकी तीन बेटियाँ हैं। उन्हें अपने धन पर बहुत अभिमान है। वह दहेज का लालच देकर अपनी असंस्कारी पुत्री सरिता का विवाह मायाराम जी के बेटे अमित से तय कर देते हैं। वह अपनी शान शौकत से मायाराम जी व उनकी पत्नी को प्रभावित करने में भी कामयाब हो जाते हैं।

सरिता—सरिता धनीमल जी की पुत्री है जिसका रिश्ता अमित से तय हो जाता है। सरिता का रंग मीनू से भी गहरा था। उसे घर के काम-काज नहीं आते थे। उसे पेंटिंग व कार ड्राइविंग में विशेष रुचि थी। वह विवाह के बाद अमित के साथ एक फ्लैट में अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी।

राजो—राजो मीनू के यहाँ काम करने वाली महरी की छोटी बेटी थी जिसकी आयु बारह वर्ष थी। मीनू की माँ ने राजो को मीनू के साथ मेरठ भेज दिया था। राजो घर के कार्यों में मीनू का सहयोग करती। राजो के पास रहने से मीनू को अकेलापन महसूस न होता।

मनोहर—मनोहर राजो का चचेरा भाई था। वह फैक्ट्री में काम करते समय उसका एक पैर व सीधे हाथ की दो अँगुलियां मशीन में आकर कट गयीं थीं। मीनू अपने विवाह के फालतू खर्च से पांच हजार रुपये बचाकर उसे पान की दुकान खुलवाती है जिससे मनोहर की जिन्दगी सुधार जाती है।'

❑❑

अध्याय–2

पाठ का सार

मेरठ वालों द्वारा मीनू को देखने आने की वजह से दयाराम जी के घर पर उत्साह का वातावरण था। सुबह से घर में मेहमानों के स्वागत की तैयारियाँ होने लगीं। घर की भलीभाँति सफाई की गई। एक मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की हैसियत के अनुसार बैठक को अच्छी तरह सजाया गया। घर में तरह-तरह के पकवानों के बनाने के साथ ही बाजार से भी मँगवाए गए ताकि मेहमानों की खातिरदारी में कोई कमी न हो। वे बेसब्री से मेहमानों के आने का इंतजार करने लगे।

मीनू की माँ को इस बार मीनू के रिश्ता तय हो जाने की पूरी उम्मीद थी। उन्होंने मेहमानों का शानदार स्वागत किया। मीनू को देखने मायाराम जी अपने पूरे परिवार के साथ आए थे। कुछ देर बाद मीनू को बुलाया गया। गुलाबी साड़ी में वह बहुत सुन्दर लग रही थी। अमित ने मीनू से पढ़ाई, रुचि आदि के बारे में प्रश्न किए और संयुक्त परिवार के बारे में मीनू की राय जानी। मीनू के जवाब सुन अमित बहुत प्रसन्न था। मीनू से मिलने के बाद अमित के हृदय में उसका भोला चेहरा समा गया। अमित को अपने परिवार के लिए मीनू जैसी समझदार लड़की की ही तलाश थी।

तभी मीनू की छोटी बहन आशा और भाई रोहित भी आ गए। आशा मीनू से अधिक सुन्दर थी। अमित के माता-पिता ने आशा से भी प्रश्न किए जिनका उसने हंस-हंसकर जवाब दिया। मीनू की माँ को आशा का वहाँ आना अच्छा नहीं लग रहा था इसलिए उन्होंने आशा को दूसरे कमरे में बुलाकर लड़के वालों के सामने न जाने को कहा। आशा का कोमल नादान मन यह सब न समझ सका।

कुछ देर बाद सभी मेहमान जाने लगे तो दयाराम जी ने उनसे मीनू के बारे में पूछा। मायाराम जी घर जाकर विचार करके पत्र द्वारा सूचित करने की बात कहकर चले गए। उनके जाने के बाद मीनू के माता-पिता के मन में तरह-तरह के विचार उठने लगे। वहीं मीनू के मन में भी संशय की स्थिति थी कि इस बार वह परीक्षा में सफल होगी या नहीं।

शब्दार्थ

संजोग—संयोग; **बचकानी**—बच्चों जैसी; **यथा-स्थान**—उचित जगह; **आतिथ्य**—मेहमानबाजी; **मनौती**—मन्नत; **व्यंजन**—पकवान; **बेताबी**—बेसब्री; **निढाल होना**—सुस्त होना; **अन्तर्द्वन्द्व**—मन में उथल-पुथल होना; **हैसियत**—क्षमता।

❑❑

अध्याय–3

पाठ का सार

जब मायाराम जी मीनू को देखकर अपने घर मेरठ पहुँचे तो उन्होंने शहर के एक धनी व्यक्ति धनीमल जी को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। धनीराम जी अपनी बेटी सरिता का रिश्ता अमित से करना चाहते थे उन्होंने अपनी बेटी का फोटो मायाराम जी के सामने रखते हुए विवाह में पाँच लाख रुपये लगाने की बात कही। धनीमल जी की तीन बेटियाँ थीं। धनीमल जी ने अपनी मृत्यु के बाद सारी सम्पत्ति बेटियों की ही होने की बात कही। मायाराम जी दहेज विरोधी थे। उन्हें मीनू पसंद थी। वे मीनू की पढ़ाई लिखाई और गुणों से काफी प्रभावित थे। लेकिन उनकी पत्नी का झुकाव दहेज की तरफ था अत: वे सरिता के पक्ष में थीं। यद्यपि सरिता के नाक-नक्श मीनू से कम सुन्दर थे। अमित ने माँ से असहमति व्यक्त करते हुए कहा कि बड़े घर की लड़की हमारे परिवार के वातावरण में ढल पायेगी? लेकिन माँ ने तो धन के सपने भी देखने शुरू कर दिये थे अत: उनके सामने किसी की एक न चली और सरिता का रिश्ता मंजूर कर मीनू के रिश्ते को इन्कार करने का निर्णय हुआ।

अमित की माँ ने मीनू के रिश्ते को अस्वीकार करने की एक कुटिल योजना बनाई जिसके तहत मीनू की छोटी बहन आशा से रिश्ते की बात पत्र में लिखी गई। बड़ी बेटी के अविवाहित रहते छोटी बेटी की शादी को दयाराम जी तैयार न होंगे और रिश्ता अपने आप टूट जायेगा।

मायाराम जी को लड़की वालों की पीड़ा का अहसास था लेकिन मजबूरन उन्हें ऐसा ही पत्र लिखना पड़ा।

पत्र लिखने के बाद मायाराम जी अपराध बोध से भर गए। उन्हें आत्मग्लानि होने लगी।

शब्दार्थ

विस्मित—हैरान; **युक्ति**—उपाय; **बेड़ियाँ**—जंजीर; **सज्जन**—नेक; **मंजूर**—स्वीकार; **उकसाना**—भड़काना; **मन:स्थिति**—मन की स्थिति; **पीड़ा**—दुख; **नाक-नक्श**—शक्ल-सूरत; **तौर-तरीका**—व्यवहार।

❑❑

अध्याय–4

पाठ का सार

मीनू के यहाँ सब लोग मायाराम जी के पत्र का बेसब्री से इन्तजार करने लगे। मीनू की माँ को लग रहा था कि शायद उन्हें रिश्ता मंजूर नहीं लेकिन दयाराम जी ने उन्हें धीरज बँधाते हुए कहा कि इन कामों में थोड़ा समय लगता ही है। इधर मीनू भी सबकी बातें सुन बैचन हो उठी, अतीत की स्मृतियों ने उसकी घबराहट और बढ़ा दी।

तभी मीनू के छोटे भाई रोहित ने मेरठ से पत्र आने की सूचना दी। पत्र पढ़कर सभी सदस्यों के चेहरों पर उदासी छा गयी। घर में छायी शांति से मीनू समझ गयी कि वहाँ से भी विवाह के लिए मना हो गयी। उसका दिल रो पड़ा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कुरूप न होने के बावजूद उसे क्यों नापसंद कर दिया जाता है? शायद वह विवाह के योग्य ही नहीं है। उसके अन्दर ही अन्दर एक हीन भावना पनपने लगी।

मीनू के माता-पिता मायाराम जी द्वारा आशा के हाथ मांगने से असमंजस में थे? वे बड़ी बेटी के अविवाहित रहते छोटी बेटी के विवाह के पक्ष में नहीं थे। अपने माता-पिता की बातें सुन मीनू दुखी हो गयी उसने स्वयं शादी न करने का निर्णय करते हुए आशा की शादी करने को कहा। मीनू ने कहा कि वह पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। माँ पिताजी ने मीनू को समझाते हुए समाज की परम्पराओं का हवाला दिया। तभी मीनू के पिता के एक घनिष्ठ मित्र आये और उन्होंने भी मीनू की बात कर समर्थन किया। तब दयाराम जी ने आशा का रिश्ता अमित से करने के लिए मायाराम जी मिलने का निश्चय किया।

मेरठ मायाराम जी के यहाँ पहुँचने पर दयाराम जी की मुलाकात धनीमल जी से हुई। बातों ही बातों में उन्हें पता चला कि अमित का रिश्ता धनी धनीमल जी बेटी सरिता से पक्का हो चुका है और वे धनीमल जी शादी में पाँच लाख रुपये भी लगा रहे हैं। यह सुनते ही दयाराम जी के पाँवों तले जमीन खिसक गयी और वे तुरन्त वहाँ से चल दिए। वे जान गए कि इस जालिम दुनिया के लिए पैसा ही सब कुछ है। यहाँ इन्सानियत, शर्म, लज्जा की कोई कीमत नहीं। मायाराम जी ने दहेज के लालच में आकर अपने ही बेटे को बेच दिया। लेकिन फिर आशा के हाथ माँगने की वजह क्या है? यह वे नहीं समझ सके। वास्तविकता जानकर दयाराम जी के घरवालों का मन अमित के परिवार वालों के प्रति घृणा से भर गया।

शब्दार्थ

सांत्वना—धीरज; **रिवाज**—रीति; **जालिम**—क्रूर; **कसूर**— अपराध; **विकल**—बेचैन; **घनिष्ठ**—गहरे; **विवश**—मजबूर; **अभिप्राय**—मतलब; **कुरूप**—भद्दी; **उलझन**—असमंजस; **वास्तविकता**—असलियत।

❑❑

अध्याय–5

पाठ का सार

अपने जीवन की परिस्थितयों से विवश मीनू के मन में कई बार हीन भावनाएँ भी उत्पन्न हुईं लेकिन मीनू जैसी योग्य और होनहार लड़की ने अपना जीवन व्यर्थ में न गँवाना उचित समझा और साहस व दृढ़ता से जीवन के उतार-चढ़ावों का सामना करने का निश्चय किया। उसने विवाह न करके अपने बचपन के वकील बनने के सपने को पूरा करने का निर्णय लिया। मीनू की लगन देखकर माता-पिता ने भी स्वीकृति दे दी और मेरठ में वकालत में उसका दाखिला करवा दिया। मीनू अपने पाँवों पर खड़ी हो पैसे कमाकर समाज में सिर ऊँचा करके रहना चाहती थी क्योंकि समाज में आज पैसों का ही बोलबाला है। हर व्यक्ति पैसा कमाने की होड़ में लगा है।

मीनू पहली बार परिवार से दूर हॉस्टल में पढ़ने जा रही थी। एक वकील बनने की सोच वह उत्साहित भी थी। माता-पिता उसके हॉस्टल में जाने से पहले उस पर अपना लाड़ लुटा रहे थे। घर से जाते समय मीनू के आँसू छलक पड़े। माँ ने उसे सफलता का आशीर्वाद दिया और आगे बढ़ने को प्रेरित भी किया। मीनू जानती थी कि उसे अपनी मंजिल पाने के लिए अथक परिश्रम करना होगा।

मीनू हॉस्टल में अपरिचितों के बीच स्वयं को बहुत अकेला महसूस करती, उसका मन वहाँ नहीं लगता। वह अक्सर बचपन की स्मृतियों में खो जाती। बचपन से ही मीनू को वकील बनने की चाहत थी लेकिन तब माँ लड़कियों को अधिक पढ़ाने के पक्ष में न ही थी। इससे मीनू आहत हो जाती थी। एक दिन मीनू अतीत की स्मृतियों में खोई थी तभी उसकी सहेली माया ने पिताजी के आने के बारे में बताया। दो दिन बाद ही पिताजी के मिलने आने पर भी मीनू को लग रहा था मानो लम्बे समय बाद मिल रही हो। पिताजी को देखकर फूली न समायी। पिताजी से मिल मीनू को घर के स्नेह की याद ताजा हो गयी।

शब्दार्थ

देदीप्यमान—चमकता हुआ; **व्यंजन**—पकवान; **घनिष्ठ**—गहरा; **परिस्थिति**—हालात; **ठेस**—आघात; **व्यर्थ**—बेकार; **साहस**—हिम्मत; **दृढ़ता**—मजबूती; **प्रकाशमय**—प्रकाश से पूर्ण।

❑❑

अध्याय-6

पाठ का सार

मायाराम जी के घर में धनीमल जी और उनकी बेटी सरिता की चर्चा होती रहती। अमित की माँ हमेशा धनीमल जी की प्रशंसा करती वहीं अमित को इन सब में कोई रुचि नहीं थी। अमित एक स्वाभिमानी लड़का था उसके मन में तो मीनू का भोला-भाला सांवला सलोना चेहरा बसा था। लेकिन उसमें अपने माता-पिता के सामने बोलने की हिम्मत नहीं थी। आर्थिक रूप से मजबूत होने के बावजूद एक धनी लड़की के प्रति घरवालों के झुकाव को वह समझ न पाता। एक दिन उसने हिम्मत कर माँ से पूछ ही लिया कि मीनू में आपको क्या कमी नजर आती है। मीनू पढ़ी-लिखी, खानदानी और सारे कामों में चतुर है। वह एक कुशल गृहणी सिद्ध होगी। अमित ने अपनी बड़ी मौसी का उदाहरण देकर माँ को समझाया कि किस तरह एक बड़े घर की लड़की को बहू बनाने से मौसी की स्थिति दयनीय हो गयी।

सरिता को अपने घर की बहू बनाकर कहीं वे भी वही नहीं कर रहीं? अमित की बात सुन माँ कुछ आभास होने लगा कि बड़े घर की लड़की सरिता एक अच्छी बहू बनेगी या नहीं।

तभी धनीमल उनके घर आते हैं। उनके पीछे ड्राइवर फल की दो पेटी लेकर आता है। अमित को धनीमल जी का फल की पेटी लाना अच्छा नहीं लगता। वह धनीमल जी से पूछ ही लेता है कि फल क्यों ले आए। इस सबकी क्या जरूरत थी? धनीमल जी उन्हें मीठे कश्मीरी सेब बताकर अमित से खाने का आग्रह करते हैं। उनकी बात से अमित क्रोधित हो जाता है। माँ अमित को समझाती है कि सम्बन्ध जुड़ने पर खाली हाथ नहीं जाया जाता इसलिए धनीमल जी की इसमें कोई गलती नहीं। अमित ने माँ से कहा कि तुम सबने सरिता को इस घर में लाने की ठान ली है। धनीमल जी सरिता को दिखाने की तिथि निश्चित कर चले गए।

शब्दार्थ

सलोनी—सुन्दर; **कुशल**—निपुण; **आभास**—अन्दाजा; **सिलसिला**—क्रम; **मिष्ठान्न**—मिठाइयाँ; **ठान लेना**—निश्चय करना; **भाना**—पसंद आना; **स्वाभिमान**—आत्मसम्मान; **गृहिणी**—पत्नी।

❑❑

अध्याय-7

पाठ का सार

सरिता को देखने का दिन आ ही गया। परिवार के सभी लोग इस रिश्ते को लेकर काफी उत्साहित थे लेकिन अमित के चेहरे पर उदासी थी। अपने ही माता-पिता द्वारा एक धनी लड़की के हाथों स्वयं को बेचे जाने की कल्पना कर ही वह उदास हो गया। जैसे ही सब तैयार हुए धनीमल जी का ड्राइवर कार लेकर आ गया। धनीमल जी कोठी बहुत शानदार थी। उस कोठी में घुसते ही मायाराम जी के परिवार को स्वर्ग की अनुभूति हुई। धनीमल जी ने बाहर स्वागत किया। अनेक प्रकार के मिष्ठान, फल, मेवा उनके सामने रखे गए लेकिन सभी सरिता से मिलने को उत्सुक थे। सरिता अपनी चाची के साथ आयी। सरिता का रंग मीनू से भी गहरा था। अमित को सरिता बिल्कुल पसंद न आयी लेकिन माँ को सरिता पसंद थी माँ का उससे स्नेह से बात करना अमित को अच्छा नहीं लग रहा था।

कुछ देर बाद अमित व सरिता को एकांत में बातें करने का अवसर देते हुए सभी लोग उठकर चले गए। अमित ने सरिता से उसकी पढ़ाई, रुचि के बारे में पूछने के बाद घर के काम करने के विषय में पूछा तो सरिता ने यह कहते हुए मना कर दिया कि घर में नौकरों के होते उसने कभी घर के काम नहीं किए और न ही उसे उन कामों में कोई रुचि है। शादी के बाद उसके पिता नौकर साथ भेजेंगे ताकि सरिता को कोई काम न करना पड़े। सरिता की बात सुन अमित आश्चर्यचकित रह गया।

अमित और सरिता की बात चल ही रही थी तभी परिवार के अन्य सदस्यों ने उस कमरे में प्रवेश किया। इसके बाद खाने-पीने का कार्यक्रम शुरू हो गया। धनीमल जी विशेष आग्रह के साथ सबको खिला-पिला रहे थे। अमित की खाना खाने की इच्छा नहीं थी पर सबके आग्रह पर उसे खाना ही पड़ता है।

घर पहुँचने पर सबने सरिता के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त किए माँ ने सरिता का पक्ष लेते हुए कहा कि शादी के बाद रंग में निखार आ जाता है। पिता भी सरिता के पक्ष में थे। लेकिन अमित और उसकी बहन मधु को सरिता पसंद नहीं थी। मधु के द्वारा सरिता को काली कहने पर पिताजी ने उसे चुप करा दिया। अमित से सरिता के बारे में उसकी राय पूछे जाने पर अमित ने कहा कि जब आपने उससे मेरा विवाह करने की ठान ही ली है, तो कर लीजिए लेकिन मुझे सरिता बिल्कुल पसंद नहीं है। अमित की बात सुन पिताजी को अनुभव होता है कि कहीं वे अमित के साथ जवरदस्ती करके उसकी जिन्दगी से खिलवाड़ तो नहीं कर रहे।

लेकिन माँ अमित पर व्यंग्य करती हुई कहती है कि आजकल के बच्चों का दिमाग खराब हो गया है। हमारे जमाने में एक-दूसरे को देखे बिना ही शादी हो जाती थी। अमित माँ की ऐसी बातों को सुनकर भी चुप रह जाता है। पढ़ा-लिखा नवयुवक होन के बावजूद उसमें अपनी माँ का विरोध करने का साहस नहीं था अत: वह चुपचाप अपने कमरे में चला जाता है।

शब्दार्थ

भौंचक्का–चकित; **नि:संकोच**–बिना संकोच के; **एकान्त**–अकेले में; **मौन**–शान्त; **तपाक**–तुरन्त; **व्यंग्य**–ताना; **अपनापन**–आत्मीयता; **प्रस्थान**–जाना; **उत्सुक**–इच्छुक।

❑❑

अध्याय–8

पाठ का सार

कॉलेज में हड़ताल होने के कारण आज मीनू के कॉलेज की छुट्टी थी। इसलिए मीनू हॉस्टल के आंगन में अपनी सहेलियों के साथ घूम रही थी। वर्षा की बूंदें पड़ जाने से मौसम सुहावना हो गया था। अत: सबने मिलकर बाहर जाकर चाय समोसे खाने की योजना बनाई। तभी डाकिया आ गया। सभी लड़कियाँ अपने-अपने पत्र मांगते हुए आगे बढ़ने लगीं। मीनू के माताजी-पिताजी का पत्र कल ही आया था इसलिए वह दूर ही खड़ी थी। तभी मीनू ने अपनी सहेली माया को उदास देखा तो पूछने पर पता चला कि एक महीने से उसकी कोई चिट्ठी नहीं आयी है। वह अपने माता-पिता की तबियत को लेकर चिन्तित है। मीनू माया की परेशानी समझती थी अत: उसने माया को खुश करने के लिए कुछ मजाक भरे चुटकुले सुनाना शुरू कर दिए जिससे माया को हँसी आ गई।

तभी वर्षा तेज हो जाने से उन सबने कैन्टीन के नौकर को बुलवाकर हॉस्टल की बाहर की कैन्टीन से चाय समोसे मंगवाए। इतने में ही मीनू की घनिष्ठ सहेली नीलिमा आती है। बहुत दिनों के बाद नीलिमा से मिलकर मीनू खुशी से उछल पड़ती है। सब मिलकर चाय समोसे का आनंद लेती हैं। फिर मीनू नीलिमा को अपने कमरे में ले जाती है। वहाँ नीलिमा उसे अपनी शादी का निमन्त्रण पत्र देकर कुछ दिन पहले आने का आग्रह करती है। मीनू के पूछने पर नीलिमा बताती है कि लड़के का नाम सुरेन्द्र है वह मेरठ का ही है। उसकी अपनी फैक्ट्री है। काफी पैसे वाला है और देखने में भी बहुत स्मार्ट है। नीलिमा बताती है कि उसके भैया अशोक भी डॉक्टर बन गए हैं और दिल्ली में ही काम करते हैं।

नीलिमा को विदा कर मीनू अपने कमरे में आकर नीलिमा की शादी के निमन्त्रण पत्र को फिर से देखती है, वह अतीत की स्मृतियों में खो जाती है। कई लड़कों के द्वारा नापसंद किए जाने पर वह स्वयं को अभागन मानती हुई भावुक हो जाती है लेकिन अगले ही पल स्वयं को संभालती हुई वह सहेलियों के साथ बाहर चली जाती है।

शब्दार्थ

प्रफुल्लित–प्रसन्न; **स्मृतियाँ**–यादें; **कल्पना**–सोचना; **भेंट**–उपहार; **अभागन**–भाग्यहीन, बदकिस्मत; **एकमात्र**–अकेला; **अतीत**–बीता हुआ समय।

❑❑

अध्याय–9

पाठ का सार

मीनू अपना अधिकांश समय पढ़ाई में व्यतीत करती थी। बचपन से मीनू अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त करना चाहती थी। वह अपने पाँव पर खड़ी होने के लिए बहुत उत्साहित थी। उसे याद आया कि परसों उसे नीलिमा की शादी में भी जाना है। पढ़ाई के कारण उसने केवल एक दिन पहले विवाह में जाने का निश्चय किया। नीलिमा के विवाह के लिए उसने एक दीवार घड़ी उपहार में देने के लिए खरीदी और अगले दिन मीरापुर के लिए रवाना हो गयी। मीरापुर स्टेशन पर उसने घर पहुँचने के लिए एक रिक्शेवाले को आवाज लगाई। तभी उसे नीलिमा के बड़े भाई अशोक दिखे। वे अपनी मौसी को लेने आये थे। पर वे नहीं आयी थीं। अशोक ने मीनू को उसके घर पहुँचाया। अशोक पूरे रास्ते मीनू से बातें करता रहा। घर पर सभी मीनू को देख बहुत प्रसन्न हुए।

मीनू ने हाथ-मुँह धोकर चाय पी ही थी कि नीलिमा ने अपना नौकर उसे बुलाने भेज दिया। नीलिमा और मीनू मिलकर बहुत खुश हुईं। नीलिमा ने अपने भावी पति के फोटो के साथ ही शादी का सारा सामान मीनू को दिखाया। खाना खाने के बाद मीनू को अशोक भैया घर छोड़ने आए। पिताजी ने अशोक से बैठने के लिए कहा लेकिन रात अधिक हो जाने से वे रुके नहीं।

मीनू सीधे अपनी माँ के पास गयी। काफी देर तक वे दोनों बातें करती रहीं। सुबह मीनू के जागते ही माँ ने उसे गर्म-गर्म चाय लाकर दी। हॉस्टल में तो सुबह स्वयं ही मीनू को चाय बनानी होती थी। यहाँ माँ के हाथ से बनी चाय पाकर उसे सुखद अनुभूति हुई। नहा-धोकर उसने माँ के बनाये मनपसंद सूजी के हलवे का नाश्ता किया। आज नीलिमा की बारात आनी थी। तभी अशोक भैया ने आकर बताया कि नीलिमा उसे

बुला रही है। मीनू ने शादी में जाने के लिए हरे रंग का सलवार सूट पहना और अपने बाल संवारे। गेहुँए रंग पर भी उसके तीखे नाक-नक्श उसकी सुन्दरता बढ़ा रहे थे। दर्पण के सामने स्वयं को निहारते में उसे आभास हुआ कि वह बदसूरत तो नहीं है। नीलिमा के घर काफी मेहमानों के आ जाने से चहल-पहल थी। मीनू के पहुँचते ही नीलिमा अपनी विदाई के अहसास से मीनू से लिपटकर रोने लगी। दोनों बहुत देर तक बातें करती रहीं मीनू ने नीलिमा को उपहार दिया। बारात आने की सूचना मिलते ही नीलिमा के हृदय की धड़कन और तेज हो गयी। जीवन साथी से मिलने की खुशी में उसे घर के छूटने के दुख की भी तीव्र अनुभूति हुई जिससे वह उदास हो गयी।

विवाह की सभी रस्में पूरी होने के बाद मीनू तैयार होने अपने घर चली आयी। गुलाबी रंग की सुनहरे काम की साड़ी पहनकर मीनू ने हल्का सा मेकअप किया और जूड़ा बनाया। उस गुलाबी साड़ी में मीनू बहुत सुन्दर लग रही थी। माँ ने भी उसकी प्रशंसा की। मीनू तैयार हो नीलिमा के पास पहुँची। तैयार होकर नीलिमा किसी अप्सरा के समान लग रही थी। सभी उसकी सुन्दरता की प्रशंसा कर रहे थे। बारात के आने की आवाज सुन सभी दूल्हे को देखने दरवाजे की ओर दौड़े। दूल्हे और नीलिमा के स्टेज पर पहुँचने पर जयमाला का कार्यक्रम हुआ। मीनू ने एक गीत गया। सभी ने मीनू की मधुर आवाज की प्रशंसा की। बारात में आये अमित ने भी मीनू के गीत की बहुत प्रशंसा की। अमित को देख मीनू आश्चर्यचकित रह गयी लेकिन मीनू के मन में उसके प्रति घृणा थी। उसने मीनू को पैसे के लिए नापसंद कर उसे ठेस पहुँचायी थी अत: मीनू अमित से बिना बात किए ही अन्दर चली गयी। मीनू के व्यवहार से अमित को उसकी नाराजगी का अहसास हो गया था लेकिन फिर भी वह उससे बात करना चाहता था। अतीत की स्मृतियों के ताजा हो जाने से मीनू बिना खाना खाये अपने घर चली आयी। माँ मीनू का उदास चेहरा देख समझ जाती है कि विवाह में किसी ने मीनू से उसकी शादी के बारे में पूछ लिया होगा। मीनू को सहेली को दुल्हन बनी देख अतीत की बातें याद आ गयी होंगी। इस तरह की बातें सोच माँ परेशान हो गयी।

मीनू भी तकिए में मुँह छिपाये अमित के बारे में सोचने लगी कि अमित की बातों से यह लग रहा था कि उसे मीनू पसंद तो है या उसने पैसों के लिए मीनू को नापसंद किया था ऐसे विचार मीनू के मन में आने लगे। सुबह मीनू तैयार हो नीलिमा के पास पहुँची। विदाई के समय दोनों सहेलियाँ एक दूसरे से मिल रोने लगीं। नीलिमा को विदा कर मीनू भी अपना सामान बाँध मेरठ के लिए रवाना हो गयी।

शब्दार्थ

सहेली—सखी; **निवृत्त**—फुर्सत होना; **अभिशाप**—शाप; **साक्षात्**—सामने; **प्रयास**—कोशिश; **सांत्वना**—तसल्ली; **पुलकित**—रोमांचित; **शौक**—रुचि; **निश्छल**—बिना छल-कपट के; **इजाजत**—अनुमति; **अनुभूति**—अनुभव; **दर्पण**—आईना; **द्वेष**—घृणा; **नियंत्रण**—काबू; **आग्रह**—हठ; **व्यतीत**—बिताना।

❑❑

अध्याय–10

पाठ का सार

मेरठ पहुँचने पर मीनू को कॉलेज में वार्षिकोत्सव मनाए जाने का पता चला। हॉस्टल में चहल-पहल थी। कई तरह के कार्यक्रमों की तैयारियाँ चल रहीं थीं। मीनू को देखकर उसकी सहेलियाँ उससे कत्थक नृत्य का कार्यक्रम देने को कहती हैं। मीनू ने बचपन में कत्थक नृत्य सीखा था और कई पुरस्कार भी जीते थे लेकिन अब इन सब में उसकी विशेष रुचि न थी। अपने ध्येय को पूरा करने के लिए वह लगातार परिश्रम करना चाहती थी। किन्तु सहेलियों को कहने वह कत्थक नृत्य के लिए इन्कार न कर सकी।

यात्रा की थकान दूर करने वह कमरे में जाकर लेट गयी। वह बचपन को याद करते हुए सोचती है कि मीरापुर में कत्थक नृत्य का स्कूल खुलने पर वही सबसे पहले पहुँचती थी। पहले दिन नृत्य के लिए पैर चलाते हुए उसके पैरों में बहुत दर्द हो गया था। अपनी लगन और प्रतिभा से वह दो वर्ष में ही कत्थक नृत्य में निपुण हो गयी थी। एक बार स्कूल के वार्षिकोत्सव में उसने कत्थक नृत्य प्रस्तुत किया था। सभी ने उसके नृत्य की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि ने उसे पुरस्कृत किया तथा अध्यापिका द्वारा मीनू को प्रत्येक कार्य में कुशल बताये जाने पर मीनू का हृदय प्रसन्नता से झूम उठा था। मीनू अभी बचपन की यादों में खोई थी तभी उसकी सहेली माया वहाँ आयी और नीलिमा की शादी के बारे में पूछने लगी। कुछ देर बातें कर मीनू हाथ-मुँह धो पढ़ने लगी।

कॉलेज के वार्षिकोत्सव में दस दिन बचे थे। मीनू ने भी कॉलेज में ही कत्थक का अभ्यास करने का निश्चय किया। अभी मीनू को अभ्यास करते चार दिन हुए थे कि चपरासी ने मीरापुर से आया टेलीग्राम मीनू को दिया जिसमें मीनू के पिताजी के बीमार हो जाने पर उसे शीघ्र घर बुलाया था। पढ़कर मीनू का दिल कांप गया। पिताजी की तबियत ज्यादा ही खराब होगी तभी उसे बुलाया है, यह सोच मीनू मीरापुर जाने की तैयारी करने लगी। उसकी सहेली माया ने मीनू को रात में अकेले जाने से मना किया और सुबह जाने को कहा। मीनू को भी इतनी रात में जाने में डर लग

रहा था अत: उसने सुबह ही जाने का निश्चय किया और पलंग पर लेट गयी लेकिन उसका मन पिताजी से मिलने के लिए बेचैन था। वह स्वयं को पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह विवश अनुभव करती है। तरह-तरह के विचार उसे रात भर सोने नहीं देते। वह सुबह होने का इन्तजार करती है।

शब्दार्थ

पक्ष—समर्थन; **वार्षिकोत्सव**—सालाना उत्सव; **निपुण** —प्रवीण; **मुद्रा**—भंगिमा; **नाजुक**—कोमल; **प्रस्ताव**—सुझाव; **दर्शक**—देखने वाले; **रुचि**—पसन्द; **टेलीग्राम**—तार; **परतन्त्र**—गुलाम; **निहारना**—देखना।

❑❑

अध्याय–11

पाठ का सार

मीनू के पिताजी की तबियत बहुत खराब होने से डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह आराम करने की सलाह दी। परिवार के सभी सदस्य उनकी सेवा में लगे थे। माँ उनकी हालत देखकर बहुत विचलित हो गयी थीं। यदि मीनू के पिताजी को कुछ हो गया तो दोनों बेटियों की शादी कैसे होगी? उन सबका क्या होगा? आदि विचार माँ को दुखी कर रहे थे। मीनू से विशेष स्नेह होने के कारण पिताजी होश में आते ही मीनू के बारे में पूछते। डॉक्टरों न उन्हें बात करने के लिए मना किया था लेकिन जान-पहचान वालों के द्वारा बीमार पिताजी से मिलने आने के कारण उन्हें आराम नहीं मिल पा रहा था। सभी मीनू का इन्तजार कर रहे थे तभी माँ ने रसोई में काम करते हुए मीनू को रिक्शे से उतरते देखा। मीनू अन्दर आते ही माँ से लिपटकर भावुक हो जाती है और पिताजी की तबियत के बारे में पूछती है। पिताजी को दिल का दौरा पड़ने की बात बताते हुए माँ का गला भर आता है।

मीनू पिताजी के पास पहुँचती है तो उन्हें सोता हुआ देखकर बाहर लौटने लगती है। रोहित मीनू को वहाँ बैठा जाता है। मीनू पिताजी को न जगाकर समाचार पत्र पढ़ने लगती है तभी मीनू के पिताजी अपनी आँखें खोलते हैं। मीनू को देख उनके चेहरे पर प्रसन्नता आ जाती है वे मीनू से पूछते हैं कि वह कब आयी? मीनू कुछ देर पहले आने की बात कह पिताजी से उनकी तबियत के बारे में पूछती है। 'ऐसी ही है' कहकर पिताजी अपनी आँखें मूँद लेते हैं। कमजोरी के कारण उन्हें बोलने में परेशानी हो रही थी। समाचार पत्र में कत्थक नृत्यांगना की तस्वीर देख उसे ध्यान आता है कि यदि वह मेरठ में होती तो कत्थक नृत्य कर रही होती। दोपहर में मीनू के मना करने पर माँ आग्रह कर उसे खाना खिलाती है।

परिवार के सदस्यों की सेवा व ईश्वर की कृपा से एक सप्ताह में पिताजी की सेहत में काफी सुधार आ जाता है। मीनू की बुआजी व फूफाजी पिताजी की बीमारी के बारे में जानकर उनसे मिलने आते हैं। पिताजी से कुशलक्षेम पूछ इधर-उधर की बातें करने लगते हैं। मीनू को बुआजी का ज्यादा बातें करना पसंद नहीं आता क्योंकि डॉक्टर ने पिताजी को आराम करने को कहा था। फूफाजी इशारे से उन्हें चुप कराने की कोशिश करते हैं पर वे लगातार बोलती जाती हैं। तब मीनू उन्हें खाना खाने और आराम करने के बहाने वहाँ से ले जाती है ताकि पिताजी कुछ आराम कर सकें।

अगले दिन फूफाजी को फैक्ट्री में आवश्यक काम होने के कारण बुआजी वापस जाने लगीं तो पिताजी को सलाह देते हुए बोलीं कि तुम्हारी तबियत खराब रहती है। ऐसे में दो जवान बेटियों को पढ़ाने के चक्कर में न पड़कर उनकी शादी कर दो ताकि अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो सको। रोहित लड़का है इसलिए उसकी कोई चिन्ता नहीं। बुआजी को विदा कर पिताजी गहरी चिन्ता में डूब गए। माँ से अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए बोले कि मेरे बाद दोनों बेटियों की तुम कैसे शादी करोगी? इनके हाथ पीले किए बिना में चैन से मर भी नहीं पाऊँगा। माँ पिताजी को हिम्मत बँधाती हैं और कहती हैं कि अच्छे लड़के मिलना कठिन है तथा मीनू भी अभी शादी के लिए तैयार न होगी। तब पिताजी मीनू को बुलाकर उससे शादी करने को कहते हैं लेकिन मीनू अपने उद्देश्य की प्राप्ति से पूर्व विवाह करने से इन्कार कर देती है क्योंकि शादी के बाद वह उतने परिश्रम व यत्न से पढ़ाई नहीं कर पायेगी जितनी कि आवश्यकता है। लेकिन माँ कहती है कि इस तरह वे आशा की शादी के लिए बहुत लेट हो जायेंगे तो मीनू स्वयं की चिन्ता न करने की बात कहती हुए आशा की शादी करने को कहकर बाहर आ जाती है।

पिताजी की तबियत ठीक देखकर मीनू वापस मेरठ जाने की सोचती है क्योंकि उसकी पढ़ाई का काफी नुकसान हो रहा था। इसलिए शाम को उसने माँ के पास जाकर मेरठ जाने की बात कही। मीनू जाने की तैयारी कर रात को पलंग पर लेटी लेकिन उसके दिमाग में माँ-पिताजी द्वारा शादी वाली बात ही घूमती रही। मीनू को लगा कि कहीं उसकी बात से माँ-पिताजी को ठेस न लगी हो किन्तु अगले ही पल अपनी मंजिल के बारे में सोच कर विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार करने का निर्णय उसे सही प्रतीत होने लगा। सुबह माँ पिताजी से आशीर्वाद ले मीनू मेरठ आ जाती है। माँ उसकी सफलता और मंगल भविष्य की कामना करती है।

शब्दार्थ

प्रतीक्षा—इन्तजार; **यत्न**—प्रयास; **विचलित**—दु:खी; **मन्द**—धीरे; **गवाही**—साक्षी; **कदापि**—कभी भी; **हड़बड़ाहट**—घबराहट; **प्रस्ताव**—सुझाव; **ठेस**—आघात।

❑❑

अध्याय–12

पाठ का सार

मायाराम जी के घर शादी की तैयारियाँ धूमधाम से चल रही थीं। अमित की शादी में केवल एक महीना शेष था। मायाराम जी अपनी पत्नी से प्रत्येक कार्य की सलाह ले रहे थे क्योंकि अमित इस सब के प्रति उदासीन था। अतः कार्ड छपवाने, जेवर, कपड़ा, खरीदने, रिश्तेदारों को बुलाने से लेकर आदि कई तरह की तैयारियाँ जोरों पर थीं। मायाराम जी की पत्नी विवाह के बाद प्रतिभोज देने की बात कहती है तथा विवाह में अपनी इकलौती बहू पर एक किलो सोने के जेवर चढ़ाने की बात कहती है जिसे सुनकर मायाराम जी क्रोधित होकर अपनी पत्नी को डाँटते हैं कि इतना सोना ढाई लाख रुपये से कम न होगा। तब अमित की माँ कुछ सोना अपने पास से देने को कहती है। अमित के पिता अपनी पत्नी को समझाते हैं कि बुढ़ापे में यदि सोना-पैसा हो तो सेवा भी अच्छी हो जाती है इसलिए अपना सोना बचाकर रखो। मायाराम जी की बात उनकी पत्नी की समझ में आ जाती है। लेकिन फिर साड़ियों की बात पर वह बहू पर कम से कम इक्कीस साड़ियाँ चढ़ाने की बात कहती है। वह कहती हैं कि बड़े घर की लड़की को चढ़ाना तो अच्छा ही पड़ेगा तथा धनीराम जी द्वारा विवाह में पाँच लाख रुपये लगाने की स्मरण कराती हैं।

अपनी पत्नी की यह बात सुन मायाराम जी क्रोधित होकर कहते है कि हमने उनसे कुछ नहीं माँगा वे अपनी मर्जी से इतना पैसा लगा रहे हैं। हम अपनी हैसियत के अनुसार ही जेवर-कपड़ा चढ़ायेंगे। मायाराम जी को क्रोधित हुआ देख अमित और उसकी छोटी बहन मधु भी आते हैं। मायाराम जी उनसे कार्ड छपवाने के विषय में सलाह लेने लगते हैं। तभी धनीमल जी आ जाते हैं। वे बताते हैं कि लेन-देन के विषय में बातचीत करने हेतु आये हैं ताकि मायाराम जी से पूछ सकें कि वह पाँच लाख की रकम को कैसे खर्च कराना चाहते हैं? मायाराम जी कहते है कि उनके यहाँ किसी प्रकार के सुख-सुविधा के साधनों की कोई कमी नहीं है। वे जैसा चाहे वैसा करें। तब धनीराम जी कहते हैं कि उनकी इच्छा तीन लाख का एक फ्लैट विवाह में सरिता को देने की है। फ्लैट का नाम सुनते ही मायाराम जी चौंक जाते हैं तथा कहते हैं कि हमारा घर काफी अच्छा है जिसमें कई कमरे हैं लेकिन धनीमल जी से आजकल के बच्चों के अलग गृहस्थी बसाने की बात सुन मायाराम जी क्रोधित हो जाते हैं। धनीमल जी कहते हैं कि उन्होंने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को भी एक-एक फ्लैट शादी में दिया था तथा लाड़-प्यार में पली सरिता ने कभी एक गिलास पानी भी अपने हाथ से लेकर नहीं पीया। अतः शेष दो लाख कैसे खर्च करने हैं यह आप सोचकर बता दें। कहकर धनीमल जी चले गये।

मायाराम जी समझ गए कि धनीमल जी शादी के बाद अमित को उनसे अलग करने की चाल चल रहे हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। धनीमल जी की बात से उनका सिर चकरा गया था। पत्नी के पूछने पर उन्होंने सारी बात बता दी। जिसे सुन मायाराम जी की पत्नी भी क्रोधित हो गयी और बोली कि स्वयं के बेटा न होने से वे अमित के दूर होने पर होने वाली हमारी पीड़ा का अनुमान नहीं लगा सकते।

अपने माता-पिता की बातें सुनकर अमित आ जाता है। तब मायाराम जी धनीमल की सारी बातें अमित को बताकर कहते हैं कि फैसला तुम्हारे हाथों में है। जैसा चाहो वैसा करो। मायाराम जी की बात से अमित के हृदय में तूफान उठने लगता है। आज अपनी जिंदगी का इतना बड़ा फैसला उसे स्वयं करना था।

शब्दार्थ

प्रीतिभोज—दावत; **बिरादरी**—जाति; **उत्तेजित**—गुस्से में तेज होना; **आमंत्रित**—बुलाना; **जेवर**—गहने; **अभिवादन**—सत्कार करना; **गृहस्थी**—परिवार।

❑❑

अध्याय–13

पाठ का सारांश

हॉस्टल का वातरवरण कुछ शांत हो गया था। परीक्षाएँ प्रारम्भ होने वाली थीं। सभी लड़कियाँ पढ़ाई में व्यस्त थीं। परीक्षा के दिनों में मीनू विशेष रूप से पढ़ाई में जुट जाती। परीक्षा की तैयारियों के लिए कॉलेज का अवकाश हो जाने से मीनू कॉलेज न जाकर अपने कमरे में ही पढ़ती रहती थी और जब पढ़ते-पढ़ते थक जाती तो कुछ अपनी सहेली माया से बात कर लेती।

आज मीनू की तबियत कुछ ठीक नहीं थी। सिर में तेज दर्द और थकान के कारण वह लेट गयी। माया ने देखा कि मीनू का शरीर बुखार से तप रहा है तो स्वयं ही दवाई लेने चली गयी। कमरे में अकेली मीनू बदन में तेज दर्द होने पर अपनी माँ को याद करने लगी। उसे बचपन की स्मृति हो आयी। जब वह आठवीं कक्षा में भी तब तेज बुखार आने पर वह बड़बड़ाने लगी थी। उसकी हालत देख माँ की आँखों में आँसू आ गये थे। माँ ने सारी रात जागकर उसके माथे पर बर्फ की पट्टियाँ रखीं थीं। आज माँ वहाँ होती तो उसकी कितनी सेवा करती लेकिन हॉस्टल में वह किससे बदन दबाने को कहती।

मीनू की सहेली माया भी उसका बहुत ध्यान रखती थी। मीनू को बीमार देख वह डॉक्टर से उसके लिए दवाई लाई। मीनू के लिए चाय बनाई और उसका सिर दबाने लगी। माया के अपनेपन से मीनू के मन मे उसके प्रति स्नेह भर गया। आराम मिलते ही मीनू की आँख लग गयी।

सुबह जगी तो उसके शरीर का दर्द खत्म हो चुका था। माया को सोता देख मीनू के मन में उसके लिए प्यार उमड़ पड़ा। घर से दूर दूसरे ही अपने हो जाते हैं। माया की देखभाल से मीनू का बुखार दो दिन में उतर गया । लेकिन बीमारी ने मीनू को काफी कमजोर कर दिया।

कुछ दिनों बाद मीनू की परीक्षा प्रारम्भ हो गयी। उसे अन्तिम पेपर होने का इन्तजार था ताकि वह शीघ्र ही घर जा सके। परीक्षा समाप्त होते ही दोनों सहेलियाँ अपने घर जाने की तैयारी करने लगीं। मीनू को मीरापुर और माया को अलीगढ़ जाना था। इसलिए दोनों ने एक दूसरे से विदा ली।

शब्दार्थ

चहलकदमी—आराम से धीरे-धीरे चलना; **ज्वर**—बुखार; **बड़बड़ाना**—अपने आप से बातें करना; **झुंड**—समूह; **स्पष्ट**— साफ; **पश्चात्**—बाद में; **प्रात:काल**—सुबह।

❑❑

अध्याय–14

पाठ का सारांश

मीनू ने घर पहुँचकर अपने पिता को पूर्ण रूप से स्वस्थ देखा तो उसे बहुत अच्छा लगा। माँ ने मीनू को सीने से लगाकर परीक्षा के बारे मे पूछा। मीनू बताती है कि उसके पेपर तो अच्छे हो गए। और उनके आशीर्वाद से उसे प्रेरणा मिलती है। लेकिन माँ सफलता के लिए माता-पिता के आशीर्वाद के साथ बच्चों की मेहनत और लगन को भी महत्वपूर्ण मानती हैं।

अगले दिन मीनू अपने कमरे में साप्ताहिक पत्रिका पढ़ रही थी। तभी पिताजी वहाँ आकर बताते हैं कि उसकी बुआजी ने दिल्ली का एक लड़का बताया है जो इंजीनियर है और तीन हजार रुपए महीना कमा रहा है। पिताजी की बात पूरी होने से पहले ही मीनू ने पढ़ाई को बीच में छोड़कर शादी करने से मना कर दिया। पिताजी के आग्रह करने पर मीनू अपनी छोटी बहन आशा की शादी करने को कहती है।

माँ भी मीनू का समर्थन करते हुए उस इंजीनियर लड़के से आशा की शादी के लिए बात करने को कहती है। सबकी सलाह मान पिताजी आशा का फोटो लेकर दिल्ली जाते हैं उन्हें लड़का पसंद आता है। लड़के वालों को केवल सुन्दर लड़की चाहिए थी उनकी और कोई मांग नहीं थी।

आशा को देखने इंजीनियर आलोक के साथ उसके माता-पिता और भाभी आये। साड़ी पहन कर एक छोटी सी बिन्दी लगा आशा तैयार हुई तो उसका रूप और अधिक निखर आया। आशा का रिश्ता तय हो गया। मीनू के पिताजी ने अपनी वकालत पढ़ रही बड़ी बेटी मीनू के अविवाहित होने की बात भी लड़के वालों को बता दी। चार महीने बाद आशा के विवाह की तिथि तय होने पर सब उसकी तैयारियों में लग गए।

मीनू घर में टेलीविजन देख रही थी। नीलिमा के भाई अशोक ने नीलिमा के मायके आने और मीनू को बुलाने की सूचना दी। मीनू माँ की अनुमति ले नीलिमा से मिलने पहुँची। दोनों मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। नीलिमा मीनू को कमरे में बातें करने ले जाती है। नीलिमा का उतरा हुआ चेहरा देख मीनू उससे तबियत के बारे में पूछती है। तब पता चलता है कि नीलिमा माँ बनने वाली है। इतने में अशोक आ जाता है। तीनों बातें करने लगते हैं। मीनू अशोक से बातें करने में पहले संकोच का अनुभव करती थी लेकिन हॉस्टल में रहकर वह आज नि:संकोच बातें कर पा रही थी। नीलिमा ने मीनू से उसकी शादी के बारे में पूछा मीनू के उदास होकर, "कौन करेगा मुझसे शादी ?" कहने पर नीलिमा उसे बताती है कि मेरे अशोक भइया करेंगे वो तेरे बहुत दीवाने हैं और यदि तू हाँ कहे तो तेरी शादी अशोक भइया से करा दूँगी। लेकिन मीनू ने वकालत पूरी करने के बाद ही शादी करने की बात कही। मीनू के हठ के सामने नीलिमा विवश हो जाती है।

घर पहुँचकर मीनू को बार-बार नीलिमा की कहीं बातें याद आने लगती हैं। हर लड़की की तरह मीनू भी अपनी प्रशंसा सुन खुश होती है। वह दुविधा में फंस जाती है। उसकी समझ में नहीं आता कि वह शादी करे या जिस लक्ष्य को लेकर चली उसके लिए मेहनत से पढ़े। आधी रात तक मीनू करवटें बदलती यही सोचती रही। इसी उधेड़-बुन में उसे नींद आ गई।

शब्दार्थ

प्रेरणा—उत्साह; **समर्थन**—सहयोग; **संकोच**—हिचक; **प्रशस्त**—दिखाता है; **लक्ष्य**—उद्देश्य; **तिथि**—तारीख।

❑❑

अध्याय–15

पाठ का सार

मीनू का परीक्षाफल निकला। उसने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। आज वह बहुत अधिक प्रसन्न थी। मीनू की दो महीने की छुट्टियाँ समाप्त हो चली थीं। अभी तक वह आशा की शादी की तैयारियों में व्यस्त थी। दो दिन बाद उसे हॉस्टल जाना था अत: जाने की तैयारी करने लगी। इन दो महीने घर पर रहने से उसे घर छोड़ने में बहुत अजीब सा लग रहा था।

हॉस्टल पहुँच मीनू माया से मिली तो दोनों बहुत प्रसन्न हुईं। कॉलेज खुलते ही मीनू हमेशा की तरह नियमित रूप से पढ़ने लगी।

रविवार के दिन मीनू आग्रह कर माया को साथ ले बाजार गयी वहाँ उसे आशा के लिए साड़ी और चप्पल खरीदनी थी। साड़ियाँ खरीद कर दोनों चप्पल पसंद करने लगीं तभी मीनू को अमित दिखाई दिया। अमित एकटक लगातार देख रहा था वह मीनू से बात करना चाहता था। अमित को अपनी ओर आता देख मीनू ने माया से वहाँ से चलने को कहा। लेकिन माया मीनू की इस जल्दबाजी का कारण नहीं समझ पा रही थी। मीनू बेचैन हो उठी। मीनू को अमित के घरवालों का झूठ बोलकर धोखा देने की बात याद हो आती है। इसलिए अमित से मिलते ही उसका हृदय घृणा से भर जाता है।

मीनू के हाथ में साड़ियों के डिब्बे देखकर हॉस्टल की सारी लड़कियाँ उसके पास आ जाती हैं और सारी साड़ियों खोलकर देखती हैं। माजाक करती हुई कोई मीनू से उसकी शादी के बारे में पूछती है तो कोई शादी की बात छुपाने पर नाराजगी व्यक्त करती है, तो कोई मीनू के भावी पति के बारे में पूछती है। इस तरह के प्रश्नों की बौछार में वे मीनू को बोलने का ही अवसर नहीं देतीं। सबके शांत होने पर मीनू उन्हें अपनी छोटी बहन आशा के विवाह के बारे में बताती है कि ये साड़ियाँ आशा के लिए खरीदी हैं। इतना सुन सब चुपचाप वहाँ से चली जाती हैं। किसी ने मीनू से कुछ पूछने का अब साहस नहीं होता। मीनू भी सब सामान लेकर अपने कमरे में चली गयी।

शब्दार्थ

व्यस्त—काम में लगे होना; **मोह**—लगाव; **अवसर**—समय; **एकटक**—लगातार; **यद्यपि**—फिर भी; **एकत्रित**—इकट्ठा; **स्मृतियाँ**—यादें; **झुंड**—समूह।

❑❑

अध्याय–16

पाठ का सार

आशा की शादी में दो दिन बचे थे। मीनू भी तीन दिन पहले ही मेरठ से घर आकर माँ के साथ काम में लग गयी। अभी काफी काम होने बाकी थे। आशा की शादी होता देखकर मीनू को छोटी बहन की शादी पहले होने का कभी एहसास नहीं हुआ। बुआजी के आने पर मीनू के माता-पिता कुछ चिन्तित थे। अत: उन्होंने अपनी बहन से कहा कि वे मीनू से उसकी शादी के विषय में कुछ न कहें।

बुआजी ने मीनू के पिता की बात तो मान ली लेकिन उनसे मीनू की शादी किए बिना आशा की शादी करने की वजह पूछने लगीं। दयाराम जी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि वकालत की पढ़ाई के बीच मीनू की शादी नहीं हो सकती थी। इतना कह वह कामों में व्यस्त हो गए।

अगले दिन सुबह से ही शादी की अनेक रस्में शुरू हो गयीं। एक रस्म के अनुसार बड़ी बहन को आरती उतारनी होती है। मीनू की माँ ने मीनू को रस्म करने को कहा तो बुआजी ने टोका कि रस्म के लिए बहन को विवाहित होना चाहिए। यह सुनकर मीनू का चेहरा मुरझा गया। माँ मीनू की मन:स्थिति को समझ बुआजी से कहती हैं कि आजकल इन बातों को कोई नहीं मानता। इसलिए मीनू ही सारी रस्में करेगी। इतना कह वह थाल सजाने लगीं।

मीनू के द्वारा रस्में शुरू करते ही आस पड़ोस की महिलाएँ मीनू पर कटाक्ष करने लगी। जिससे वह बेचैन हो उठी लेकिन संयम से सारी रस्में पूरी कर वह अपने कमरे में गयी और एकांत पाकर उसके आँसू आ गए। लेकिन आशा के आने पर उसने स्वयं को संभाला। मेहमानों के आ जाने से घर में काफी रौनक थी। शाम होने पर मीनू व आशा की सहेलियों ने आशा को तैयार किया। लाल रंग के लहंगे में सजी आशा के रूप की सबने प्रशंसा की। मीनू ने भी आशा के विवाह में हरे हरे रंग की साड़ी पहनी व हल्का सा मेकअप किया। मीनू तैयार होकर सुन्दर लग रही थी। असुविधा से बचने के लिए उसने साड़ी बांधकर पिन लगा ली थी। मीनू तैयार हो मेहमानों का स्वागत करने लगी। तभी कुछ महिलाओं को उसने स्वयं के बारे में बातें करते सुना। वे महिलाएँ मीनू के विवाह की बाते करती हुई कहती हैं कि अवश्य ही इसके बहुत नखरे होंगे तभी विवाह नहीं किया। जब एक महिला मीनू के वकालत की पढ़ाई के कारण विवाह न करने की बात बताती है तो वह बेटियों की पढ़ाई के चक्कर में आधी उम्र निकल जाने की कहती हुई मीनू पर कटाक्ष करती है। ये सब बातें सुन मीनू सोचती है कि उसके शादी करने या न करने से किसी को क्या चिन्ता है? क्या इसमें उसे अपनी तरह से जीने का कोई अधिकार नहीं? कोई उसके मन की पीड़ा नहीं समझ पाता था।

मीनू विवाह के हर कार्यक्रम में भाग लेती है। विदाई के समय आशा उससे लिपटकर खूब रोती है। माँ-पिताजी के भी आँसू बहने लगते है। मीनू सोचती है कि इतने वर्षों तक लाड़-प्यार से पाली बेटी को सदा के लिए दूसरे के हाथ सौंप देते हैं। बिटिया पराया धन हो जाती है। आशा के विदा होते ही माँ फूट-फूटकर रोने लगती है। पिताजी अपने आँसू किसी तरह रोककर अपना काम करने लगते है। माँ को दु:खी देख मीनू को लगता है कि वह कभी शादी नहीं करेगी। और सदैव माँ के पास रहेगी। माँ ने अपनी चिन्ता किए बिना सदैव हमारी खुशी तथा सुख-सुविधा का ध्यान रखा। यह सोचते-सोचते उसके मन में माँ के प्रति विचित्र प्रेम उमड़ पड़ा। वह माँ को सांत्वना देती हुई कहती कि तुम्हारी दूसरी बेटी तुम्हें छोड़कर कभी नहीं जायेगी हमेशा तुम्हारे पास रहेगी। मीनू की बात सुन माँ उसे गले लगा लेती है और कहती है कि बेटी तो पराया धन होती है और अपने ही घर में शोभा देती है।

चार दिन तक मीनू घर को व्यवस्थित करने में माँ की मदद करती है। अब उसे अपनी पढ़ाई की चिन्ता होने लगती है इसलिए माँ से अनुमति ले वह मेरठ जाना चाहती है। यद्यपि माँ को अकेला छोड़कर जाना उसे अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन वह विवश थी। माँ स्वयं मीनू को मेरठ जाने की अनुमति दे देती है।

शब्दार्थ

शंका–शक; **एहसास**–मालूम होना; **मुरझाना**–उदास होना; **संयम**–धैर्य; **कटाक्ष**–व्यंग्य; **विचित्र**–अजीब **अव्यवस्थित**–अस्त-व्यस्त होना; **इशारा**–संकेत।

❑❑

अध्याय–17

पाठ का सार

आशा के विवाह को पाँच महीने हो चुके थे। माँ मीनू को पत्र लिखती रहती थी जिनसे माँ के अकेलेपन का आभास होता था। पत्र पढ़कर मीनू का व्याकुल मन घर जाने को होता। माँ अपने पत्र में हमेशा मीनू को लगन से पढ़ाई करने और अपने पाँवों पर खड़ी होने की शिक्षा देतीं।

आज मीनू माँ का पत्र पाकर बहुत प्रसन्न थी। माँ के पत्र में उनका प्यार झलक रहा था। तभी नीलिमा के पति सुरेन्द्र के अकेले आने पर मीनू आश्चर्यचकित थी। सुरेन्द्र जी ने बताया की नीलिमा ने एक पुत्र को जन्म दिया है। वे अपने बेटे के नामकरण संस्कार का निमंत्रण देने आये थे। सुरेन्द्र जी के जाने के बाद मीनू उस कार्ड को देखकर सोचती है कि नीलिमा बहुत भाग्यशाली है। उसे सुन्दर व चाहने वाला पति मिला और एक बेटे की माँ बनने का सौभाग्य भी। नामकरण संस्कार वाले दिन मीनू कॉलेज से छुट्टी लेकर नन्हें बच्चे के लिए बाजार से उपहार लेकर नीलिमा के घर पहुँची। दोनों मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। नीलिमा ने अपने माँ बनने के सभी अनुभव मीनू को सुनाए। इसी बीच सुरेन्द्र जी के कुछ मित्र भी कमरे में आए। उनमें अमित भी था। वह सुरेन्द्र जी का घनिष्ठ मित्र था। मीनू अमित को वहाँ देख चौंक गयी। अमित को देखते ही मीनू का मन घृणा से भर गया। सुरेन्द्र जी के मित्रों के जाने के बाद नीलिमा ने मीनू को अमित के बारे में बताते हुए कहा कि मेरठ के धनी परिवार में इसका रिश्ता तय होकर टूट गया क्योंकि लड़की वाले अपनी बेटी को एक फ्लैट दे उसकी अलग गृहस्थी बसाना चाहते थे लेकिन इकलौता बेटा अपने माता-पिता से अलग रहे, यह संभव नहीं था। अमित उस लड़की से शादी नहीं करना चाहता था लेकिन माता-पिता का विरोध न कर सका। अमित को मीरापुर वाली लड़की पसंद थी और वे उसी से शादी करना चाहते हैं।

नीलिमा को यह नहीं पता था कि मीरापुर वाली लड़की मीनू ही है। अमित की बात चलने या देखने पर पहले मीनू के मन में घृणा उत्पन्न हो जाती थी लेकिन अमित की सच्चाई जान मीनू को अमित की बातें सुनना बुरा नहीं लग रहा था। कार्यक्रम समाप्त होने तक नौ बज चुके थे। नीलिमा के कहने पर सुरेन्द्र जी मीनू को हॉस्टल तक छोड़ने आए। रात के दस बजे तक काम में व्यस्त रहने के बाद अमित नीलिमा के पास गया। लेकिन मीनू दिखाई न दी। वह कार्य समाप्त कर मीनू से बात करना चाहता था। उसने नीलिमा से उसकी सहेली के बारे में पूछा तो नीलिमा ने बताया कि वह हॉस्टल चली गयी। वह मेरठ में ही वकालत कर रही है। मेरठ के किसी लड़के द्वारा नापसंद किये जाने से वह निराश हो गयी। उसने अब पढ़-लिखकर अपने पाँव पर खड़े होने की लगन जगा ली है।

नीलिमा की बात सुन अमित को आत्मग्लानि हुई। उसी के कारण मीनू अपने जीवन में इतनी निराश हो चुकी है। अमित ने नीलिमा को नहीं बताया कि उसी ने मीनू के दिल को ठेस पहुँचायी है। अमित उदास होकर वहाँ से चला गया। रास्ते भर अमित के सामने मीनू का मासूम व भोला चेहरा घूमता रहा जिसने अमित का दिल मोह लिया था।

शब्दार्थ

निर्णय–फैसला; **व्याकुल**–बेचैन; **आत्मग्लानि**–अपने मन में दुःख; **तल्लीन**–किसी काम में मग्न; **नामन्जूर**–स्वीकार न होना; **रिश्ता**–सम्बन्ध।

❑❑

अध्याय–18

पाठ का सार

मीनू ने दूसरे वर्ष भी वकालत की परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। अब अन्तिम वर्ष के लिए वह कठिन परिश्रम कर रही थी। सफलता की तीसरी मंजिल की तीसरी सीढ़ी भी उसे प्रथम श्रेणी से ही पार करनी थी।

कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन के कारण कॉलेज में पढ़ाई भी नहीं चल रही थी। मीनू ने किसी प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था इसलिए उसने पढ़ाई से थककर नीलिमा के घर जाने का निश्चय किया। नीलिमा को बिस्तर पर पड़ा देख मीनू ने उसके सिर पर हाथ रखा तो मीनू को पता चला कि नीलिमा को तेज बुखार है। उसके पति सुरेन्द्र दवाई लेने गए थे इसलिए वह अकेली थी।

अपने बेटे अनूप को रोता देख नीलिमा ने मीनू से कहा कि अनूप को मेरे पास लिट दो। लेकिन मीनू ने पालने में ही अनूप को सुला दिया। सुरेन्द्र जी नीलिमा की दवाई लाते हैं। वे मीनू को नीलिमा के पास बिठाकर फैक्ट्री चले जाते हैं। दवाई से कुछ आराम मिलने पर नीलिमा को झपकी आ गयी। मीनू पास बैठी पत्रिका पढ़ने लगी। जब नीलिमा की आँखें खुली तो मीनू कहती है कि अकेले बैठे वह बोर हो गयी होगी मीनू मना कर उसकी तबियत के बारे में पूछती है।

नीलिमा मीनू से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछती है तो मीनू बताती है कि पिछले दोनों वर्ष तो प्रथम श्रेणी प्राप्त की है इस बार देखो क्या होता है? नीलिमा मीनू को अशोक भइया के बारे में बताती है कि वे दो वर्ष के लिए पढ़ाई करने अमेरिका गये हैं। लेकिन विदेश जाने के बाद सब वहीं बस जाते हैं। मीनू इस पक्ष में नहीं थी। उसका मानना था कि चन्द पैसों के लिए विदेश में जाकर नहीं बसना चाहिए। बुद्धिजीवियों के विदेश में जाकर बसने से हमारे देश की उन्नति नहीं हो पायेगी। नीलिमा भी मीनू का समर्थन करते हुए कहती है कि आजकल सब इस बात को नहीं समझते। इसी बीच अनूप रोने लगता है। मीनू उसे गोद में लेकर घुमाने लगती है। तभी सुरेन्द्र जी भी फैक्ट्री से आ जाते हैं।

घड़ी पर निगाह जाते ही मीनू हॉस्टल जाने लगती है। नीलिमा सुरेन्द्र के द्वारा छोड़ आने की बात कहती है लेकिन मीनू को बीमार नीलिमा को अकेले छोड़ना ठीक नहीं लगता इसलिए वह स्वयं ही हॉस्टल चली जाती है।

शब्दार्थ

आग्रह—निवेदन; **परिश्रम**—मेहनत; **बुद्धिजीवी**—विद्वान; **वार्तालाप**— बातचीत; **झटपट**—तुरन्त; **घृणा**—नफरत; **हॉस्टल**—छात्रावास।

❑❑

अध्याय-19

पाठ का सार

अमित का रिश्ता टूटने से घर में उदासी छा गयी थी। मायाराम जी और अमित फैक्ट्री चले जाते, मधु अपने कॉलेज चली जाती। घर में अकेली अमित की माँ को बहू की कमी महसूस होती। उन्होंने कई बार अमित से विवाह के विषय में बात की लेकिन वह उनकी बात का कोई उत्तर न देता। सुबह लगभग ग्यारह बजे डाकिए ने आकर माँ को एक लिफाफा दिया। लिफाफा खोला तो उसमें उनके भतीजे के विवाह का कार्ड था। वह बहुत प्रसन्न हुई। वह कई वर्षों से अपने भाई से नहीं मिली थी। सोचा कि शादी के बहाने कुछ दिन वहीं रुकेगी। मधु के पूछने पर उन्होंने अपने भतीजे दीपक की शादी के बारे में बताया कि शनिवार की शादी है और रविवार को प्रीतिभोज है। मधु परीक्षा प्रारम्भ होने के कारण विवाह में नहीं जा सकती थी। यह सोच मधु उदास हो गयी थी। मधु की परीक्षा के कारण माँ चिन्तित थी क्योंकि वे उसे अकेले छोड़कर नहीं जा पायेंगी। मधु के कॉलेज चले जाने पर अमित घर आता है और कार्ड देख कर माँ से पूछता है तो माँ दीपक की शादी के बारे में बताती है। माँ कहती है कि दीपक तुमसे दो वर्ष छोटा है और उसकी शादी हो रही है। बड़े होने पर भी तुम अभी तक अविवाहित हो। धनीमल जी के यहाँ से रिश्ता टूटने पर तुम शादी के लिए तैयार क्यों नहीं होते? मधु की भी शादी करनी है। मैं चाहती हूँ कि पहले तुम्हारी शादी हो। तुम मधु से काफी बड़े हो और बहू आने से मधु की शादी में भी मदद मिल जायेगी।

माँ की बात सुन अमित ने कहा कि वे उसकी शादी के चक्कर में न पड़कर मधु का विवाह कर दें। उसका शादी करने का कोई इरादा नहीं। माँ अमित से विवाह न करने का कारण पूछती है और कहती है कि मधु की परीक्षा के चलते वह दीपक के विवाह में कैसे जा पायेंगी? अमित उनसे सभी समस्याओं का समाधान हो जाने की बात कहकर चला जाता है।

माँ को अमित के परिवर्तित व्यवहार से चिन्ता होने लगती है। अमित पहले कभी उनकी बात को इस तरह से नहीं टालता था। उनके मन में तरह-तरह के विचार आने लगते हैं कि कहीं अमित ने शादी का विचार तो नहीं त्याग दिया? या फिर उसने कोई लड़की पसंद कर ली है। इन विचारों के चलते उन्हें अमित के घनिष्ठ मित्र सुरेन्द्र का स्मरण हो आता है। वे सोचती हैं शायद सुरेन्द्र अमित के मन की बात जानता होगा। अत: वे एक-दो दिन में सुरेन्द्र से मिल सारी बात जानने के लिए उसके घर जाने का निश्चय करती हैं।

शब्दार्थ

अखरना—चुभना; **इरादा**—विचार; **प्रीतिभोज**—दावत; **एकटक**—लगातार; **अवगत**—जानना।

❑❑

अध्याय-20

पाठ का सार

वकालत की अन्तिम वर्ष की परीक्षा के लिए मीनू ने पूरे साल लगन व उत्साह से पढ़ाई की जिससे उसके सभी पेपर बहुत अच्छे हुए। आज अन्तिम पेपर देने के बाद वह स्वयं को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र महसूस कर रही थी। मीनू की सभी सहेलियाँ आज अन्तिम पेपर के बाद बहुत प्रसन्न थीं। यद्यपि उनके चेहरों पर रात-दिन पढ़ाई की थकान साफ दिखाई दे रही थी। माया आते ही मीनू का हाथ पकड़कर आगे ले गयी और

उसने मीनू से आज पिक्चर देखने की बात कही। मीनू नीलिमा के घर जाने की सोच रही थी लेकिन माया के आग्रह पर मीनू तैयार हो जाती है। घर जाने के बारे में मीनू कहती है कि वह दो दिन बाद मीरापुर जायेगी। एक दिन नीलिमा के यहाँ और दूसरे दिन घर के लिए कुछ सामान खरीदने बाजार जायेगी। दोनों तीन बजे वाले शो में पिक्चर देखने जाती हैं। वहाँ उनके कुछ और सहपाठी भी पिक्चर देखने आए थे। पिक्चर देख उन्होंने बाहर किसी होटल में ही खाना खाया। हॉस्टल लौटते हुए वे काफी प्रसन्न थीं। उन्हें वापस कमरे में पहुँच पढ़ाई नहीं करनी थी। आज वे आराम की नींद सोयेंगी।

जैसे ही मीनू अपने कमरे का ताला खोलने लगी उसे नीलिमा व सुरेन्द्र जी आते दिखाई दिए। नीलिमा को देख मीनू प्रसन्न होकर बताती है कि वह कल उसके यहाँ आने वाली थी। सुरेन्द्र जी को उदास देख मीनू उनकी तबियत के बारे में पूछती है। तब नीलिमा उदास स्वर में बताती है कि तीन दिन पहले अमित की कार के ब्रेक फेल हो जाने से कार पेड़ से टकरा गयी। अमित की हालत बहुत नाजुक है। यह सुनते ही मीनू चौंक जाती है और अमित की चोट के बारे पूछती है। नीलिमा बताती है कि अमित के हाथ-पैरों की हड्डियाँ टूटकर चकनाचूर हो गयीं और पूरे शरीर पर चोट लगी है। अमित तुम्हें याद कर रहा था। यदि हो सके तो थोड़ी देर उनसे मिल आओ। मीनू कल सुबह मिल आने की कहती है। नीलिमा और उसके पति के जाने के बाद मीनू सोने की कोशिश करती है लेकिन मीनू की आँखों के सामने अमित का चेहरा घूमता रहता है। जो स्वयं को निर्दोष बताना चाहता है। अमित के प्रति मीनू के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया था। अत: अमित के एक्सीडेंट की बात ने उसे बेचैन कर दिया।

प्रात: होते ही वह तैयार हो अमित से मिलने मेडिकल कॉलेज पहुँची तो उसे पता चला कि दस बजे से पहले मरीजों से मिलने की अनुमति नहीं है। अत: एक घण्टे तक बाहर इन्तजार करने के लिए उसने एक पत्रिका खरीदी और बेंच पर बैठकर पढ़ने लगी। इन्तजार का एक-एक पल काटना कठिन हो रहा था। दस बजते ही मीनू अमित के कमरे की ओर चल दी। वहाँ अमित पलंग पर लेटा था। मीनू को देखते ही उसके उदास चेहरे पर प्रसन्नता आ गई। मीनू पास में स्टूल पर चुपचाप बैठ गयी। मीनू उसकी तबियत और दुर्घटना के कारण के बारे में पूछती है तो अमित बताता है कि यह सब उसके बुरे कर्मों का फल है। उसने अपनी नासमझी में मीनू की भावनाओं को ठेस पहुँचायी है। वह मीनू को सारी बात बताना चाहता था। लेकिन मौका नहीं मिल पाया।

मीनू अमित से तबियत ठीक न होने के कारण उसे आराम करने और शांत हो जाने को कहती है। लेकिन अमित उससे कहता है कि वह उसे पसंद थी पर माता-पिता के सामने बोलने का साहस न कर पाया, यही उसकी भूल थी जिसकी उसे सजा मिली। मैं तुम्हें अपनी जीवन-संगिनी मान तुम्हारी आज तक प्रतीक्षा करता रहा लेकिन अब विधाता ने मुझे तुम्हारे योग्य नहीं छोड़ा। मैं तुम्हारी वकालत पूरी होने का इन्तजार कर रहा था। अमित को रोता देख मीनू भी भावुक हो गयी और उसकी आँखों में आँसू आ गये।

अमित कहता है कि वह अपने दिल की बात उसे बताकर अपनी गलती की माफी माँगना चाहता था इसलिए उसने मीनू को बुलवाया है। ईश्वर तो उसे सजा दे चुका है। वह मीनू से भी क्षमा चाहता है। मीनू कहती है कि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं यह भाग्य का खेल है। जब तुमने अपराध ही नहीं किया तो क्षमा किस बात की? अमित मीनू से कहता है कि वह मृत्यु शैय्या पर लेटा है और अगर वह उसे क्षमा न करेगी तो वह चैन से मर भी न पायेगा।

मीनू अमित को धैर्य बँधाती है कि वह शीघ्र ही ठीक हो जायेगा। तभी अमित की माँ आ जाती हैं वह मीनू को नहीं पहचान पाती। अमित माँ को बताता है कि यह मीरापुर वाली मीनू है। माँ के मीनू से मेरठ में रहने के विषय में पूछने पर मीनू कहती है कि वह मेरठ में रहकर वकालत कर रही है। तीसरे वर्ष की परीक्षा हो चुकी है। अमित के बारे में बात करते हुए माँ की आँखों में आँसू आ जाते हैं। मीनू ने कहा आण्टी, चिन्ता मत करो। अमित बिल्कुल ठीक हो जायेंगे। अमित की हालत देख मीनू के मन में उसके प्रति प्यार व दया उमड़ पड़ी। वह उसकी सेवा करना चाहती थी लेकिन चलने का निर्णय ले वह उठ खड़ी हुई। मीनू को जाता देख अमित उदास हो गया। मीनू को रोकने का उसमें साहस नहीं था। अमित को उदास देख मीनू वहाँ और न ठहर सकी।

शब्दार्थ

परतन्त्र–गुलाम; **विघ्न**–रूकावट; **अरमान**–इच्छा; **सहपाठी**–साथ पढ़ने वाले; **वर्जित**–प्रतिबन्धित; **प्रतिष्ठित**–सम्मानित।

❑❑

अध्याय–21

पाठ का सार

मीनू का मन अमित को लेकर कुछ उदास था। हॉस्टल पहुँचकर मीनू ने अपना सामान बाँधा। अगले दिन उसे नीलिमा के घर जाना था परन्तु उसका मेरठ में दिल नहीं लग रहा था। इसलिए वह मीरापुर चली गयी। घर पहुँचने पर मीनू को देख सभी आश्चर्यचकित थे क्योंकि मीनू ने अगले दिन आने को कहा था। सबने कुशलक्षेम पूछ परीक्षा के बारे में पूछा। मीरापुर आकर भी मीनू न जाने किन विचारों में खोई थी? माँ ने उसकी उदासी का कारण पूछा तो मीनू ने थकान का बहाना बनाया। मीनू को मीरापुर आए दो महीने हो जाने पर भी वह कभी खुश नहीं नजर

आई। माँ के पूछने पर वह टाल देती। माँ के मित्रतापूर्ण व्यवहार से मीनू को एहसास होता कि माँ, माँ होने के साथ उसकी मित्र भी है। तभी मीनू के पिताजी उससे विवाह के बारे में पूछते हैं तो मीनू कुछ सोच-विचार कर प्रैक्टिस शुरू करने के बाद विवाह करने की बात कहती है। पिताजी के जोर देने पर मीनू बात को पलट देती है और परीक्षाफल के बाद मेरठ में रजिस्ट्रेशन करा प्रैक्टिस शुरू करने को कहती है। पिताजी के जाने के बाद माँ के पूछने पर मीनू मेरठ वाले अमित के एक्सीडेंट के बारे में बताती है और कहती है कि अमित का रिश्ता तय होकर टूट गया था। उसके बाद अभी तक शादी नहीं हुई है। अमित नीलिमा के पति सुरेन्द्र का घनिष्ठ मित्र है। उन्हीं के यहाँ अमित से मेरी मुलाकात हुई थी। लेकिन वहाँ अमित से कोई बात नहीं हुई। नीलिमा से अमित के बारे में जानकर कल मैं अमित से अस्पताल मिलने गयी थी उसने ही सारी बातें बतायीं।

मीनू की माँ तीन वर्ष के बाद भी अमित की शादी न होने के बारे में पूछती है तो मीनू बताती है कि अमित के माता-पिता द्वारा मेरा रिश्ता अस्वीकार करने से हुई मेरी पीड़ा को नीलिमा से जान अमित को बहुत आत्मग्लानि हुई।

मीनू की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि रोहित प्रसन्न मुद्रा में आया। उसने बताया कि मीनू दीदी का परीक्षाफल आया है। अपने परीक्षाफल को जान मीनू को आभास हुआ कि वह एक अबला नारी नहीं है वरन् उसमें बहुत कुछ करने की क्षमता है। मीनू की सफलता देख माँ की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। पिताजी भी परीक्षाफल देखकर मिठाई ले आये। सर्वप्रथम मीनू का मुँह मीठा करा उसे सफलता का आशीर्वाद दिया और उसके मंगल भविष्य की कामना की।

मीनू ने मेरठ में प्रैक्टिस शुरू करने के लिए रजिस्ट्रेशन करा लिया था। मीरापुर में रहते हुए उज्ज्वल भविष्य की आशा नहीं की जा सकती थी। अभी तक मीनू मेरठ के हॉस्टल में ही रहती थी परन्तु अब उसे एक छोटा सा घर बसाकर रहना था। पिताजी ने नीलिमा के पति को पत्र लिखकर एक कमरे का इन्तजाम करा लिया था। माँ मीनू के अकेले मेरठ में रहने को लेकर चिन्तित थी इसलिए उन्होंने महरी की छोटी बेटी राजो को मीनू के साथ भेजने का निश्चय किया।

मीनू के इस बार मेरठ जाने पर माँ दु:खी न होकर प्रसन्न थी, क्योंकि आज उनकी बेटी इस योग्य बन चुकी थी कि वह समाज में अपना ऊँचा स्थान बनाकर रह सके।

शब्दार्थ

घृणा—नफरत; **कुशलक्षेम**—हाल-चाल; **सान्त्वना**—तसल्ली; **आत्मग्लानि**—स्वयं पर लज्जित होना; **महरी**—नौकरानी; **धूमिल**—अस्पष्ट।

❑❑

अध्याय–22

पाठ का सार

मेरठ की साफ सुथरी बस्ती में मीनू का छोटा सा कमरा था जिसे उसने नीलिमा व राजो की मदद से पूरी तरह व्यवस्थित कर लिया था। राजो के साथ रहने से मीनू को अकेलापन महसूस नहीं होता। मीनू सुबह की कचहरी जाकर शाम को थकी हुई लौटती। कभी ज्यादा अकेलापन लगने पर नीलिमा के घर चली जाती।

नीलिमा से मीनू को पता चला कि अमित अभी अस्पताल में ही है। इसलिए मीनू ने कचहरी से लौटते समय अमित से मिलने का निश्चय किया। अस्पताल जाते समय मीनू के मन में एक अन्तर्द्वन्द्व था कि अस्पताल जाये या नहीं। लेकिन उसके कदम उसे अस्पताल ले गए। वहाँ अमित लेटा हुआ माँ से बातें कर रहा था। मीनू को देखते ही अमित के मुरझाए चेहरे पर खुशी छा गयी। उन दोनों ने मीनू को स्नेहपूर्वक बैठाया।

अमित की माँ के पूछने पर मीनू ने वकालत प्रथम श्रेणी से पास कर मेरठ में ही प्रैक्टिस शुरू करने की बात बतायी। जिसे सुन अमित और उसकी माँ दोनों प्रसन्न हुए। अमित की तबियत के बारे में पूछने पर अमित ने कहा कि पहले से कुछ सुधार है। माँ ने बताया कि डॉक्टर पूरी कोशिश कर रहे हैं कि अमित की सभी हड्डियाँ ठीक से जुड़ जायें। इस समय दवा के साथ दुआ की भी आवश्यकता है। अमित को चार महीने और अस्पताल में ही रहना पड़ेगा। चार महीने और सुन मीनू दंग रह जाती है।

शाम के छ: बज चुके थे। मीनू आण्टी से आज्ञा ले घर की ओर चली। घर पर नन्हीं राजो उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। मीनू के देर से घर आने की वजह पूछने पर मीनू राजो पर क्रोधित हो गयी कि इस लड़की को मुझ से सवाल पूछने का क्या अधिकार है? लेकिन अगले ही पल उसे ध्यान आया की राजो ही यहाँ उसका एकमात्र सहारा है। राजो उसके लिए खाना लाई। दोनों ने साथ बैठकर खाना खाया। बिस्तर पर लेटी मीनू के दिमाग में अमित का उदास चेहरा घूम रहा था। मीनू सोचती है कि उसी के कारण अमित ने अभी तक विवाह नहीं किया लेकिन अमित के अपाहिज रहने पर क्या मीनू को उससे विवाह करना चाहिए। यह एक्सीडेंट विवाह के बाद भी हो सकता था। अमित के इतने वर्ष प्रतीक्षा करने पर क्या वह उसके अरमानों का ठुकरा दे? आदि बातें सोच मीनू बेचैन हो गयी।

शब्दार्थ

निराश–हतोत्साहित; **स्मृति**–यादें; **व्याकुल**–परेशान; **दृष्टि**–निगाह; **चक्र**–पहिया; **कचहरी**–अदालत; **अन्तर्द्वन्द्व**–दुविधा।

❑❑

अध्याय–23

पाठ का सार

आठ महीने के भीतर मीनू ने स्वयं को वकालत के क्षेत्र में स्थापित कर लिया था। देखने में पतली और छोटी-सी मीनू की आवाज में जोश था। उसकी आवाज रौबीली थी। मीनू को देखकर उसके इतने साहसी होने का विश्वास न होता। शीघ्र ही उसकी बुलन्दी की चारों ओर चर्चा होने लगी।

मीनू पिछले आठ महीने में अमित से केवल चार बार मिली। पिछले दो महीनों से अमित से मिलने न जा सकी थी। रविवार को वह नीलिमा के घर जाने की सोच रही थी तभी आशा अपने पति और बेटे के साथ मीनू के घर आ गयी। माँ बनने के बाद आशा काफी मोटी हो गयी थी। आशा छोटी होने के बावजूद मीनू से बड़ी प्रतीत हो रही थी। आशा का बेटा रंग रूप में अपनी माँ के समान था। मीनू के उस नन्हें बालक को गोदी लेते ही वह रोने लगा। आशा के पति ने मजाक करते हुए कहा कि बेटे रोओ मत। आप मौसी की गोद में हो और मौसी तो माँ-सी ही होती है। उनकी इस बात पर सबको हंसी आ गयी। आशा की गोद में उस नन्हें बालक को देखकर मीनू का हृदय मातृत्व की भावना से भर गया। उसे लगा कि माँ बनने का कितना सुखद अनुभव होता है। आशा बहुत भाग्यशाली है।

आशा के पति के बाजार जाने पर दोनों बहनें बातें करने लगीं। आशा के मीनू से विवाह के बारे में पूछने पर वह टालने लगी लेकिन आशा ने कहा कि इतनी लम्बी जिन्दगी अकेले नहीं काटी जा सकती है। एक ऐसी अवस्था आती है जब अपने पति और बच्चों का ही सहारा होता है। "अभी इतनी जल्दी भी क्या है? फिर सोच लेंगे इस बारे में।" यह कहकर मीनू के उठ जाने से आशा ने विषय बदलते हुए परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में पूछा तो मीनू ने बताया कि माँ-पिताजी का स्वास्थ्य ठीक है और रोहित इंजीनियरिंग कर दिल्ली में नौकरी कर रहा है, जहाँ उसे तीन हजार रूपये महीना मिलता है। अगले दिन प्रात:काल ही आशा पति के साथ दिल्ली चली गयी क्योंकि आशा के पति को दिल्ली में आवश्यक कार्य था और आशा भी दिल्ली में रोहित से मिल लेगी।

आशा के जाने के बाद घर में सन्नाटा छा गया।

शब्दार्थ

हितैषी–हित चाहने वाला; **यद्यपि**–फिर भी; **मातृत्व**–ममत्व; **प्रैक्टिस**–अभ्यास; **इकट्ठी**–एकत्र।

❑❑

अध्याय–24

पाठ का सार

इंजीनियरिंग पूरी करके रोहित की दिल्ली में अच्छी कम्पनी में नौकरी लग गयी। उसके विवाह के लिए कई रिश्ते आने लगे लेकिन मीनू के पिताजी मीनू की शादी के बाद रोहित की शादी करना चाहते थे। दिल्ली के एक सज्जन रोहित के लिए रिश्ता लेकर आए थे। मना करने पर भी अपनी बेटी का फोटो छोड़ गए। फोटो दयाराम जी व उनकी पत्नी दोनों को पसन्द था। लेकिन फिर भी रोहित का विवाह पहले नहीं करना चाहते थे। दयाराम जी ने अपनी पत्नी से मीनू को समझाकर विवाह के लिए तैयार करने को कहा। मीनू की माँ कहती है कि उसका विवाह किए बिना हम सुखी नहीं रह सकते। न ही समाज चैन लेने देगा। लोग तरह-तरह की बातें बनाने लगे हैं।

वे दोनों अभी बात कर ही रहे थे कि दरवाजे की घंटी बजने पर दयाराम जी दरवाजा खोलते हैं। सामने मायाराम जी और अमित को खड़ा देख आश्चर्य चकित रह जाते है। उन्हें यकीन नहीं होता कि सपना है या हकीकत। माँ भी अमित को पूर्ण रूप से स्वस्थ देख विस्मित होती है। माँ के द्वारा तबियत के बारे में पूछने पर अमित बड़ी आत्मीयता से बताता है कि वह अब पूरी तरह ठीक है। मायाराम जी बड़े संकोच के साथ चार वर्ष पहले की गई गलती के लिए क्षमा माँगते हैं। पहले मीनू का रिश्ता ठुकराने की भूल करने के बाद वे मीनू का रिश्ता अमित के लिए माँगते हैं। लेकिन दयाराम जी कहते हैं। कि मीनू अभी शादी के लिए तैयार नहीं है और बिना उसकी सहमति के वे कुछ नहीं कह सकते। मायाराम जी बताते हैं कि अमित के लिए कई रिश्ते आये पर अमित ने हाँ ही नहीं की। इतना सुनकर दयाराम जी आश्चर्य चकित हो मीनू से बात कर सूचित करने को कहते हैं। मायाराम जी और अमित के जाने पर दयाराम जी को एहसास होता है कि जैसे किसी ने उनके दुखी मन को सांत्वना दी है।

शब्दार्थ

भर्ती—दाखिला; **आत्मीयता**—अपनापन; **नाजुक**—गम्भीर; **क्षमा-प्रार्थी**—क्षमा माँगने वाला; **मूक**—शांत; **जीवन संगिनी**—पत्नी; **स्वीकृति**—मंजूरी।

❑❑

अध्याय–25

पाठ का सार

मीनू को मीरापुर घर गए कई महीने हो गए थे। इसलिए शानिवार और रविवार का कचहरी का अवकाश होने पर उसने माँ और पिताजी से मिलने जाने का निश्चय किया। राजो भी मेरठ आने के बाद पहली बार अपने घर जाने पर बहुत प्रसन्न थी। बस में चढ़ने पर मीनू ने अपने पड़ोस की मौसी को देख उसका अभिवादन किया और उनके आगे की खाली सीट पर राजो के साथ बैठ गयी। मौसी के द्वारा मीनू के अकेले मेरठ में रहने को अनुचित बताने की बात मीनू को चुभ गयी। इसलिए वह उपन्यास पढ़ने लगी। मौसी के साथ बैठी महिला के मीनू के बारे में पूछने पर मौसी ने कहा कि हमारे पड़ोस की यह लड़की माता-पिता की दी गई स्वतन्त्रता के कारण शादी को तैयार नहीं। मेरे द्वारा बताये लड़के को भी मना कर दिया। छोटी बहन की शादी हो गयी है और ये अभी तक कुंआरी है। साथ बैठी महिला भी मौसी का समर्थन करती है। मौसी की बातें मीनू को तीर की तरह चुभती हैं। वह सोचती है कि क्या समाज में किसी लड़की को अपनी इच्छा से जीने का कोई अधिकार नहीं? मौसी मीनू के साथ उसके माता-पिता पर भी कटाक्ष करती है। यह सब मीनू के लिए असहनीय हो जाता है लेकिन वह बस में इस तरह की लड़ाई नहीं करना चाहती इसलिए संयम रखने की कोशिश करती है।

वह समझ नहीं पा रही थी कि समाज में स्त्री व पुरुष में इतना भेद क्यों है? समाज अपराधी लड़के को क्षमा कर देता है जबकि संयमित लड़की के अकेले रहने पर दोषारोपण करने से नहीं चूकता।

मीनू के घर पहुँचते ही माँ उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुई। सफर की थकान व मौसी की बातों से परेशन मीनू आराम करने के लिए पलंग पर लेट गयी लेकिन मौसी की बातें उसके कानों में गूजने से उसके दिमाग की नसें फटने लगीं। इसलिए वह माँ के पास चली गयी माँ के द्वारा मीनू की प्रैक्टिस के बारे में पूछने पर मीनू कहती है कि पिछले महीने में तीन-चार हजार रुपये कमा लिए हैं। भविष्य में और अच्छे की उम्मीद है। मीनू अपनी सफलता का श्रेय माँ को देती है।

माँ मीनू की प्रशंसा करती है और कहती है कि एक लड़की की जिन्दगी यहीं तक सीमित नहीं होती। कुंवारी लड़की को देख लोग अंगुलियाँ उठाते हैं। समाज भी चैन से नहीं जीने देता। परसों मेरठ से मायाराम जी अपने बेटे अमित के साथ मीनू का हाथ माँगने आए थे। अपनी पिछली गलती पर शर्मिन्दा थे और माफी माँग रहे थे। मीनू ने कुछ देर सोच-विचार कर कहा कि "माँ, जैसा आप उचित समझें वैसा ही करें।" मीनू की स्वीकृति पा माँ ने चैन की साँस ली। लेकिन मीनू ने विवाह में फिजूलखर्ची न करने की बात स्पष्ट शब्दों में अपने पिताजी से कह दी।

शब्दार्थ

कोशिश—प्रयत्न; **संक्षिप्त**—बहुत छोटा; **व्यतीत**—बिताना; **फिजूलखर्ची**—बेकार के खर्च; **प्रतिध्वनि**—किसी आवाज की गूँज; **गुनाह**—पाप; **शर्मिन्दा**—लज्जित; **प्रायश्चित**—पछतावा।

❑❑

अध्याय–26

पाठ का सार

मीनू के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। विवाह के लिए पंडाल की सजावट पर दस हजार रुपये खर्च करना मीनू को पैसों की बरबादी लगा। शाम को दयाराम जी के आने पर मीनू ने अपनी नापसंदगी जाहिर की और पंडाल की सजावट में से पाँच हजार बचाकर किसी गरीब बेसहारा को देने को कहा ताकि वह अपना कोई काम शुरू कर सके। मीनू की बात सुन दयाराम जी सोच-विचार में पड़ गए। उनका मानना था कि दुनियादारी के लिए विवाह में सजावट आदि कई काम करने ही पड़ते थे।

मीनू के विवाह में दस दिन बचे थे। मीनू मशीन से सिलाई कर रही थी तभी राजो के भाई मनोहर को देख बिस्मित हो जाती है। मनोहर का एक पैर तथा सीधे हाथ की अंगुलियाँ कटी देख वह परेशान हो जाती है मीनू के पूछने पर मनोहर बताता है कि एक फैक्ट्री में उसकी नौकरी लग जाने पर वह वह बहुत खुश था लेकिन एक दिन काम करते हुए उसका पैर मशीन में आ गया और सीधे हाथ की दो अंगुलियाँ भी कट गयी। मीनू उसकी बात सुन उदास हो गयी। मनोहर बताता कि आपकी शादी में काम में मदद करने ही वह यहाँ आया है

वह घर पर खाली बैठा था। अपाहिज होने पर उसे कोई नौकरी नहीं देता। मनोहर की हालत मीनू से देखी नहीं गयी। बचपन से ही मीनू ने विवाह के फालतू खर्च से कुछ रुपये बचाकर मनोहर की सहायता करने का निर्णय किया।

रात में बिस्तर पर लेटी मीनू सोचती है कि यदि प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति किसी एक अपाहिज की सहायता कर उसे छोटा सा काम करा दे तो हमारे देश से अपाहिजों की बेरोजगारी की समस्या स्वत: ही दूर हो जायेगी। लेकिन मनोहर की सहायता कैसे करे? रुपये देने के बजाय उसे कोई

काम कराना ही उचित होगा। अपाहिज हर कार्य तो नहीं कर सकते। कुछ देर बाद उसके दिमाग में मनोहर को पान की दुकान कराने का विचार आया। मनोहर बाकी बची अंगुलियों के सहारे पान लगा सकता था और पाँच हजार में पान की दुकान आसानी से खुल जायेगी। अत: प्रात: होते ही उसने माता-पिता को अपना सुझाव दिया। वे भी मीनू जैसी स्वाभिमानी और उदार चरित्र वाली बेटी को पाकर स्वयं को धन्य महसूस करते है। माता-पिता की स्वीकृति पाकर मीनू अपने घर के सामने ही मनोहर की पान की दुकान खुलवा देती है जिससे मनोहर की जिन्दगी सँवर जाती है।

मीनू के विवाह का दिन आ जाता है। मीनू दुल्हन के रूप में बहुत सुन्दर लग रही थी। मीनू से विवाह कर अमित स्वयं को भाग्यशाली मानता है। दुल्हन बनी मीनू आज साधारण पढ़ी मीनू नहीं वरन् एक प्रसिद्ध वकील थी जिसने अपनी मेहनत और लगन से विशेष ख्याति प्राप्त कर ली थी। उसने अपनी मंजिल को पा लिया था।

शब्दार्थ

पंडाल—विशाल मंडप; **स्पष्ट**—साफ; **उदास**—दु:खी के समान; **अपंग**—अपाहिज; **अपशब्द**—बुरे शब्द; **सुझाव**—राय; **रौनक**—चमक।

❑❑

एकांकी संचय

अध्याय - 1 संस्कार और भावना (विष्णु प्रभाकर)

लेखक परिचय

श्री विष्णु प्रभाकर जी का जन्म सन् 1912 में उत्तर प्रदेश में हुआ। स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद पंजाब सरकार के कृषि विभाग में नियुक्त हुए लेकिन कुछ समय बाद ये नौकरी छोड़कर लेखन के कार्य में जुट गए। श्री विष्णु प्रभाकर बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि की रचना की।

धरती अब भी घूम रही है, पुल टूटने से पहले, मेरा वतन (कहानी) निशिकान्त, अद्‌र्धनारीश्वर (उपन्यास), समाधि, कुहरा व किरण (नाटक) इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनके एकांकी समस्या प्रधान तथा मानव प्रकृति से ओत-प्रोत व भावात्मक गहराई लिए हैं।

पात्र परिचय

माँ	–	संक्राति काल की एक हिन्दू नारी
अतुल	–	माँ का छोटा पुत्र
उमा	–	अतुल की पत्नी
नौकर और मिसरानी		

पाठ का सार

एकांकी 'संस्कार और भावना' एक मध्यमवर्गीय परिवार की ऐसी माँ की कहानी है जो संस्कारों की बेड़ियों को तोड़ अपनी ममता के महत्व समझ अपने परिवार को एक कर लेती है।

एक मध्यमवर्गीय परिवार जिसमें एक माँ के दो पुत्र हैं। बड़ा बेटा अविनाश जिसने एक विजातीय (बंगाली) लड़की से विवाह किया है जो उसकी माँ को स्वीकार्य नहीं है अत: वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहता है। माँ अपने छोटे बेटे-बहू अतुल व उमा के साथ रहती है। एक दिन जब उमा आंगन में पलंग पर लेटी कोई पुस्तक पढ़ते हुए कुछ सोच रही थी तभी परेशान हालत में आकर बताती है कि पड़ोस की मिसरानी से उन्हें पता चला है कि उनके बेटे अविनाश की तबियत बहुत खराब होकर चुकी है। उसे हैजा हो गया था। बहू ने रात-दिन सेवा की तब कहीं उसके प्राण बच सके। दस दिन बाद भी दफ्तर नहीं जा पाया है। यह सब जान माँ व्याकुल हो जाती है और सोचती है कि बचपन में अविनाश को खाँसी भी हो जाती तो वे बिना खाए-पिए दिन रात उसकी सेवा में लगी रहती थीं और आज अपने बेटे की बीमारी की बात उन्हें दूसरों से पता चल रही है।

उमा माँ को धीरज बँधाते हुए कहती है कि इसमें सारा दोष भाभी का है, देखने में बड़ी भोली लगती हैं। तब माँ को पता चलता है कि एक बार उमा भी अविनाश के घर जा चुकी है भले ही ही आवेश में आकर अविनाश की पत्नी से झगड़ने गयी हो। अतुल भी दफ्तर के काम से ही अविनाश के घर जाता रहता है लेकिन वे कुल, धर्म और जाति से मुक्त नहीं हो पा रही हैं। संस्कारों की दासता सबसे बड़ा शत्रु है। जब माँ को पता चलता है कि अतुल को अविनाश की बीमारी के बारे में पता था फिर भी उसने नहीं बताया तो वे बहुत दु:खी हो जाती हैं। वे उमा को बताती हैं कि उनके दोनों बेटे अपने पिता के समान ही निर्मम हैं। हर बात में देश, धर्म और कर्त्तव्य की दुहाई देते हैं। बचपन में अतुल के बहुत बीमार होने पर इसके पिता उसे धरती पर लिटाने हेतु सामान हटाते समय भी शान्त थे ये देख लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली थी। वे मुझे भी माया-ममता में फंसी कहा करते थे।

जब उमा अतुल से पूछती है कि आप बीमारी में भाई के यहाँ क्यों नहीं गए तो उसने बताया कि तुम भाई साहब को नहीं जानती वे मेरे भेजे डॉक्टर से भी इलाज न कराते तब जाने का क्या लाभ?

और माँ को इसलिए नहीं बताया कि उनमें अपनी रूढ़िवादी संस्कारों से मुक्त होने का साहस नहीं है वे निर्मम ही नहीं कायर भी हैं। अत: जानकर भी माँ वहाँ न जा पाती।

कुछ समय बाद मिसरानी आती है उसकी बात सुन माँ और अधिक परेशान हो जाती हैं वे रुँधे गले से अतुल को अविनाश की पत्नी के गम्भीर रूप से बीमार होने और उसके बचने की कोई उम्मीद न होने की बात कहती हैं। तब अतुल उन्हें बताता है कि भइया के पास इलाज के लिए पैसे भी नहीं हैं लेकिन वे किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे। माँ सोचती है कि अगर बहू नहीं बची तो अविनाश भी नहीं बचेगा और उसे बचाने की शक्ति केवल उन्हीं में है। अत: अतुल उन्हें एक बार अविनाश के पास ले जाए लेकिन अतुल उनसे कहता है कि अगर वे नीच कुल की विजातीय भाभी को घर लाने को तैयार हों तभी वहाँ चलें अन्यथा नहीं तब माँ अपनी परम्परावादी विचारधारा को तोड़ ममता का महत्व समझ अपने बेटे बहू को स्वीकाराने को तैयार हो जाती हैं। उमा को पुस्तक के वाक्य याद आते हैं कि जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं एक समय आता है जब हम उन्हीं बातों को स्वीकार कर लेते हैं, कारण चाहे जो हो।

शब्दार्थ

बहुतेरा—बहुत अधिक; **कर्णफूल**—कान का आभूषण; **दिवा**—सूर्य; **कपोल**—गाल; **वेदना**—दुख; **पग-ध्वनि**—पैरोंकी आवाज; **साक्षी**—गवाही; **कोसा**—भला-बुरा कहा; **उद्विग्न**—परेशान;**विजातीय**—दूसरी जाति का; **परितोष**—संतोष; **विद्रूप**—उपहास; **मरणासन्न** —जिसकी मृत्यु निकट हो; **पचड़े**—बेकार के झंझट;**अवाक्**—आश्चर्यचकित; **केश**—बाल; **निर्मम**—कठोर हृदय, निर्दय।

शीर्षक की सार्थकता

संक्राति काल की माँ जो अपने विशेष संस्कारों में जकड़ी हुई है, संस्कारों के कारण विजातीय बहू को स्वीकार नहीं कर पाती और बड़े बेटे-बहू से दूर हो जाती है। उनसे दूर होने का उसे दु:ख है लेकिन रुढ़िवादी संस्कारों के चलते वह विवश है। जब उसे बेटे के हैजा से किसी तरह जीवित बचने व सेवा करते-करते बहू के मरणासन्न हो जाने का पता चलता है तो भावना का वेग उमड़ कर संस्कार की बेड़ियों को तोड़ देता है व पूरा परिवार फिर मिल जाता है। इस तरह इस एकांकी में संस्कारों पर भावनाओं की विजय दिखाई गयी जो इसके शीर्षक 'संस्कार और भावना' की सार्थकता को सिद्ध करता है।

एकांकी का उद्देश्य

प्रस्तुत एकांकी 'संस्कार और भावना' के लेखक विष्णु प्रभाकर जी का उद्देश्य इस एकांकी के माध्यम से रूढ़िवादी संस्कारों के स्थान पर भावनाओं के महत्व को दर्शाना है। समय व परिस्थितियों के बदलने पर हमें अपनी सोच में भी परिवर्तन लाना होगा। जाति व धर्म पर आधारित पुरानी मान्यताओं से ऊपर उठकर मानवता व मानवीय मूल्यों को स्थापित करना होगा क्योंकि कभी जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, समय आने पर वे ही बातें हम सहर्ष मान लेते हैं। जैसे एकांकी की प्रमुख पात्र माँ विजातीय बहू को किसी कीमत पर अपनाने को तैयार नहीं होती, अपने प्रिय पुत्र से भी अलग होना स्वीकार कर लेती है, लेकिन परिस्थितियाँ बदलने पर वह विजातीय बहू को न केवल अपनाने को तैयार हो जाती है बल्कि स्वयं उन्हें आग्रह पूर्वक लेकर आती है। इस तरह आपसी सम्बन्धों में भावनाओं को महत्व देना चाहिए। जातिवाद की पुरानी सोच का त्याग कर सम्बन्धों को बनाए रखने की, मानवमात्र में भेद-भाव न करने की प्रेरणा देना ही इस एकांकी का उद्देश्य है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

माँ—'संस्कार और भावना' एकांकी की सबसे प्रमुख पात्र माँ है। पूरी एकांकी उन्हीं के आस-पास घूमती है। माँ एक रूढ़िवादी वृद्ध महिला है जो संस्कारों में इस तरह जकड़ी है कि वे अपने बड़े बेटे से केवल इसलिए सम्बन्ध विच्छेद कर लेती है कि उसने विजातीय लड़की से विवाह किया है लेकिन इसके साथ ही वे कोमल हृदया, ममतामयी माँ व समझदार स्त्री भी हैं। उन्हें अपने बेटे-बहू से दूर रहने का दु:ख भी है। हैजा से पीड़ित पुत्र की सेवा करते हुए विजातीय बहू की बीमारी के बारे में जानने पर वे ममता के वशीभूत होकर बेटे-बहू को अपनाती हैं व बहू की सेवा करने का भी निर्णय लेती हैं।

अतुल—अतुल, उमा का पति व घर का छोटा बेटा है। वह आधुनिक विचारों से युक्त, बड़ों का सम्मान करने वाला, रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोध करने वाला, दूसरों की भावनाओं की कद्र करने वाला व्यक्ति है। माँ के विचारों से सहमत न होने पर भी वह माँ को अपमानित नहीं करता। अपने बड़े भाई-भाभी से भी चोरी-छिपे मिलता रहता है।

उमा—उमा, घर की छोटी बहू व अतुल की पत्नी है। वह आधुनिक विचारों वाली, रूढ़िवादी संस्कारों के स्थान पर मानवता की पक्षधर, दयालु महिला है। वह बड़ी भाभी का आदर करती है और चाहती है कि पूरा परिवार मिलकर रहे। वह बड़ी भाभी की सुन्दरता व गुणों की

प्रशंसक है, लेकिन माँ की भावनाओं को ध्यान में रखकर खुलकर कुछ बोल नहीं पाती। अंत में माँ के हृदय परिवर्तन पर बड़े बेटे-बहू को अपनाने की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हो जाती है।

❑❑

अध्याय – 2 बहू की विदा (विनोद रस्तोगी)

लेखक परिचय

श्री विनोद रस्तोगी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के शमसाबाद नामक गाँव में 12 मई सन् 1933 में हुआ। फर्रुखाबाद में आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कर स्नातक स्तरीय शिक्षा कानपुर से उत्तीर्ण की। विनोद रस्तोगी जी ने एम. ए. (हिन्दी) करने के बाद आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र पर नाट्यनिर्देशक के रूप में कार्य किया।

विनोद रस्तोगी ने गद्य व काव्य दोनों में साहित्य रचना की। इन्होंने जीवन की समस्याओं व आधुनिक जीवन की मानसिक कुंठाओं का अपनी रचनाओं में चित्रण किया। 'नए हाथ', 'आजादी के बाद', 'रूप और रोटी', 'रुपया', 'गोपा का दान', 'बर्फ की मीनार' दरारें आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। रस्तोगी जी की कई रचनाएँ पुरस्कृत भी की जा चुकी हैं।

पात्र-परिचय

जीवनलाल – एक धनी व्यापारी है जिसकी अवस्था पचास वर्ष है।

राजेश्वरी – जीवनलाल की पत्नी, अवस्था छियालीस बर्ष।

रमेश – जीवनलाल का पुत्र, अवस्था बाईस वर्ष।

कमला – रमेश की पत्नी, अवस्था उन्नीस वर्ष।

प्रमोद – कमला का भाई, अवस्था तेईस वर्ष।

पाठ का सार

'बहू की विदा' शीर्षक एकांकी द्वारा लेखक ने समाज में फैली दहेज की समस्या का सजीव वर्णन कर बेटी व बहू को समान समझने का संदेश दिया है।

जीवनलाल एक धनी व्यापारी है जिसके लिए पैसा ही सब कुछ है भावनाओं का उसके लिए कोई मोल नहीं है। प्रमोद अपनी बहन कमला को पहला सावन मायके में मनाने के लिए विदा कराने उसकी ससुराल आता है लेकिन कमला के ससुर जीवनलाल बहू को विदा करने से मना कर देते हैं। उनका मानना है कि विवाह के समय कमला के घरवालों ने उचित दान दहेज नहीं दिया तथा विवाह की खातिरदारी भी ठीक से नहीं की जिससे उनका बहुत अपमान हुआ, उस करारी चोट का घाव आज भी ताजा है। यदि प्रमोद अपनी बहन की विदा कराना चाहता है उस चोट के मरहम के रूप में पाँच हजार रुपये लाकर दे अन्यथा वह कमला को विदा नहीं करेंगे। प्रमोद उन्हें मनाने की कोशिश करता है। प्रमोद कहता है हमने अपनी हैसियत के अनुसार दहेज दिया था और कमला की इसमें कोई गलती नहीं है आप उससे बदला न लें और उसे विदा कर दें लेकिन जीवन अपनी बात पर अड़ा रहता है तथा प्रमोद को खरी-खोटी सुनाता है। तब प्रमोद अपना घर बेचकर उनके मरहम की व्यवस्था करने को तैयार हो जाता है लेकिन कमला अपनी विदा के लिए घर न बेचने के लिए प्रमोद को अपने सुख-सुहाग की कसम देती है। कमला की सास राजेश्वरी जो कि एक सहृदय माँ है वह समस्या को जानने के बाद कमला को तिजोरी से पाँच हजार रुपये लाकर प्रमोद को देने के लिए कहती है। प्रमोद एक स्वाभिमानी व्यक्ति है वह रुपये लेने से मना कर देता है तथा अगली बार रुपये शीघ्र लाने की बात कहता है।

उधर जीवनलाल अपनी बेटी गौरी जिसे विदा कराने जीवनलाल का पुत्र रमेश गया है के लिए लॉन में झूला डलवाता है तथा राजेश्वरी से भी बेटी के स्वागत की तैयारी करने को कहता है। इतने में रमेश को अकेला आता देख वह गौरी को न लाने का कारण पूछता है। तब रमेश बताता है कि गौरी के विवाह में पूरा दहेज न मिलने के कारण उन्होंने गौरी की विदा नहीं की। यह सुनते ही जीवनलाल गौरी के ससुराल वालों को भला-बुरा व लोभी बताते हुए विवाह में जीवनभर की कमाई लगा देने की बात कहता है और शराफत व इंसानियत की दुहाई देता है। राजेश्वरी उसे समझाती है कि जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। बहू और बेटी को एक समान समझो अगर हर बेटे वाला यह याद रखे कि वह बेटी वाला है तो सब उलझनें सुलझ जाएँ।

जीवनलाल को अपनी गलती का एहसास हो जाता है। वह अपनी चोट का इलाज बेटी के ससुराल वालों की दूसरी चोट से होने की बात कह राजेश्वरी से बहू की विदा की तैयारी करने को कहता है। यह सुन सब प्रसन्न हो जाते हैं तभी पर्दा गिरता है।

शब्दार्थ

सामर्थ्य—क्षमता; **जमुहाई**—उबासी; **ठेका**—जिम्मा; **उत्तेजित**—आवेश में; **चेष्टा**—प्रयास; **सरासर**—पूरी तरह से; **आर्द्र**—नम; **दंग रह गये**—चकित हो गए; **व्यंग्य**—उपहास, मजाक; **घटा**—बादल; **प्रबन्ध**—इंतजाम; **सौगंध**—कसम; **कामना**—इच्छा; **मौन**—चुप, शांत; **गूढ़**—गहरी; **मूर्तिवत**—मूर्ति के समान, बिना हिले-डुले; **कुंजियों**—चाबियों; **मंद**—धीमी; **द्वार**—दरवाजा; **हतप्रभ**—चकित; **अनसुनी**—बिना सुने; **यवनिका**—रंगमंच का परदा; **पात**—गिरना।

शीर्षक की सार्थकता

प्रस्तुत एकांकी 'बहू की विदा' का शीर्षक सर्वथा उचित है। एकांकी के केन्द्र में बहू की विदाई है। पूरी एकांकी बहू की विदाई को लेकर ही है। जीवनलाल अपने पुत्र रमेश के विवाह में दहेज कम मिलने के कारण नाराज हैं और वह दहेज की रकम लिए बिना अपनी पुत्रबधू कमला को उसके भाई के साथ विदा करने को तैयार नहीं होता। वहीं जीवनलाल का पुत्र जो अपनी बहन गौरी को विदा कराकर लाने उसकी ससुराल गया था बिना विदा कराये लौट आता है क्योंकि गौरी के विवाह में दहेज कम मिलने के कारण उसकी ससुरालवालों ने अपनी बहू को विदा करने से इंकार कर दिया था। यह जानकर जीवनलाल का हृदय परिवर्तन होता है और वह बहू (कमला) की विदाई को तैयार हो जाता है। 'बहू की विदा' शीर्षक संक्षिप्त, रोचक, सटीक व कथावस्तु के उपयुक्त है।

एकांकी का उद्देश्य

विनोद रस्तोगी जी ने एकांकी 'बहू की विदा' के माध्यम से समाज में अपनी जड़ें जमा चुकी दहेज प्रथा पर करारा प्रहार किया है। जीवनलाल जैसे दहेज के लोभी समाज में अपनी झूठी शान व प्रदर्शन के चलते दहेज की अनुचित माँगें करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि हमारी बहू किसी की बेटी है और हमारी बेटी भी किसी की बहू है। आज दहेज के लिए हम अपनी बहू को परेशान कर रहे हैं तो संभव है कि हमारी बेटी के साथ भी वैसा ही हो। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में लिया-दिया गया दहेज अनुचित है। अत: बहू व बेटी में कोई अन्तर न मानते हुए दहेज जैसी कुप्रथा का पुरजोर विरोध करने की प्रेरणा देना ही इस एकांकी का उद्देश्य है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

जीवनलाल—जीवनलाल एक धनी व्यापारी है जिसकी अवस्था पचास वर्ष है, वह एक लोभी, दोहरे चरित्र वाला स्वार्थी, अहंकारी और भावनाशून्य व्यक्ति है। वह सम्बन्धों से अधिक पैसों को महत्व देता है। वह बेटी और बहू को एक समान नहीं मानता, लेकिन जब कहानी के अंत में उसकी स्वयं की बेटी गौरी के ससुराल वाले भी दहेज की कमी के कारण उसे विदा नहीं करते तो इस घटना से जीवनलाल का हृदय परिवर्तन हो जाता है।

राजेश्वरी—राजेश्वरी जीवनलाल की पत्नी, कमला की सास है। जिसकी आयु छियालीस वर्ष है राजेश्वरी एक सहृदय, दयालु व ममतामयी माँ है। वह दहेज की विरोधी है। अपने पति जीवनलाल को भी समझाती है। राजेश्वरी बेटी और बहू को एक समान मानती है। पाँच हजार रुपए के कारण कमला की विदायी न होने पर वह भावुक होकर स्वयं अपने पास से रुपए देने की तैयार हो जाती है। वह पैसों से अधिक रिश्तों को महत्व देने वाली महिला है।

रमेश—रमेश जीवनलाल का पुत्र और कमला का पति है जिसकी आयु बाइस वर्ष है। रमेश आधुनिक विचारों वाला, माता-पिता का आज्ञाकारी युवक है। वह स्वयं दहेज विरोधी है, लेकिन पिता के आगे कुछ बोल नहीं पाता। वह अपनी बहन गौरी को विदा कराने उसकी ससुराल जाता है, लेकिन दहेज की कमी के कारण गौरी की विदाई नहीं हो पाती और वह अकेला लौट आता है।

प्रमोद—प्रमोद (कमला का भाई) एक तेईस वर्षीय युवक है। प्रमोद एक विनम्र स्वाभिमानी, बड़ों का सम्मान करने वाला संस्कारी भाई है उसके विचारों में स्पष्टता है वह जीवनलाल से अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहता है। राजेश्वरी द्वारा दिए जाने वाले रुपए स्वीकार न कर वह अपने स्वाभिमान का परिचय देता है। कमला के दु:खी होने पर वह भावुक हो जाता है।

कमला—कमला, प्रमोद की बहन व रमेश की पत्नी है। वह एक उन्नीस वर्षीय नवविवाहित है। कमला एक आदर्श बहू व बेटी है। वह विदाई न होने पर भी भाई के सामने कमजोर नहीं पड़ती और न ही ससुराल वालों को भला-बुरा कहती है। उसे मायके की कमजोर आर्थिक स्थिति की भी चिंता है। ❑❑

अध्याय – 3 मातृभूमि का मान (हरिकृष्ण 'प्रेमी')

लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य के सफल और लोकप्रिय नाटककार श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' का जन्म सन् 1908 में मध्यप्रदेश के गुना शहर में हुआ। एक पत्रकार के रूप में इनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत हुई लेकिन बाद में नाटककार व एकांकीकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। मानवीय प्रेम,

देशभक्ति, राष्ट्रीयता, वीरता, पराक्रम, साहस जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से की। इनके नाटक सामाजिक, ऐतिहासिक व पौराणिक विषयों से सम्बद्ध हैं। बंधन, छाया, ममता, प्रतिशोध, विषपान, पातालविजय, आहुति, रक्षाबंधन, स्वर्ण विहान आदि इनके प्रमुख नाटक हैं। वहीं मातृभूमि का मान, निष्ठुर न्याय, नया समाज, बेडियाँ, वाणीमंदिर, मानमन्दिर, आदि हरिकृष्ण 'प्रेमी' जी एकांकी रचनाएँ हैं।

इनका सन् 1974 में देहान्त हो गया।

पात्र-परिचय

राव हेमू — बूँदी का शासक
अभय सिंह — मेवाड़ का सेनापति
महाराणा लाखा — मेवाड़ का शासक
वीर सिंह — बूँदी का रहने वाला मेवाड़ का सिपाही चारणी तथा वीर सिंह के साथी

पाठ का सार

हरिकृष्ण 'प्रेमी' द्वारा रचित 'मातृभूमि का मान' शीर्षक एकांकी मातृभूमि की रक्षा के लिए बलिदान देने को प्रेरित करती एक कहानी है। पहले दृश्य में मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा अपने सेनापति अभय सिंह द्वारा बूँदी के नरेश राव हेमू के पास संदेश भिजवाते हैं कि असंगठित राजपूत विदेशियों का सामना नहीं कर सकते हमें अपनी शक्ति संगठित करने के लिए चित्तौड़ के नेतृत्व को स्वीकार करना होगा। इसलिए महाराणा लाखा चाहते हैं कि बूँदी भी मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले। बूँदी नरेश किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से साफ इंकार कर देते हैं। वे प्रेम का अनुशासन मानने को तैयार हैं लेकिन शक्ति का नहीं। वे महाराणा लाखा के लिए भी सुझाव देते हैं कि वे अपने अहंकार को से दूर रखें और यदि अपने ही जाति भाइयों (राजपूतों) पर तलवार आजमाना चाहें तो आजमा कर देख लें।

दूसरे दृश्य में मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा बूँदी के द्वारा मेवाड़ की पराजय को लेकर बहुत चिन्तित व व्यथित हैं। हाड़ाओं के द्वारा रात के समय अचानक मेवाड़ के सैन्य शिविर पर आक्रमण किये जाने से मेवाड़ की पराजय हुई थी। उस अपमान का बदला लेने के लिए महाराणा लाखा यह प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक बूँदी के दुर्ग में सेना सहित प्रवेश नहीं कर लेते वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। सेनापति अभयसिंह मेवाड़ नरेश से ऐसी भीषण प्रतिज्ञा न करने का आग्रह करते हैं लेकिन महाराणा लाखा सूर्यवंशियों की परम्परा का स्मरण दिलाते हैं कि वे प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने वचन को पूरा करते हैं।

उसी समय एक चारणी राजपूतों की एकता की तुलना मोतियों की माला से करते हुए उसे न तोड़ने का गीत गाती वहाँ आती है। उसका गीत सुन महाराणा कहते हैं कि वे तो एकता की माला को तोड़ दो जातियों में दुश्मनी पैदा करने जा रहे हैं। इस पर चारणी बूँदी का नकली दुर्ग बनवा, उसके विध्वंस द्वारा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का उपाय महाराणा को बताती है क्योंकि हाड़ाओं ने विपत्ति के समय सदैव ही मेवाड़ की सहायता की अतः उनकी भूल को क्षमा कर राजपूत शक्तियों के बीच आपसी स्नेह का सम्बन्ध बना रहने दें। महाराणा चारणी की बात मान नकली दुर्ग बनवाने का आदेश देते हैं। तीसरे दृश्य में अभय सिंह बूँदी के नकली दुर्ग पर आक्रमण के लिए अपने ही कुछ सैनिक दुर्ग के भीतर रख बन्दूकों से खाली वार करवा कर वास्तविकता युद्ध का दृश्य उपस्थित करने की योजना बनाते हैं जिससे इस गढ़ को जीत महाराणा अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकें। वीर सिंह जो बूँदी का रहने वाला तथा मेवाड़ का सिपाही है इस छद्म युद्ध को अपनी मातृभूमि का अपमान मानता है और अन्य हाड़ा सिपाहियों को भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए मेवाड़ की सेना विरुद्ध लड़ने को तैयार कर लेता है।

चौथे दृश्य में वीरसिंह अपने साथियों के साथ पूरी वीरता व साहस के साथ सिसौदियों से युद्ध करता है। उसकी वीरता से महाराणा लाखा व अभयसिंह भी बहुत प्रभावित होते हैं। लेकिन अन्त में वीरसिंह वीरगति को प्राप्त होता है। महाराणा लाखा को अपने इस अविवेकपूर्ण निर्णय पर पछतावा होता है। वे अपनी इस विजय को सबसे बड़ी पराजय मानते हैं। वे कहते हैं कि उनके व्यर्थ के अहंकार से आज वीरसिंह जैसे कितने ही वीरों के प्राण चले गए। मैं समझ गया हूँ कि ऐसे वीर हाड़ाओं को अपने अधीन करने की इच्छा करना बेवकूफी है वे शहीद वीरसिंह के पार्थिव शरीर के पास बैठ अपराध स्वीकार करते हुए क्षमा माँगते हैं। राव हेमू महाराणा लाखा को सुख-दुख में साथ निभाने का वादा करते हुए स्वजनों के साथ स्नेह सम्बन्ध कायम रखने को कहते हैं। अंत में सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं और पर्दा गिरता है।

शब्दार्थ

आश्रित—निर्भर; **गत**—बीता हुआ; **अधीनता**—गुलामी; **नाज**—गर्व; **श्रीगणेश**—शुरुआत; **दंभ**—अहंकार; **अपयश**—बदनामी; **शिविर**—सैनिक पड़ाव; **उपहासजनक**—हँसी की; **व्यथित**—दुखी; **ससैन्य**—सेना के साथ; **धृष्टता**—दुस्साहस; **भीषण**—भयंकर; **नेपथ्य**—रंगमंच के पीछे की जगह; **शृंखला**—कड़ी; **विद्वेष**—ईर्ष्या; **विध्वंस**—नाश; **उद्दंडता**—दुस्साहस; **बाध्य**—मजबूर; **प्रतिरोध**—बाधा; **पथ**—रास्ता; **छूँछे**—खाली; **व्याघात**—रुकावट; **पताका**—झंडा; **विजयश्री**—जीत; **दुंदभि**—नगाड़ा; **सायत**—मुहूर्त; **अभिलाषा**—इच्छा; **पृथक्**—अलग; **आभा**—चमक; **विलम्ब**—देरी; **सराहनीय**—प्रशंसा के योग्य।

शीर्षक की सार्थकता

हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित एकांकी 'मातृभूमि का मान' शीर्षक पूर्णतया सार्थक व उपयुक्त है। इस एकांकी में मेवाड़ के महाराणा लाखा अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए बूँदी के दुर्ग की प्रतिकृति में ससैन्य प्रवेश कर अपना ध्वज फहराना चाहते हैं, लेकिन हाड़ाओं की मातृभूमि बूँदी के वीर जो अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम करते हैं और मातृभूमि के मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों के उत्सर्ग को भी तत्पर रहते हैं का एक वीर सैनिक वीर सिंह जो मेवाड़ की सेना में सिपाही है अपनी मातृभूमि के मान की रक्षा के लिए छद्‌म युद्‌म को वास्तविक मानकर बूँदी के नकली दुर्ग की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे देता है, लेकिन मातृभूमि के मान को खंडित नहीं होने देता। इस तरह यह एकांकी मातृभूमि के मान को केन्द्र में रखकर लिखी गयी। अत: यह शीर्षक पूरी तरह सटीक व प्रासंगिक है।

एकांकी का उद्देश्य

एकांकी 'मातृभूमि का मान' का उद्‌देश्य देशवासियों में देशभक्ति, एकता व मातृभूमि के लिए बलिदान का भाव जगाना है। एकांकी में प्रारम्भ में ही विदेशी ताकतों से मुकाबला करने के लिए आपसी बैर-भाव व अहंकार को छोड़कर संगठित होने की बात कही गयी है। इसके साथ वीर सिंह के माध्यम से अपनी मातृभूमि का अपमान न होने देना व उसके स्वाभिमान की रक्षा के लिए साहस व वीरता से दुश्मनों का मुकाबला करने व अपने प्राणों का बलिदान देने में भी पीछे न हटने की बात दर्शायी गयी है। अत: हर हालत में आपस में मिलजुल कर देश के मान की रक्षा करने की प्रेरणा देना ही एकांकीकार का उद्‌देश्य है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

राव हेमू—राव हेमू वीर हाड़ाओं के वंशज व बूँदी के शासक हैं। वे वीर, साहसी, पराक्रमी, स्वाभिमानी और सच्चे देशभक्त हैं। वे मेवाड़ जैसे समृद्ध व शक्तिशाली साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर देते हैं। वे प्रेम का अनुशासन मान सकते हैं लेकिन शक्ति का नहीं। वे स्वतन्त्रता प्रिय होने के साथ विवेकशील और मानवीय मूल्यों के पक्षधर भी हैं।

महाराणा लाखा—महाराणा लाखा मेवाड़ के शासक हैं। वे सभी असंगठित राजपूतों को संगठित कर विदेशी शक्तियों का सामना करना चाहते हैं। वे वीर, साहसी और वीरता का सम्मान करने वाले हैं। बूँदी के शासक राव हेमू के हाथों मिली पराजय से आहत होकर प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक बूँदी में वे ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते तब तक अन्न जल भी ग्रहण नहीं करेंगे। चारणी के समझाने पर वे विवेकशीलता का परिचय देकर बूँदी के नकली दुर्ग को तहस-नहस कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का विचार करते हैं। वीर सिंह की वीरता देख उसकी वीरता का सम्मान भी करते हैं।

वीर सिंह—वीर सिंह मेवाड़ की सेना का एक सिपाही है, लेकिन उसकी मातृभूमि बूँदी है। उसे अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम है। वह अपनी जन्मभूमि बूँदी के दुर्ग की प्रतिकृति के नष्ट होने के अपमान को भी सहन नहीं कर सकता। वीर सिंह अपने नाम की भाँति ही वीर है। अत: वह छद्‌म युद्ध को भी वास्तविक मान अपने प्राणों की बाजी लगाकर युद्ध करता है। उसकी वीरता, साहस, पराक्रम व मातृभूमि के प्रति प्रेम को देखकर मेवाड़ के महाराणा लाखा भी उसकी प्रशंसा करते हैं।

अभयसिंह—अभयसिंह मेवाड़ का सेनापति और महाराणा लाखा का विश्वासपात्र है वह वीर, चतुर और दूरदर्शी है। वह बूँदी के राव हेमू के पास महाराणा लाखा का संदेश लेकर जाता है वह महाराणा लाखा को हाड़ाओं द्वारा मिली पराजय की ग्लानि से मुक्त करते हुए स्वयं को दोषी बताता है। महाराणा द्वारा ली गयी प्रतिज्ञा की पूर्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति सचेत करता है। वह शांतिपूर्वक समझाता भी है।

❑❑

अध्याय - 4 सूखी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

लेखक परिचय

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जी का जन्म पंजाब के जालन्धर में 14 दिसम्बर 1910 में हुआ। लाहौर से कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद एक विद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। 1933 में साप्ताहिक 'भूचाल' का प्रकाशन आरम्भ कर लेखन के क्षेत्र पर पदार्पण किया। प्रारम्भ में उर्दू भाषा में लेखन किया लेकिन बाद में हिन्दी में लिखने लगे। उर्दू में लिखे 'जुदाई की शाम का' 'गीत', 'नवरत्न' व 'औरत की फितरत' संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

अश्क जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने अध्यापन, पत्रकारिता, वकालत, रंगमंच, रेडियो, प्रकाशन और स्वतन्त्र लेखन किया सभी क्षेत्रों में इन्हें व्यापक अनुभव था। इन्होंने एकांकी लेखन के साथ नाटक, उपन्यास संस्मरण व अनेक कहानियाँ भी लिखीं।

इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ सितारों के खेल, गर्मराख, एक नन्हीं कंदील, नासूर, पैंतरे, तूफान से पहले, चरवाहे, शहर में घूमता आईना आदि हैं। उत्कृष्ट लेखन के लिए वर्ष 1972 में इन्हें सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

19 जनवरी 1996 में इनका देहान्त हो गया।

पात्र परिचय

दादा	– मूलराज (परिवार का मुखिया)
कर्मचन्द	– मंझला बेटा
परेश	– सबसे छोटा पोता
इंदु	– पोती, प्राइमरी शिक्षा प्राप्त
बेला	– परेश की पत्नी, छोटी बहू
छोटी भाभी	– इंदु की माँ, बेला की सास
	मंझली भाभी, बड़ी भाभी, बड़ी बहू, मंझली बहू, रजवा (मिश्रानी), पारो

पाठ का सार

'सूखी डाली' शीर्षक एकांकी एक ऐसे संयुक्त परिवार की कथा है जिसमें मुखिया की सूझ-बूझ व परिवार के सदस्यों के बीच आपसी सामन्जस्य से परिवार के द्वारा परिवार को जोड़े रखना का चित्रांकन किया गया है।

परिवार के मुखिया दादा (मूलराज) 72 वर्ष की आयु में पोते-पोती से भरे-पूरे परिवार पर अपना पूरा अधिकार रखते हैं। 1914 के युद्ध में बड़े बेटे के शहीद होने पर सरकार से उन्हें एक मुरब्बा (25 एकड़) जमीन मिलती है। अपनी मेहनत, साहस व दूरदर्शिता से दादा दस मुरब्बा में बदल देते हैं। समाज में उनका काफी रुतबा है।

एकांकी की शुरुआत गुस्से में आती इंदु से होती है। बड़ी बहू के पूछने पर इंदु बताती है कि छोटी बहू ने रजवा को नौकरी से निकाल दिया है। उनका मानना है कि न तो रजवा को काम करने का सलीका है और न ही घर वालों को काम करवाने का। छोटी बहू अपने आगे सबको मूर्ख और गँवार समझती है। उन्हें अपने मायके का बहुत घमण्ड है। रजवा भी छोटी बहू का काम करने से इंकार कर देती है।

तभी मंझली बहू बताती है कि छोटी बहू हमें ही नहीं अपने पति को भी कुछ नहीं समझती। परेश के लाख समझने पर भी उसने अपने कमरे के सारे फर्नीचर को सड़ा-गला और पुराना बताकर कमरे से बाहर निकाल दिया। परेश की एक न चली। तब इन्दु कहती है कि उनकी सिर्फ जबान चलती है हाथ नहीं। दादाजी ने कुछ कपड़े धोने को दिए वे बिना धुले गुसलखाने में गल रहे हैं। छोटी भाभी इन्दु से वे कपड़े धोने के लिए कहती हैं। इस तरह घर की महिलाएँ छोटी बहू की हँसी उड़ाती हैं।

मंझले बेटे करमचन्द से पैर दबवाते समय दादाजी बच्चों के द्वारा बरगद की टूटी डाल को आंगन में रोपता देख कहते हैं कि एक बार डाली टूट जाने पर चाहे जितना पानी दो वह कभी नहीं पनपती। तब करमचन्द दादाजी को बताते हैं कि छोटी बहू को अपने मायके का बहुत घमण्ड है। सुशिक्षित होने के कारण वह घर के सदस्यों को घृणा की दृष्टि से देखती है। वह यहाँ खुश नहीं है तथा वह परेश के साथ अलग रहना चाहती है। तब दादाजी कहते हैं कि बड़प्पन बाहरी वस्तु का नहीं वरन् मन का होना चाहिए। यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिलेगा तो वह अलग होने की बात न सोचेगी।

दादाजी परेश से कहते हैं कि तुम्हारे ताऊ को नए फैशन की जानकारी नहीं है अतः तुम छोटी बहू को बाजार से पसंद की चीजें दिला लाओ। वह अपने पिता की इकलौती संतान है अतः इस भीड़-भाड़ में घबराती होगी। हम सब मिलकर उसका मन लगाने का प्रयास करेंगे। लेकिन जब परेश उन्हें बताता है कि घर की सभी महिलाएँ उस (छोटी बहू) की शिकायत करती हैं तथा छोटी बहू समझती है कि छोटी होने के कारण सब उसकी आलोचना करती व आदेश देती हैं अतः वह परिवार से अलग होना चाहती है। दादाजी समस्या का हल शीघ्र ही निकालने का परेश को आश्वासन देते हैं।

समस्या को हल करने के लिए दादाजी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को समझाते हैं कि मुझे यह जानकर बड़ा दु:ख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगता। छोटी बहू एक बड़े घर की पढ़ी-लिखी लड़की है। वहाँ सबसे आदर पाती थी लेकिन यहाँ छोटी बहू होने के कारण उसे हरेक का आदेश मानना पड़ता है जिससे उसका व्यक्तित्व दब गया है। छोटी बहू अक्ल में हम सबसे बड़ी है, हमें उसकी बुद्धि और योग्यता का लाभ उठाना चाहिए। इसलिए मेरी इच्छा है कि यहाँ भी उसे उचित आदर-सत्कार मिले सब उसका कहना मानें और उसका काम भी आपस में बाँट लें। दादाजी इस विषय में इन्दु व मंझली वहू को सावधानी बरतने का निर्देश देते हैं।

बेला बरामदे में पुस्तक हाथ में लेकर घरवालों के बदले व्यवहार से परेशान होकर बड़बड़ा रही है तभी उसकी साथ (छोटी भाभी) आकर बेला के पुराने फर्नीचर को बाहर निकाल फेंकने की प्रशंसा करते हुए रजवा को माफ करने की सिफारिश करती हैं। उनके जाने पर बड़ी बहू व मंझली भाभी रजवा की जगह उसकी बहू को रखने का प्रस्ताव बेला के सामने रखती हैं ताकि बेला को कोई परेशानी न हो तथा वहाँ बैठकर बेला का समय बरबाद न करने की बात कहती हैं जिससे बेला रुआँसी होकर चली जाती है। इसी प्रकार घर की अन्य महिलाएँ मंझली बहू की बात सुनकर हँसी मजाक कर रहीं थी लेकिन बेला को आता देख सब शांत हो और अपने स्थान से खड़े हो जाते हैं। उनके द्वारा अत्यधिक आदर सत्कार दिए जाने से बेला परेशान होकर अपने कमरे में चली जाती है तथा परेश को भी घरवालों के बदले व्यवहार के विषय में बताते हुए कहती है कि कोई मुझे किसी काम को हाथ नहीं लगाने देता। कोई मुझसे अधिक समय तक बात नहीं करना चाहता। उन सबके द्वारा अत्यधिक आदर दिए जाने से मैं परेशान हो गयी हूँ। तब परेश कहता है तुम भी तो यही चाहती थीं फिर क्यों परेशान हो? बेला इस असमंजस की स्थिति में सिसकने लगती है। इन्दु बेला को रोता देख उसे शांत करती है तथा बताती है दादाजी ने सभी परिवार वालों को छोटी बहू के आदर करने की बात समझायी है क्योंकि वे सब कुछ सह सकते हैं लेकिन परिवार का विभाजन नहीं। बेला कहती है कि वह सबका आदर नहीं वरन् उनका साथ

चाहती है। वह इन्दु के साथ कपड़े धुलवाने में मदद करने की जिद करती है। बेला से काम करवाते देख दादाजी इन्दु को टोकते हैं तब बेला कहती है कि आप इस परिवार रूपी पेड़ से किसी सदस्यरूपी शाखा को अलग होता नहीं देख सकते लेकिन किसी डाली का पेड़ में लगे हुए सूख जाना आप सह सकते हैं। इसी कथन के साथ परदा गिरता है।

शब्दार्थ

तानाशाही—निरंकुश शासन; **प्रभुत्व**—आधिपत्य; **वट**—बरगद; **प्रण**—प्रतिज्ञा; **ग्रेजुएट**—स्नातक; **कोलाहल**—शोर; **स्नानागार**—गुसलखाना; **निस्तब्धता**—स्थिरता; **भृकुटी**—भौहें; **पतोहू**—पोते की पत्नी; **स्तम्भित**—आश्चर्यचकित; **दर्प**—घमण्ड; **नीरवता**—सन्नाटा; **बरबस**—अचानक; **कतरनी**—कैंची; **उद्यत**—तत्पर; **पृथक्**—अलग; **हस्तक्षेप**—दखल; **विटप**—पेड़; **वृथा**—व्यर्थ, बेकार; **दयानतदार**—ईमानदार; **क्लान्त**—दुखी; **नासूर**—कभी न भरने वाला घाव; **निढाल**—बहुत थकी हुई; **भावावेश**—भावों की प्रबलता; **ड्योढ़ी**—दहलीज, देहरी; **अबरा**—ऊपर का पल्ला।

शीर्षक की सार्थकता

जिस तरह डालियाँ पेड़ के साथ रहकर हरी-भरी रहती हैं और अगर कोई डाली टूटकर अलग हो जाये तो वह सूख जाती है उसी प्रकार दादाजी का संयुक्त परिवार विशाल वट वृक्ष की भाँति अपने सभी सदस्यों के साथ खुशहाल व सम्पन्न था लेकिन बेला व परेश के परिवार से अलग होने की बात पर दादाजी सहमत नहीं होते। वे अपनी किसी डाल को सूखने नहीं देना चाहते। पूरी एकांकी इसी बात को केन्द्र में रखकर लिखी गयी है, और अंत में स्पष्ट भी की गयी है। अत: एकांकी का शीर्षक 'सूखी डाली' पूर्णतया सार्थक व उद्देश्य में सफल है।

एकांकी का उद्देश्य

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा रचित 'सूखी डाली' का उद्देश्य वर्तमान समय में संयुक्त परिवार के महत्व को दर्शाना है। यद्यपि संयुक्त परिवार में कुछ खट्टे-मीठे पल आते रहते हैं, लेकिन हमें संयम व पारस्परिक सहयोग में सद्भावना बनाए रखना चाहिए। परिवार के मुखिया को दादाजी के समान परिवार के प्रत्येक सदस्य की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपनी सोच व व्यवहार में समय के साथ आधुनिकता का समावेश भी करना चाहिए। परिवार में नए आये सदस्यों व अन्य सदस्यों को आपसी सामंजस्य बैठाने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। अलग-अलग होकर हमारा विकास बाधित और व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। अत: आपसी सहयोग, प्रेम, दया, आदर आदि मूल्यों का जीवन में विकास करते हुए मिलकर रहने की प्रेरणा देना ही इस एकांकी का उद्देश्य है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

दादाजी मूलराज—दादा मूलराज एकांकी के सबसे प्रमुख और वरिष्ठ पात्र हैं उनकी आयु 72 वर्ष है। इतनी आयु होने पर भी वे पूर्णत: स्वस्थ हैं। वे एक परिश्रमी, बुद्धिमान, दूरदर्शी, अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने परिश्रम के बल पर ही सरकार से प्राप्त एक मुरब्बा जमीन को 10 मुरब्बा बना लिया। वे एक बेटे-पोतों आदि से भरे परिवार के मुखिया हैं। उन्होंने पूरे परिवार को अपनी सूझबूझ से एक सूत्र में बाँध रखा है। परिवार का कोई सदस्य उनके निर्णय की अवहेलना नहीं करता। परेश द्वारा छोटी बहू के असंतोष के बारे में जानकर वे तुरन्त परिवार के सभी सदस्यों को उचित दिशा-निर्देश देते हैं। वे मुखिया के कर्तव्यों से भली-भाँति परिचित हैं। वे सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं।

बेला—बेला एकांकी की प्रमुख महिला पात्र है। वह दादाजी के संयुक्त परिवार की छोटी बहू और परेश की पत्नी है। वह एक सम्पन्न व प्रतिष्ठित परिवार की सुशिक्षित व इकलौती संतान है। अत: वह अपने ससुराल में मायके की अक्सर प्रशंसा करती है। उसकी यह बात परिवार के सदस्यों को पसंद नहीं आती। वह मूलराज जी के संयुक्त परिवार में सामंजस्य नहीं बैठा पाती और सबके उपहास व ब्यंग्य बाणों की पात्र बन जाती है। इसलिए वह परिवार से अलग रहने के लिए परेश से कहती है। लेकिन दादाजी (मूलराज) के हस्तक्षेप से परिवार के सदस्यों में बदलाव देख वह सबके साथ मिलकर कार्य करती है। पूरी एकांकी बेला के इर्द-गिर्द ही घूमती है। वह एक समझदार, पढ़ी लिखी, कुशल, आधुनिक नारी है।

मझली बहू—मझली बहू दादा मूलराज के मझले बेटे कर्मचन्द की पत्नी है। वह बहुत हँसमुख स्वभाव वाली है। वह इन्दु के साथ मिलकर बेला का मजाक उड़ाती है, लेकिन दादाजी के समझाने पर कि मजाक उतना ही करो कि दूसरे उसे सहन कर सकें। घर के लोगों के पूर्णतया घर का अंग बनने से पहले उन्हें अपनी हँसी का निशाना मत बनाओ। वह समझ जाती है और अपने व्यवहार में सुधार लाती है।

❑❑

अध्याय - 5 महाभारत की एक साँझ (भारत भूषण अग्रवाल)

लेखक परिचय

कवि, लेखक और समालोचक भारत भूषण अग्रवाल का जन्म 3 अगस्त, 1919 को मथुरा के सतघड़ा मोहल्ले में हुआ। इन्होंने आगरा तथा दिल्ली में उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद आकाशवाणी व अनेक साहित्यिक संस्थाओं में कार्य किया। पैतृक व्यवसाय से दूर इन्होंने साहित्य रचना को ही अपना कर्म माना। इनका पहला काव्य संग्रह 'छवि के बंधन' प्रकाशित हुआ। भारत भूषण जी 'तारसप्तक' में महत्वपूर्ण कवि के रूप में सम्मिलित हुए और अपनी कविताओं व वक्ताओं के लिए चर्चित रहे।

सन् 1960 में साहित्य अकादमी के उपसचिव बने। अपनी व्यंग्यमुखर प्रखरता के नाते उनकी रचनाएँ अपने समकालीनों से अलग होने के साथ आज भी प्रासंगिक हैं। बहुत बाकी है, अनुपस्थित लोग, कागज के फूल, प्रसंगवश और कवि की दृष्टि इसकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी रचनावली चार खंडों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

23 जून 1975 को भारत भूषण जी का निधन हो गया।

पात्र परिचय

धृतराष्ट्र – महाभारत के समय हस्तिनापुर के जन्मांध राजा, कौरवों के पिता तथा पांडवों के पिता पांडु के बड़े भाई।

संजय – धृतराष्ट्र के मंत्री, जो श्रीकृष्ण द्वारा प्राप्त दिव्य दृष्टि से धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाते हैं।

दुर्योधन – धृतराष्ट्र का सबसे बड़ा पुत्र।

युधिष्ठिर – कुंती का सबसे बड़ा पुत्र, पाँच पांडवों में सबसे बड़ा।

भीम – युधिष्ठिर का छोटा भाई व कुंती का पुत्र।

पाठ का सार

भारत भूषण द्वारा रचित एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' महाभारत की पौराणिक कथा पर आधारित है।

संजय श्रीकृष्ण से प्राप्त दिव्यदृष्टि के माध्यम से धृतराष्ट्र को बताता है दुर्योधन द्वैत वन के सरोवर के जल स्तम्भ में छिप गया और वे वहाँ पहुँच गए। यह सुनकर धृतराष्ट्र विलाप करने लगता है। संजय उसे शांत करता है।

उधर युधिष्ठिर और भीम दुर्योधन को जल स्तम्भ से बाहर निकालने के लिए उसे उकसाते हुए कहते हैं कि अपने सारे सहयोगियों की हत्या का कलंक लेकर कायरों की भाँति अपने प्राण बचाता क्यों फिर रहा है यदि तुझमें बल है तो बाहर आकर अपना पराक्रम दिखा। क्या स्त्रियों की भाँति जल में छिपा बैठा है। दुर्योधन युधिष्ठिर को धर्म की दुहाई देता हुआ युद्ध करने के लिए बाहर आने से इंकार करता है। वह कहता है कि वह थका हुआ है, उसका कवच फट गया है तथा शस्त्रहीन है अत: ऐसे व्यक्ति के प्राण लेना अन्याय है। मुझे विरक्ति हो गई है। लेकिन भीम और युधिष्ठिर के न मानने पर दुर्योधन सरोवर से बाहर आता है और युधिष्ठिर से पूछता है कि मेरे प्राण का नाश करके तुम्हें क्या मिलेगा। तब युधिष्ठिर उससे कहता है कि यदि प्राणों का इतना ही मोह था तो यह महाभारत क्यों किया? न्याय को छोड़ अन्याय का साथ क्यों दिया। हम तुम्हें कवच और अस्त्र देंगे और यदि तुम जीत गए तो सारा राज्य तुम्हें दे देंगे। इस तरह युधिष्ठिर दुर्योधन को कवच व गदा दे युद्ध के लिए तैयार कर लेता। भीम और दुर्योधन में भीषण गदा युद्ध होने लगता है। दुर्योधन के पराक्रम से ऐसा लगता है कि जीत उसी की होगी लेकिन कृष्ण के द्वारा दुर्योधन की जाँघ पर प्रहार करने की बात मान भीम वैसा ही करता है जिससे दुर्योधन चीत्कार करता हुआ गिर जाता है। भीम विजयी होता है और सभी दुर्योधन को तड़पता छोड़ चले जाते हैं।

शाम होने पर अश्वत्थामा आता है व स्वयं को दुर्योधन से सेनापति बनवा कौरवों के अपमान का बदला लेने की बात कहकर चला जाता है। तब युधिष्ठिर दुर्योधन का हाल जानने व उससे सांत्वना देने उसके पास जाते हैं। दुर्योधन कहता है कि उसे कोई पछतावा नहीं बल्कि पछतावा तो युधिष्ठिर को होना चाहिए क्योंकि उसने ही अपने गुरुजनों और बंधु बांधवों का वध किया है। वह युधिष्ठिर के द्वारा दुर्योधन का मजाक उड़ाये जाने का विरोध करता है तथा युधिष्ठिर से न्याय की दुहाई न देने को कहता है। दुर्योधन कहता है कि जिस राज्य पर अधिकार जताने के लिए तुमने युद्ध किया वास्तव में तुम्हारा उस पर कोई अधिकार नहीं था। मेरे पिता धृतराष्ट्र ज्येष्ठ थे। जन्मांध होने के कारण तुम्हारे पिता को केवल व्यवस्था संभालने के लिए राजा बनाया था। तुम्हारे पिता की मृत्यु के बाद मेरे पिता तथा उनके बाद मैं ही उसके मूल अधिकारी थे। मैंने तो केवल आत्म रक्षा हेतु ही युद्ध किया।

जब युधिष्ठिर ने अभिमन्यु को छल से मारने व द्रोपदी के भरी सभा अपमान करने की बात कही तो दुर्योधन ने कहा कि भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदि के साथ हुए अन्याय को तुमने भी तो नहीं रोका। द्रोपदी को जुए में दाँव पर लगाकर तुमने उसका अपमान किया। जब वह सभा में आयी तब वह केवल एक जीती हुई दासी थी तथा उसने भी मेरा भरी सभा में ही अपमान किया था। युधिष्ठिर इसे उसकी निजी सोच बताकर विरोध करता है कि यदि तुम्हारी बात सत्य होती तो पितामह भीष्म, कृपाचार्य, विदुर आदि मुझे टोकते लेकिन उन्होंने सदैव मेरा समर्थन किया इस पर दुर्योधन कहता है कि वे सब तुमसे डरते थे। न्याय मेरी तरफ न होने पर कृष्ण कभी मेरी सहायता न करते। युधिष्ठिर उसे समझाता है कि वे तो उसे सांत्वना देने आए थे। दुर्योधन, तुम अपनी सुध-बुध खो चुके हो तुम सच और झूठ में भेद नहीं कर पा रहे हो। वीरों की भाँति धैर्य रखो और शांत हो जाओ। दुर्योधन कहता है कि वह (युधिष्ठिर) भविष्य को बहका सकता है उसे नहीं। इस युद्ध के लिए वास्तव में युधिष्ठिर तुम्हारी महत्वाकांक्षा ही जिम्मेदार रही। मुझे तो केवल एक ही दु:ख है कि मेरे पिता अंधे क्यों थे? इसी कथन के साथ दुर्योधन मृत्यु को प्राप्त होता है और परदा गिरता है।

शब्दार्थ

चेष्टा–प्रयास; **अहेरी**–शिकारी; **दुरात्मा**–बुरी आत्मा; **घृत**–घी; **थोथी**–बेकार, खोखली; **दंभ**–घमण्ड; **क्षीण**– कमजोर; **पामर**–दुष्ट; **कूटनीति**–गुप्त चाल; **स्वाहा**–भस्म; **बधिक**–हत्यारा; **विरक्ति**–कोई लगाव न होना; **कर्णधार**–मल्लाह; **पोत**–जहाज; **षड्यंत्र**–साजिश; **कृत्यों**–कार्यों; **शोणित**–खून; **मिथ्या**–झूठ; **आत्मप्रवंचना**–स्वयं को धोखा देना; **प्रतिष्ठा**–सम्मान; **सांत्वना**–तसल्ली; **कटु-सत्य**–कड़वा सच;

अनायास—अचानक, बिना प्रयास के; **चक्रांत**—साजिश; **मरणोन्मुख**—जो मरने वाला हो; **वीरगति**—युद्ध भूमि में प्राण देना; **पुण्यलोक**—स्वर्ग; **भ्रांति**—भ्रम; **ध्वंस**—विनाश; **अंतर्यामी**—मन की बात जानने वाला; **रौंदे हुए**—पैरों से कुचले हुए।

शीर्षक की सार्थकता

भारत भूषण अग्रवाल द्वारा रचित प्रस्तुत एकांकी शीर्षक 'महाभारत की एक साँझ' सर्वथा उपयुक्त और प्रासंगिक है। महाभारत के युद्ध में कौरव पक्ष के सभी योद्धा मारे जा चुके हैं सिवाय दुर्योधन के। दुर्योधन के मरते ही युद्ध समाप्त हो जायेगा। अर्थात् युद्ध की साँझ हो चुकी है। सरोवर में छिपे दुर्योधन को पांडव युद्ध के लिए ललकारते हैं तथा भीम से परास्त व आहत दुर्योधन युद्धभूमि में पड़ा है तब युधिष्ठिर उसे सांत्वना देने जाते हैं। एकांकी में ऐसी ही एक शाम का वर्णन किया गया है। जैसे साँझ को युद्ध समाप्त हो जाता है वैसे ही दुर्योधन के मरते ही महाभारत का युद्ध भी समाप्त हो जाएगा।

एकांकी का उद्देश्य

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार का उद्देश्य यह बताना है कि जीवन में सदैव सत्य, न्याय, धर्म, अच्छाई का साथ देना चाहिए क्योंकि अंत में उन्हीं की जीत होती है। परिवार के सदस्यों को संयम व धैर्य का आचरण करते हुए आपस में मिलजुलकर रहना चाहिए। लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, महत्वाकांक्षा आदि के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ और कौरवों का विनाश हुआ। इसके साथ ही एकांकीकार ने महाभारत के युद्ध के दुर्योधन के साथ युधिष्ठिर की महत्वाकांक्षा को भी जिम्मेदार ठहराया है। लेखक महाभारत के युद्ध के प्रति नया व अछूता पहलू पाठकों के सामने उपस्थित करने में सफल रहा है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

धृतराष्ट्र—धृतराष्ट्र महाभारत के समय हस्तिनापुर के राजा और कौरवों के पिता थे। वे जन्म से अंधे थे अतः उनके छोटे भाई पांडु को पहले राजा बनाया गया। पांडव इन्हीं के पुत्र थे। लेकिन पांडु की असमय मृत्यु के पश्चात् ये राजा बने। यद्यपि धृतराष्ट्र नेक, समझदार व बड़ों का आदर करने वाले थे लेकिन पुत्र मोह के कारण वे कौरवों के किसी अनुचित कार्य पर उन्हें रोक न सके। धृतराष्ट्र कौरवों के षड्यन्त्रों के बारे में जानने पर भी एक राजा व पिता के कर्तव्यों का निर्वाह न कर सके। जिससे कौरव निरंकुश हो गए और अंत को प्राप्त हुए।

दुर्योधन—दुर्योधन, हस्तिनापुर के महाराज धृतराष्ट्र का सबसे बड़ा पुत्र था। वह वीर, कुशल योद्धा और महत्वाकांक्षी था। वह गदा युद्ध में निपुण था। दुर्योधन के अहंकार के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। वह युधिष्ठिर को पाँच गाँव तो दूर सुई की नोंक के बराबर भूमि देने को भी तैयार न था। धृतराष्ट्र के पुत्र मोह के कारण वह निरन्तर निरंकुश बनता गया। भरी सभा में द्रोपदी का चीरहरण उसकी अनैतिकता की पराकाष्ठा थी। महाभारत का युद्ध जीतने के लिए भी उसने झूठ, छल और कूटनीति का सहारा लिया। अंतिम समय में भी अपने द्वारा किए गए कुकृत्यों पर उसे कोई अफसोस नहीं था। वह इस सबके लिए युधिष्ठिर को ही दोषी मानता था।

युधिष्ठिर—युधिष्ठिर, पांडु-कुंती का ज्येष्ठ पुत्र था। वह धर्माचारी, सत्यवादी, सदाचारी, निर्लोभी, संतोषी, न्यायप्रेमी, दयालु था। विनम्रता व धर्मपरायण के कारण उन्हें भाइयों के साथ वन में जाना पड़ा। धृतराष्ट्र के द्वारा खांडवप्रस्थ जैसे खण्डरों में अपनी राजधानी बनाने के प्रस्ताव का भी युधिष्ठिर ने विरोध नहीं किया। सरोवर में निकले निहत्थे दुर्योधन को भी वह लड़ने के लिए शस्त्र प्रदान करता है। कपटी दुर्योधन के आहत युद्धभूमि में पड़े होने पर वह उससे मिलकर दुर्योधन की पीड़ा कम करने का प्रयास करता है। युधिष्ठिर अंतिम समय तक महाभारत के युद्ध को टालने का प्रयास करते हैं। वह सदैव सत्य व नीति का आचरण करते थे।

भीम—भीम, कुंती के दूसरे पुत्र थे। वे भी एक पांडव थे। भीम गदा युद्ध में निपुण व बहुत बलशाली और उग्र स्वभाव वाले थे। कौरव सदैव भीम से भयभीत रहते थे तथा उन्होंने बचपन में भी भीम को मारने के कई प्रयास किए। भीम दृढ़-प्रतिज्ञ थे। भरी सभा में द्रोपदी का अपमान होते देख दुशासन को मारने की जो प्रतिज्ञा ली वह पूरी करके दिखायी। जरासंध व दुर्योधन जैसे वीर योद्धाओं को भीम ने ही यमलोक पहुँचाया।

❑❑

अध्याय - 6 दीपदान (डॉ. रामकुमार वर्मा)

लेखक परिचय

डॉ. रामकुमार वर्मा जी का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 15 नवम्बर सन् 1905 को हुआ। वहीं रहकर इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। स्नातक की शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से तथा नागपुर विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्मा जी प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद भी कार्यरत रहे।

सन् 1963 में भारत सरकार के द्वारा पद्मभूषण के सम्मान से सम्मानित हुए। छात्रावास में रहते हुए रंगमंच से जुड़ जाने के कारण इनके नाटकों तथा एकांकियों में अभिनेयता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

डॉ. रामकुमार वर्मा को हिन्दी नाटकों का जनक माना जाता है। इन्होंने नाटक लेखन के अतिरिक्त काव्य, निबन्ध, आलोचना जैसी विधाओं

में भी साहित्य रचना की। कौमुदी महोत्सव, जूही के फूल, दीपदान, सप्त किरण, पृथ्वीराज की आँखें, चित्ररेखा, अशोक का शोक, अभिशाप आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ। सन् 1991 में इनका देहान्त हो गया।

पात्र-परिचय

कुंवर उदय सिंह – चित्तौड़ के स्व. महाराजा साँगा का सबसे छोटा पुत्र। आयु 14 वर्ष
बनवीर – महाराणा साँगा के छोटे भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र
पन्ना – कुँवर उदयसिंह की संरक्षिका व धाय
चन्दन – पन्ना धाय का पुत्र/आयु 13 वर्ष
सोना – रावल रूपसिंह की पुत्री/आयु 16 वर्ष
सामली – अन्त:पुर की परिचारिका
कीरत – जूठी पत्तलें उठाने वाला बारी।

पाठ का सार

प्रस्तुत एकांकी 'दीपदान' में पन्ना धाय के अद्‌भुत त्याग और देशभक्ति का चित्रांकन किया गया है।

दासी पुत्र बनवीर नगर में एक उत्सव का आयोजन कराता है जिसमें नृत्यांगनाएँ तुलजा भवानी के सामने नृत्य करती हैं। पूरा महल रास-रंग में डूबा हुआ है। ऐसे में कुँवर उदयसिंह आते हैं तथा पन्नाधाय को नाच-गान व दीपदान के बारे में बताते हुए साथ चलने की जिद करते हैं। पन्ना धाय नाच देखने चलने से इंकार करते हुए उदयसिंह को चित्तौड़ का सूरज और राजवंश का दीपक बताती है। तब उदयसिंह अकेले नाच देखने जाने की बात करते हैं लेकिन पन्ना रात में उदयसिंह को अकेले जाने से रोक देती है तब उदयसिंह रूठ कर बिना भोजन किए ही तलवार लेकर जमीन पर ही सो जाते हैं।

उदयसिंह के जाने के बाद रावल रूपसिंह की लड़की सोना उदयसिंह का ढूँढती हुई वहाँ आती है। पन्ना सोना को चुप करती हुई बताती है कि उदयसिंह रूठकर सोने चले गए हैं। तुम लोग उन्हें नाच गान की ओर खींचने का प्रयास मत करो। इस पर सोना कहती है कि तुलजा भवानी के सामने नाचना और दीपदान करना बुरा नहीं है। उदयसिंह को भी हमारा नाच बहुत पसंद है। तुमने कुँवर उदय की सेवा में स्वयं को इस तरह समर्पित कर दिया है कि अब तुम्हें अपना पुत्र भी दिखाई नहीं देता। महाराजा बनवीर ठीक ही कहते हैं कि तुम महल में अरावली पहाड़ बनकर बैठ गयी हो। अत: महल पर बोझ बनने के स्थान पर तुम्हें नदी बनकर बहाना चाहिए। सोना बताती है कि आज कोई उत्सव न होने पर भी महाराजा बनवीर ने हमें बुलाकर नाच-गाना करने और उनके बनाये मयूरपक्ष कुंड में दीपदान करने को कहा। उनका हम पर बहुत अनुग्रह है। पन्ना के द्वारा सोना के बनवीर के अनुग्रह में पागल होना कहे जाने पर सोना कहती है कि यहाँ तो महाराणा विक्रमादित्य, महाराज बनवीर, सारा नगर और तुम सभी किसी न किसी चीज के लिए पागल हैं और मैं तो सबके पागलपन में पागल हूँ। पन्ना कुँवर उदयसिंह को न भेजने की बात कहते हुए बताती है कि चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं जौहर की भूमि है। यहाँ का त्यौहार आत्म बलिदान तथा गीत मातृभूमि की वन्दना के गीत हैं। यह सुन सोना शांत होकर चली जाती है।

सोना के जाने पर चन्दन आता है और सोना के गुमसुम होने का कारण पूछता है और बताता है कि सोना हमेशा उछलती कूदती रहती है ऐसी बातें बनाती है कि कोई जवाब ही नहीं सूझता। कुँवर भी हमारे साथ खेलने की बजाय इसी के यहाँ जाते हैं और दोनों एक-दूसरे को देखते रहते हैं। मुझे तो नाच बिल्कुल नहीं भाता। कुँवर के रूठकर बिना भोजन किए सो जाने की बात कह पन्ना चन्दन से भोजन करने को कहती है कि सज्जा तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करा देगी। चन्दन पन्ना की बात मान अकेले भोजन करने चला जाता है। कुछ देर बार सामली घबरायी हुई आती है और उदयसिंह के बारे में पन्ना से पूछती है। पन्ना बताती है कि कुँवर तलवार के साथ ही रूठ कर भूमि पर सो गये हैं। तब पन्ना बताती है कि बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी है। नगर-निवासियों को रास-रंग में लगा वह मौका पाकर अन्त:पुर गया और सोते हुए महाराणा की छाती में तलवार भौंक उनकी हत्या कर दी। सैनिक भी उससे मिले हुए हैं तथा लोगों ने बनवीर को उदयसिंह की हत्या करने की बात कहते हुए भी सुना है। वह निष्कंटक राज्य करने लिए उन्हें भी मार देगा। अत: थोड़ी ही देर में वह यहाँ आने वाला है किसी भी तरह कुँवर की रक्षा करो।

पन्ना कुँवर को लेकर रात में कुंभलगढ़ भागने की सोचती है लेकिन सामली बताती है कि बनवीर के सैनिक तुम्हारा महल घेरने आ रहे हैं तुम यहाँ से नहीं निकल पाओगी तथा बनवीर के साथ सैनिक होने के कारण तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकोगी व तुम दोनों मारे जाओगे। परेशान पन्ना तुलजा भवानी से कोई मार्ग सुझाने के लिए प्रार्थना करती है इतने में ही कीरत नाम का बारी आता है जो महल में जूठी पत्तलें उठाता था। उसके महल में आने-जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी। उसे देखते ही पन्ना को कुँवर उदयसिंह की रक्षा का उपाय सूझता है। वह कीरत से नमक का मूल्य चुकाने और राजसिंहासन को सहारा देने के लिए कहती है। वह बताती है कि बनवीर कुँवर को मारने आ रहा है अत: तुम अपनी टोकरी में सोते हुए कुँवर उदयसिंह को लिटा लो उनके ऊपर भीगी पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओ तथा बनास नदी के पास वाले श्मसान में मुझे मिलना। पन्ना की योजना सफल होती है। कीरत कुँवर को ले महल से निकलने में कामयाब होता है। तब सामली कहती है कि बनवीर को जब कुँवर यहाँ नहीं मिलेंगे तो वह आपको नहीं छोड़ेगा और आपके बिना कुँवर भी जीवित नहीं बचेंगे। पन्ना एक बार फिर मुसीबत

में फँस जाती है वह जानती थी कि कुँवर उसे न देखकर बेहाल हो जाएंगे तब वह कहती है कि वह कुँवर की शय्या पर किसी और को लिटा देगी। बनवीर क्रोध में अंधा होगा। पहचान नहीं पायेगा कि यह कौन सोया है? लेकिन किसे सुलायेगी? और अंत में अपने पुत्र चन्दन को कुँवर के स्थान पर सुलाने का कठोर निर्णय लेती है। मैं यह नहीं सुन सकती कहकर सामली चली जाती है।

तब चन्दन आता है। उसके पैर से खून बहता देख वह उस पर पट्टी बाँधती है और उसे कुँवर की शैय्या पर गाना गाकर सुला देती है। काली परछायी देख चन्दन घबराकर जग जाता है लेकिन पन्ना उसे सुला देती है। बनवीर तलवार लिए कुँवर को मारने आता है तथा पन्ना को भी जागीर का लालच दे अपनी तरफ मिलाने की बात करता है लेकिन पन्ना कुँवर के प्राणों की भीख माँगती है। लेकिन बनवीर के न मानने पर अपनी कटार से प्रहार भी करती है जिसे बनवीर निष्फल कर देता है तथा सोते हुए चन्दन को उदयसिंह के धोखे में मार देता है। यह देख पन्ना बेहोश हो जाती है तथा इसी के साथ परदा गिरता है।

शब्दार्थ

नेपथ्य—परदे के पीछे; **धाय**—बच्चे को पालने वाली सेविका; **आखेट**—शिकार; **उषा**—भोर; **अट्टहास**—जोर की हँसी, ठहाका; **कूटनीति**—गुप्त चाल; **अतृप्त**—अपूर्ण इच्छाएँ; **कुसमय**—बुरा समय; **पैसारा**—प्रवेश; **ब्यारु**—संध्या समय किया जाने वाला भोजन; **पंखेरुआ**—पंछी; **नराधम**—नीच; **शूल**—काँटा; **निष्कंटक**—बिना रोक-टोक के; **मद्य**—शराब; **उद्यत**—तैयार; **परिचारिका**—सेविका; **कण्टक**—काँटा; **मल्ल**—कुश्ती; **अनुग्रह**—कृपा।

शीर्षक की सार्थकता

इस एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' सर्वथा सटीक, सार्थक व उपयुक्त है। एकांकी का प्रारम्भ बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव से होता है जिसमें महिलाएँ महल में बने कुंड में तुलजा भवानी की पूजा कर दीपदान करती हैं। वहीं पन्नाधाय कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा के लिए अपने जीवन के दीपक, अपने पुत्र चन्दन के प्राणों का बलिदान देकर दीपदान करती है। बनवीर कुँवर उदयसिंह की हत्या कर यमराज को राणा सांगा के कुलदीपक का दान करता हुआ कहता है कि मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज, लो यह मेरा दीपदान है। इस प्रकार एकांकी का शीर्षक प्रासंगिक व सारगर्भित है।

एकांकी का उद्देश्य

डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा रचित प्रस्तुत एकांकी 'दीपदान' का उद्देश्य पन्नाधाय के माध्यम से लोगों में स्वामिभक्ति, वफादारी, त्याग, देशभक्ति, दूरदर्शिता, वीरता आदि गुणों का विकास करना है। पन्नाधाय एक वीर क्षत्राणी है। वह राजवंश की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान कर देती है तथा किसी भी हालत में अपने कर्तव्यों का पालन करने को तत्पर रहती है। इस तरह पन्नाधाय के अमर बलिदान का यशोगान करते हुए समाज में आदर्श मूल्यों की स्थापना करना ही एकांकी का उद्देश्य है।

मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

पन्नाधाय—पन्ना चित्तौड़ के महाराणा सांगा के छोटे पुत्र उदय सिंह की धाय और संरक्षिका हैं। पन्नाधाय खीचो जाति की राजपूतनी है। उसकी आयु तीस वर्ष है। पन्नाधाय एक स्वाभिमानी, वीर, कर्त्तव्यनिष्ठ, दूरदर्शी, महिला है। वह एक ममतामयी माँ भी है। वह अपनी दूरदर्शिता के कारण ही बनवीर द्वारा रचाये गए रास-रंग के पीछे के षड़यन्त्र को भाँप लेती है और कुँवर उदय सिंह को सोना के साथ नाच देखने नहीं जाने देती। कुँवर उदय सिंह को कीरत बारी की टोकरी में छिपा महल के बाहर निकाल देती है। वह देशभक्ति की मिसाल रखते हुए कुँवर उदय सिंह की शय्या पर अपने पुत्र चंदन को लिटाकर पुत्र का बलिदान देने को तैयार हो जाती है। वह वीर क्षत्राणी बनवीर पर अपनी कटार से वार कर देती है। उसे किसी से भय नहीं लगता। बनवीर को उसके कुकृत्यों पर धिक्कारती है। बनवीर द्वारा लालच दिए जाने का वह स्पष्ट विरोध करती है। इस तरह पन्नाधाय भारतीय इतिहास में सदैव के लिए अमर हो गयी।

बनवीर—बनवीर मेवाड़ के महाराजा सांगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र है जिसकी आयु करीब 32 वर्ष है। वह महत्वाकांक्षी, क्रूर और विलासी है। वह अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए दीपदान के उत्सव का आयोजन कर पहले महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर देता है और निष्कंटक राज्य के लिए कुँवर उदय सिंह को भी मारने जाते हैं जिसके संरक्षण का जिम्मा उसके ऊपर है। बनवीर ने षड्यन्त्र से सैनिकों को भी अपनी ओर मिला रखा है। वह सत्ता के नशे में अंधा हो चुका है। कुँवर उदय सिंह की शैय्या पर सोते हुए चंदन का बड़ी बेरहमी व निर्दयता से वध कर देता है। वह एक क्रूर और अत्याचारी व्यक्ति है।

कीरतबारी—कीरतबारी राजमहल में जूठी पत्तलें उठाने वाला चालीस वर्षीय बारी है। वह एक वफादार व विश्वासपात्र व्यक्ति है बनवीर से कुँवर उदय सिंह के प्राणों की रक्षा करने की योजना के तहत वह सोते हुए कुँवर उदय सिंह को अपनी टोकरी में छिपाकर महल के बाहर ले जाता है वह अपने प्राणों की परवाह भी नहीं करता वह एक सच्चा देशभक्त है।

❑❑